मुक्त व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम
पाठ्यक्रम कोड 628

भारतीय कढ़ाई में प्रमाण-पत्र

पाठ्यक्रम समन्वयक
डा. प्रवीन चौहान
शैक्षिक अधिकारी (गृह विज्ञान)

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
ए–24–25, इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर–62, नोएडा–201301 (उ.प्र.)

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

अक्टूबर 2018

सचिव, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, ए. 24–25 इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर–62, नोएडा–201301 (उत्तर प्रदेश) द्वारा प्रकाशित एवं ..... द्वारा मुद्रित

सलाहकार समिति

अध्यक्ष
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा
संस्थान, नोएडा, उत्तर प्रदेश

निदेशक (व्या.शि.वि.)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा
संस्थान, नोएडा, उत्तर प्रदेश

उप–निदेशक (व्या.शि.वि.)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा
संस्थान, नोएडा, उत्तर प्रदेश

पाठ्यक्रम समिति

डॉ. स्वपना मिश्रा
निदेशक, टे.सै.स.का.
नई दिल्ली

श्री विकास कुमार
सहायक निदेशक, बु.से.के.
वस्त्र मंत्रालय, नई दिल्ली

श्री अनिल डाडवाल
निदेशक, 'द अटायर'
नई दिल्ली

श्री ओ.पी. यादव
वरिष्ठ सलाहकार
आई.ए.ई.एस.पी.एच.
नई दिल्ली

सुश्री प्रेमलता मलिक
पूर्व निदेशक
सुशीला देवी पॉलीटेकनिक फॉर
वीमन, गाज़ियाबाद, उ.प्र.

डॉ. प्रवीन चौहान
शैक्षिक अधिकारी (गृह विज्ञान)
व्यावसायिक शिक्षा विभाग
रा.मु.वि.शि.स., नोएडा, उ.प्र.

लेखन दल

सुश्री प्रेमलता मलिक
पूर्व निदेशक
सुशीला देवी पॉलीटेकनिक फॉर
वीमन, गाज़ियाबाद, उ.प्र.

सुश्री मनीषा चौधरी
लेक्चरर, वस्त्र एवं कपड़ा विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ, उ.प्र.

संपादन एवं पाठ्यक्रम समन्वयन

डॉ. प्रवीन चौहान
शैक्षिक अधिकारी (गृह विज्ञान)
व्यावसायिक शिक्षा विभाग
रा.मु.वि.शि.स., नोएडा, उ.प्र.

लेज़र कम्पोजर

टेसा मीडिया एण्ड कम्प्यूटर्स,
सी–206, शाहीन बाग, जामिया नगर,
नई दिल्ली–110025

आपसे दो बातें.....

प्रिय शिक्षार्थी!

भारतीय कढ़ाई के इस पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है। भारतीय कढ़ाइयों का सौन्दर्य समय के साथ विकसित हुआ है। भारत में कढ़ाई की कला एक सांस्कृतिक एवं सामाजिक विशिष्टता की परिचायक है। प्रत्येक राज्य की अपनी विशिष्ट और अनोखी शैली, जटिल नमूने और आकर्षक रंग, भारत की पारम्परिक कढ़ाई कला को विश्व विख्यात बनाते हैं।

यह एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें आप अपनी कल्पना और रचनात्मकता का प्रदर्शन सुंदर कढ़ाई किए गए वस्त्रों के माध्यम से कर सकते हैं। यहाँ आप विभिन्न प्रान्तों की हाथ की कढ़ाई के बारे में जानेंगे, जैसे बंगाल की कांथा, कर्नाटक की कसूती, पंजाब की फुलकारी, जम्मू–कश्मीर की कशीदा, ज़रदोज़ी व जलकदोज़ी, उत्तर प्रदेश की चिकनकारी इत्यादि। साथ ही आप गुणवत्ता, सुरक्षा एवं स्वच्छता के महत्व के बारे में भी सीखेंगे। हमारा प्रयास व्यक्तित्व विकास, संचार एवं उद्यमिता जैसे विषयों से आपको अवगत कराना है।

भारतीय कढ़ाई केवल एक कला ही नहीं, बल्कि यह आय का एक स्रोत भी है, और इसमें रोज़गार के अपार अवसर हैं। आशा है, आपको इस पाठ्यक्रम में आनंद आएगा और यह कौशल एक आय का स्रोत भी बनेगा। यदि आपको कोई कठिनाई हो या आपका कोई सुझाव हो तो आप हमें पत्र अवश्य लिखें। आपके विचारों को जान कर हमें प्रसन्नता होगी।

आप सबको उज्जवल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ!

कोर्स टीम

विषय सूची

क्र.सं.	पाठ शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	कढ़ाई का परिचय	1
2.	डिजाइन के सिद्धांत	13
3.	कढ़ाई के औजार व टाँके	39
4.	बंगाल की कांथा	55
5.	कर्नाटक की कसूती	63
6.	पंजाब की फुलकारी	71
7.	जम्मू कश्मीर की कशीदा, ज़रदोज़ी व ज़लकदोज़ी	77
8.	उत्तर प्रदेश की चिकनकारी	87
9.	गुजरात की कढ़ाई	94
10.	राजस्थान की कढ़ाई	101
11.	गुणवत्ता व रख–रखाव	112
12.	व्यक्तित्व, संचार और उद्यमिता	121

1

कढ़ाई का परिचय

कढ़ाई की कला को हस्तकौशल के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। कढ़ाई में वस्त्र को सुई और धागे की सहायता से अलंकृत किया जाता है। यह वस्त्र की सजावट की वर्षों पुरानी विधि है। विश्व भर में वस्त्रों तथा घर की सजावट की वस्तुओं पर कढ़ाई की कला देखी जा सकती है। रोजमर्रा की वस्तुओं जैसे बिस्तर की चादर और मेजपोश आदि को भी कढ़ाई से सजाया जाता रहा है। कढ़ाई उन सभी तरह की वस्तुओं पर की जाती थी, जो कि सुई से छेदे जा सकते हैं जैसे – सूती, ऊनी, रेशमी, चमड़ा तथा अस्तर का कपड़ा। आकर्षक प्रभाव उत्पन्न करने के लिए सोने, चांदी, रेशमी, सूती और ऊनी धागे, जानवरों के बाल, बहुमूल्य पत्थर, सीपी, कीटों के पंख, बीज और मीनाकरी आदि से सजावट की जाती थी। इस पाठ में हम कढ़ाई के प्रेरणा स्रोत व केन्द्रों के बारे में जान सकेगें तथा इस क्षेत्र में उपलब्ध अवसरों को पहचान सकेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप :

- नमूनों और डिज़ाइनों के प्रेरणा स्रोतों की पहचान कर सकेंगे;
- कढ़ाई के केन्द्रों को सूचीबद्ध कर सकेंगे;
- सरकार द्वारा कला के क्षेत्र में काम कर रहे व्यक्तियों एवं कारीगरों के लिए प्रस्तावित योजनाओं और कार्यक्रमों की व्याख्या कर सकेंगे; तथा
- उपलब्ध अवसरों की गणना कर सकेंगे।

टिप्पणी

इस समय भारत में कढ़ाई की अनगिनत इकाइयां पूरे देश में फैली हुई हैं, जिनमें लाखों लोग हाथ से की गई कशीदाकारी अथवा कढ़ाई में लगे हुए हैं। यह कारीगर भारतीय वस्त्रों को इस प्रकार रूपांतरित कर देते हैं, जो अपनी शैली और लालित्य में अद्वितय होते हैं और दूसरे देशों को निर्यात भी किए जाते हैं।

1.1 डिज़ाइन (रूपरेखा) और नमूनों के लिए प्रेरणा स्रोत

कारीगर हमेशा अच्छे नमूनों की तलाश में रहता है। अपनी रोजमर्रा जिन्दगी व वातावरण से प्रेरित होकर वह कई डिज़ाइन बनाता है। आम तौर पर कारीगर अपने विशेष वातावरण व प्रचलित प्रथाओं, प्रतीकों व धर्म चिन्हों से प्रेरित होकर डिज़ाइन बनाते है।

1.1.1 नमूने के प्रचलित प्रेरणा स्रोत

भारतीय कशीदाकार एक कलाकार है, जिसकी रंगों और नमूनों की समझ कभी भी मंद नहीं पड़ी है, अपितु उसकी प्रत्येक रचना हमेशा ही सुरूचिसम्पन्न रही है।

कारीगर निम्न स्रोतों से प्रेरित हो सकता है।

1. **प्राकृतिक स्रोत** – जैसे कि फूल, पत्ते, पेड़, पक्षी, फल, जानवर आदि।

चित्र 1.1

2. **स्मारक स्रोत** – जैसे कि किला, इमारत, झरोखे, मंदिर, स्तंभ, जाली, गुंबद आदि।

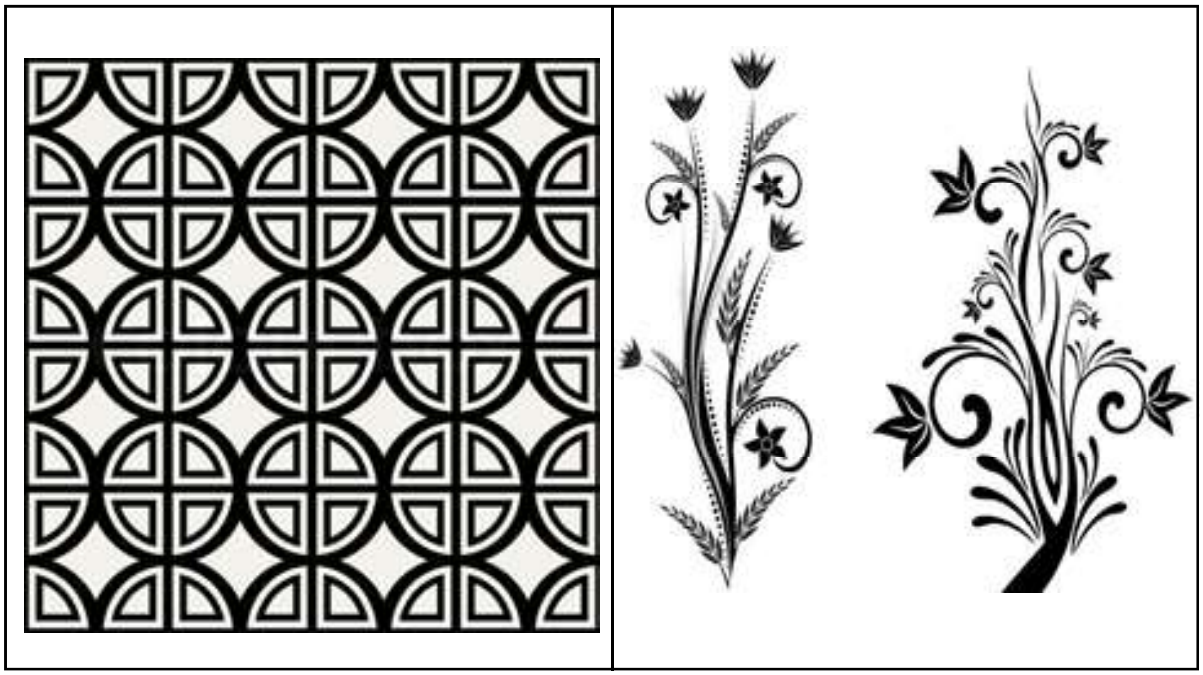

चित्र 1.2

3. **धार्मिक चिन्ह स्रोत** – जैसे कि त्रिशूल, ऊँ, क्रॉस, कलश, स्वास्तिक आदि।

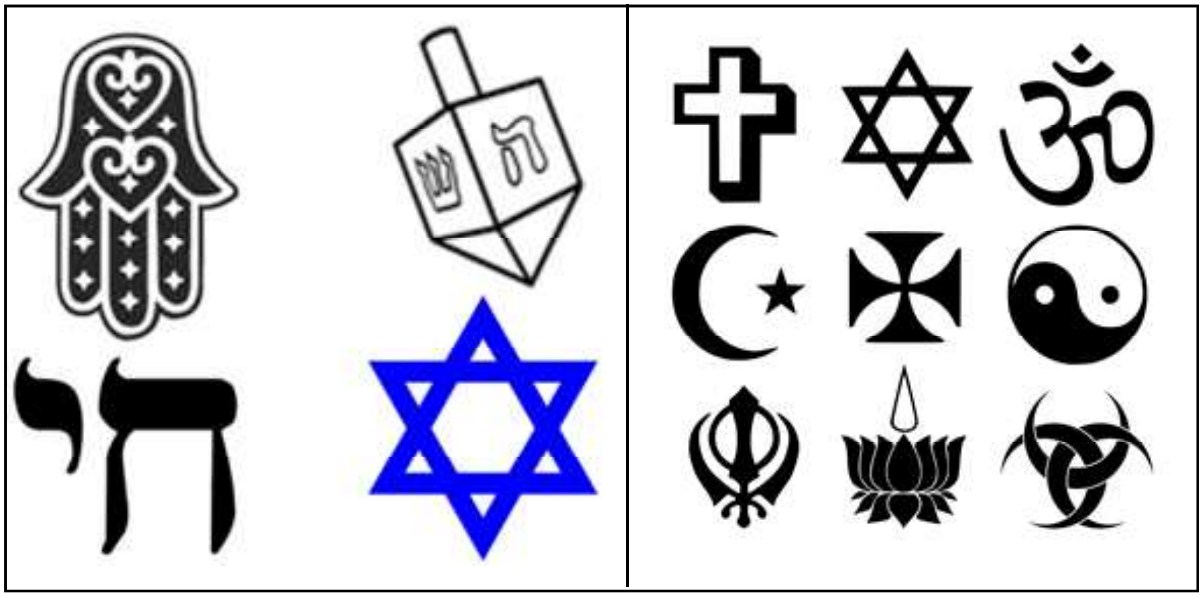

चित्र 1.3

टिप्पणी

4. **जनजाति चिन्ह स्रोत** – जैसे विभिन्न जनजातियों की संचार विधि में प्रयोग किये जाने वाले चिन्ह, धार्मिक प्रथाएं, देवी–देवता आदि।

चित्र 1.4

5. **आभूषण** – जैसे कि पुराने काल में पहने गए **आभूषण** आदि।

चित्र 1.5

1.2 कढ़ाई के केन्द्र

भारत के प्रत्येक क्षेत्र के अपने डिज़ाइन और कढ़ाई के स्वरूप होते हैं। वस्तुतः कोई भी ऐसी डिज़ाइन या तकनीक नही है, जो भारतीय नमूनों में शामिल नहीं की गयी है।

- **कश्मीर** – कशीदाकारी में प्राकृतिक नमूने शामिल होते हैं। रेशम का काम, मोती, ज़रदोज़ी आदि का काम, कशीदाकारी की शैलियों में है। ज़रदोज़ी में सोने व चांदी के तार का प्रयोग होता है।

चित्र 1.6

- **राजस्थान व गुज़रात** – इस कढ़ाई में ज्यामितीय नमूने देखने को मिलते है, जिसमें शीशे, सीप और मोतियों का प्रयोग होता है। ये अपने गोटे के काम के लिये भी प्रसिद्ध है।

चित्र 1.7

- **पंजाब –** यहां की कढ़ाई फुलकारी के नाम से जानी जाती है। इस में फलों के मोटिफ ज्यामितीय रूप में नज़र आते हैं। यूरोप की 'लाईन स्टिच', विभिन्न रूपों में प्रयोग की जाती है।

चित्र 1.8

- **उड़ीसा व आंध्र प्रदेश** – यहाँ की कढ़ाई कसूती के नाम से जानी जाती है। इसमें मंदिर की आकृतियाँ दिखाई देती हैं। इसमें पुरानी चाइनीज नीडल वर्क का प्रभाव दिखता है।

चित्र 1.9

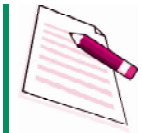

टिप्पणी

- **बंगाल** – यहाँ की कढ़ाई कांथा के नाम से जानी जाती है, जो जीवन की कहानी बताती है। कांथा में पुरानी साड़ियों और धोतियों को एक के ऊपर एक रख कर कढ़ाई की जाती है। बिहार की 'सुजनी' भी कांथा के समान होती है। मणिपुर की कढ़ाई भी कांथा व सुजनी से मिलती जुलती है।

चित्र 1.10

- **हिमाचल प्रदेश** – यहाँ के चम्बा रूमाल जो रास मण्डल और कृष्णा के मोटिफ दर्शाते हैं। इनका प्रयोग विभिन्न धार्मिक अवसरों पर किया जाता है।

चित्र 1.11

टिप्पणी

- **उत्तर प्रदेश** – लखनऊ की महीन चिकनकारी जिसमें बेल, लताएँ, फूलों के नमूने का प्रयोग होता है। इस कढ़ाई में महीन कपड़े की उल्टी तरफ कढ़ाई की जाती है, जो एक परछाई के रूप में सीधी तरफ दिखाई देती है।

चित्र 1.12

- **जनजातीय** – इस में एप्लीक, सोना चाँदी, छोटे–छोटे शीशे के टुकड़े एवं विभिन्न मोटाई वाले धागों के प्रयोग से कढ़ाई की जाती है।

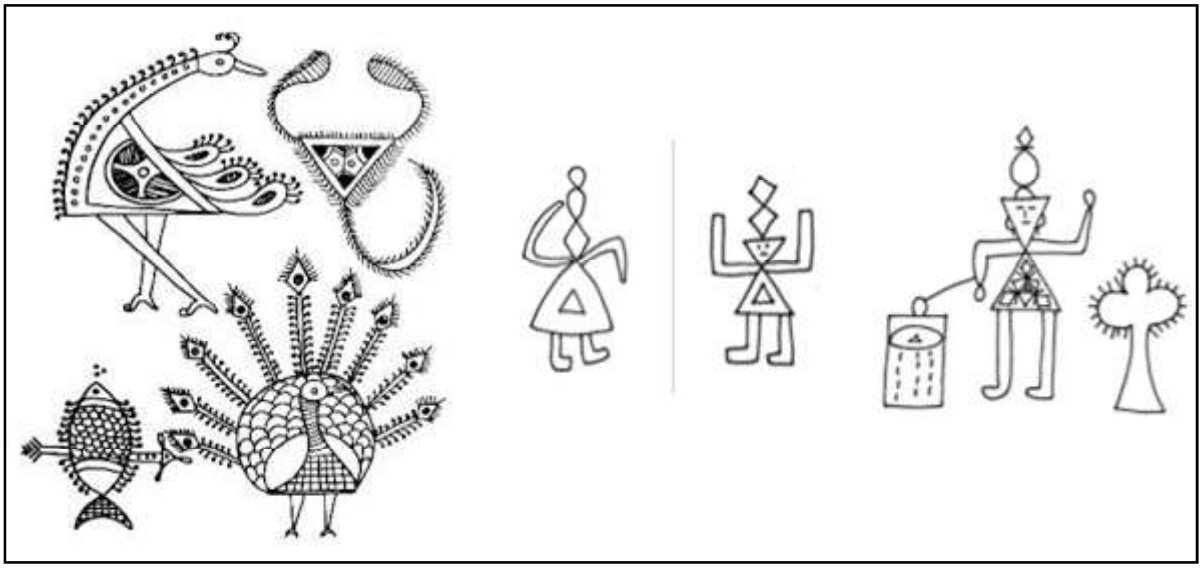

चित्र 1.13

टिप्पणी

पाठ्गत प्रश्न 1.1

स्तभ 'क' को स्तभ 'ख' से मिलान कीजिए –

	'क'		'ख'
1.	शॉल	क)	गुज़रात
2.	ओढ़नी	ख)	लखनऊ
3.	तोरण	ग)	कश्मीर
4.	कुर्ता	घ)	राजस्थान

क्रियाकलाप 1.1

अपने क्षेत्र के आसपास के कढ़ाई केन्द्रों की सूची बनाईये और नीचे दी गई तालिका में भरिए और लिखिए कि कढ़ाई का प्रत्येक केन्द्र किस शैली के लिए प्रसिद्ध है।

क्र.सं.	शहर का नाम	कढ़ाई की शैली
1.		
2.		
3.		
4.		
5.		

1.3 कारीगरों के लिये योजनाएं व कार्यक्रम

कशीदाकारी व्यापार असंगठित खंड के नीचे आता है। कुछ बँधनों जैसे कि शिक्षा की कमी, पूंजी की कमी, नई तकनीकों की जानकरी की कमी और बाज़ार की जागरूकता की अनभिज्ञता और कमज़ोर सांस्थानिक ढाँचों के कारण शिल्पकारों को लाभ पहुँचने में बहुत समय लग जाता है। इन कमज़ोरियों से उभरने के लिए भारत सरकार और राज्य सरकार ने कई अर्थपूर्ण कदम उठा कर पिछले कुछ दशकों में शिल्प को पुनः जीवन देने की कोशिश की है। सरकार शिल्पकारों और शिल्प के क्षेत्र में अकेले या साथ मिलकर कार्य करने वालों को उत्साहित करने के लिए स्व–सहायता समूह (सेल्फ–हैल्प ग्रुप) (SHG) बनाने के लिए प्रेरित करती हैं।

टिप्पणी

शिल्पकारों को सरकार निम्न प्रकार के सहयोग प्रदान करती है।

1. **सामाजिक मध्यस्थता (Social Interventions)** इसका लक्ष्य शिल्पकारों के समूह को दीर्घकाल तक बनाए रखना है। प्रथम इस समूह को पहचानने के लिए सर्वेक्षण किया जाता है और फिर इन शिल्पकारों की मूल आवश्यकताओं की सूची बनाई जाती है। इसके अर्न्तगत स्व–सहायता समूह (सेल्प हैल्प ग्रुप) (SHG) बनाने के लिए नए शिल्पकारों को प्रोत्साहित किया जाता है। इन समूहों को फिर विभिन्न पहलुओं में प्रशिक्षण दिया जाता है, और अन्य आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है।

2. **शिल्प विज्ञान मध्यस्थता (Technological Interventions)** मार्केट में लम्बे समय तक रहने के लिए लगातार सुधार ही अकेला मार्ग है। यह विशेष तौर पर अपेक्षित है, जब आप अपने माल को मंहगे दाम में बेचना चाहते है। इसके लिए सरकार द्वारा निम्न विषयों में प्रशिक्षण दिया जाता है:

   क) प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण : यह एक प्रकार का प्रमाण–पत्र या डिप्लोमा कोर्स है। यह समूहों के साथ सघन सहयोग से कार्य करने वाले प्रशिक्षकों को सरकार द्वारा दिया जाता हैं।

   ख) सरकार द्वारा आधुनिक यंत्र, उपकरण, उत्पाद और प्रक्रिया प्रणाली को विकसित करना और उन्हें वितरति करना या उपलब्ध कराना।

   ग) डिज़ाइन और शिल्पविज्ञान का सुधार(up-gradation)

   घ) पुरानी और क्षीण पड़ती हुई कला को पुर्नजीवन देना, सुरक्षित करना और प्रलेखन करना।

3. **विक्रिय मध्यस्था** (Marketing Interventions) इस योजना के अंतर्गत विभिन्न शहरों में शिल्पकारों का हाट या प्रदर्शनी आयोजित किया जाता है। जिस से खरीदारों में रुचि जागृत होती है। उदाहरण – पारंपरिंक मेला या स्थानीय मेले लगाए जाते है। शिल्पकारों को प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार भी दिये जाते है। इन सूचनाओं को इंटरनेट पर भी डाला जाता है। इसके अलावा भारत सरकार का हैंडलूम विभाग, कई पुस्तकों/पुस्तिका/शिल्पकारों की निर्देशिका/पोस्टर आदि के प्रकाशन के लिए सहायता प्रदान करता है, जिससे भारत के शिल्पकारों के कार्य को दर्शाया जा सके और जिससे लुप्त होती हुई कला के बारे में जानकारी बढ़ाई जा सके।

4. **आर्थिक मध्यस्थता** (Financial Interventions) कोई स्व–सहायता समूह (SHG) भी आर्थिक सहायता की माँग कर सकता है। परियोजना स्वीकृत होने पर, उन्हें (SHG) बैंक के सांविधिक नियम के अन्तर्गत पंजीकृत कराना होता है। अतिरक्ति राशि की पूँजी, ग्रुप संग्रह पूंजी के साथ जोड़ी जाती है। यह आगे उधार की सहूलियत का लाभ उठाने में मदद करती है।

5. **सार्वजनिक सुविधा केन्द्र** क्योंकि शिल्पकारी, अनौपचारिक एवं विकेंद्रित खण्ड का भाग है, इसलिए यह मुक्त मार्केट के आर्थिक फोर्स की चुनौतियों का सामना करने में असमर्थ है। अंतराष्ट्रीय बाजार के अपेक्षित स्तर और शर्तों को पूरा करने में भी यह असमर्थ हो सकता है। इसलिए इन उद्देश्यों की प्राप्ति

टिप्पणी

के लिए समूह स्तर पर एक सार्वजनिक सुविधा केन्द्र (CFC) को स्थापित किया जाता है, जहाँ निरंतर निरीक्षण, डिज़ाइन और शिल्प विज्ञान का प्रयोग तथा बिक्री की अर्थनीति को सुनिश्चित किया जाता है।

6. **क्षेत्रीय/राष्ट्रीय/राज्य स्तर पर विचार–गोष्ठी/परिसंवाद** (Seminars) **कार्यशिविर** – हर स्तर के शिल्पकारों के लिए विभिन्न विषयों पर सरकार द्वारा परस्पर विचार विमर्श के अधिवेशन समय–समय पर आयोजित किये जाते हैं। विभिन्न कार्यान्विति एजेंसियों जैसे विकास कमिश्नर, हस्तकला (Development Commissioner, Handicraft) के दफ्तरों आदि से प्रादेशिक/जोनल प्रतिनिधियों के रूप में विशेषज्ञों को आमंत्रित किया जाता है। इनमें विभिन्न समूहों की समस्याओं और अनुभवों पर ध्यान दिया जाता है। इनसे वेहतर योजना बनाने में मदद मिलती है, जिससे लम्बे समय तक विकास होता है और समूह के पूर्ण रूप से स्वावलंबी बनने में सहयोग मिलता है।

1.4 इस क्षेत्र में उपलब्ध अवसर

वेतन रोजगार	स्वयं रोजगार
• कढ़ाई केन्द्र में नौकरी	• ऑर्डर पर काम करना
• बुटीक में नौकरी	• डिज़ाइनर
• गारमेन्ट फैक्टरी में नौकरी	• बुटीक, गारमेन्ट फैक्टरी का जॉबवर्क करना
	• हॉबी क्लास चलाना

आपने क्या सीखा

- कढ़ाई का परिचय
- डिज़ाइन के प्रेरणा स्रोत
- कढ़ाई के केन्द्र
- कारीगरों के लिए योजनाएं व कार्यक्रम
  - सामाजिक मध्यस्थता
  - शिल्पविज्ञान मध्यस्थता
  - विक्रिय मध्यस्थता
  - आर्थिक मध्यस्थता
  - सार्वजनिक सुविधा केन्द्र
  - विचार गोष्ठी परिसंवाद

- उपलब्ध अक्सर
  - वेतन रोजगार
  - स्वयं रोजगार

पाठान्त प्रश्न

1. निम्न प्रदेशों में प्रयोग किये जाने वाले नमूनों का एक–एक चित्र प्रयोग पुस्तिका में बनाएं: पंजाब, राजस्थान व गुज़रात, आंध्रप्रदेश व उड़ीसा, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश।
2. कारीगरों के लिए उपलब्ध कोई तीन योजनाओं को संक्षिप्त में बताऐं।
3. कढ़ाई क्षेत्र में आप के लिए उपलब्ध संभावनाएं लिखें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1

1. ग
2. घ
3. क
4. ख

2

डिज़ाइन के सिद्धांत

किसी वस्तु के लिये प्रत्येक व्यक्ति की विभिन्न भावनात्मक प्रतिक्रिया होती है। एक सच्चा और असली कलाकार वही होता है, जो बिखरी हुई, गैर जरूरी वस्तुओं को इस प्रकार व्यवस्थित करता है, जिससे वे एक आयोजन का भाग लगती हैं। यह कलात्मक क्षमता हर मनुष्य में स्वाभाविक रूप से पायी जाती है। कुछ लोगों में कलात्मक क्षमता पूर्ण रूप से विकसित होती है। जब की दूसरों में थोड़ी कम। कला के सिद्धांतों व अवयवों के बारे में ठोस ज्ञान और उन्हें प्रयोग करने का निरंतर प्रयास उच्च कोटि की कलात्मक क्षमता को विकसित करता है। इस पाठ में हम डिज़ाइन के विभिन्न अवयव व सिद्धांतों के बारे में जान पाएंगे, जिससे हम कढ़ाई के लिये उपयुक्त डिज़ाइन बना सकेगें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप :

- कला के अवयव व सिद्धांतों की सूची बना सकेंगे;
- डिज़ाइन के प्रकार को पहचान सकेंगे;
- विभिन्न मोटिफ का सही स्थानातंरण कर सकेंगे;
- डिज़ाइन का स्थान निर्धारण व व्यवस्थित कर सकेंगे; तथा
- दिये गए डिज़ाइन का परिवर्धन व लघुकरण कर पांएगे।

2.1 कला के अवयव व सिद्धांत

2.1.1 कला के अवयव

एक अच्छा डिज़ाइन रेखा के विभिन्न रूपों और आकार के मिश्रण से बना होता है। इसमें कई प्रकार के रंगों का भी प्रयोग होता है। डिज़ाइन में सतह भी होती है, जो कि स्पर्श की जा सकती है। यह सारे निरीक्षण कला के विभिन्न अवयवों की ओर संकेत करते है। इन अवयवों को जोड़कर बहुत ही लुभावना प्रभाव बनाया जा सकता है। अतः कला के विभिन्न अवयवों की सूची इस प्रकार है :

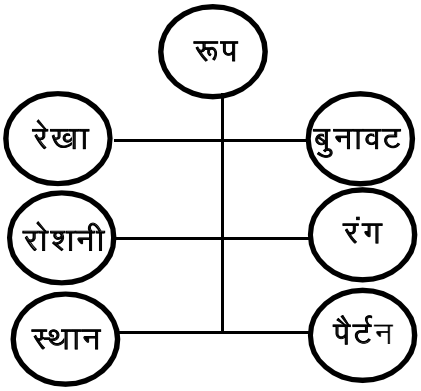

आइये इन के बारे में विस्तार में जानें :

1. **रूप** – जब रेखाओं को मिलाकर आकार दिया जाता है, वो रूप कहलाता है।
2. **रेखा** – ये कला का प्रथम निर्माण ब्लाक है। ये पतली व मोटी हो सकती है।

रेखा के प्रकार –

- **खड़ी या अनुलम्ब रेखा** – ये रेखा ताकत, गरिमा और अनुशासन को दर्शाती है।

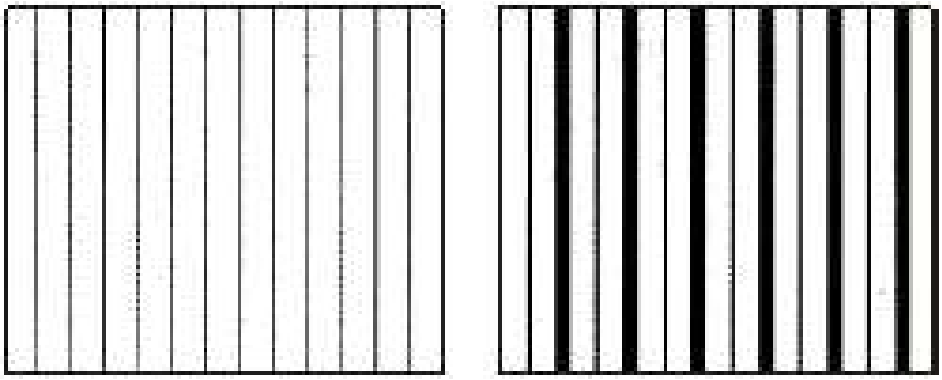

क ख

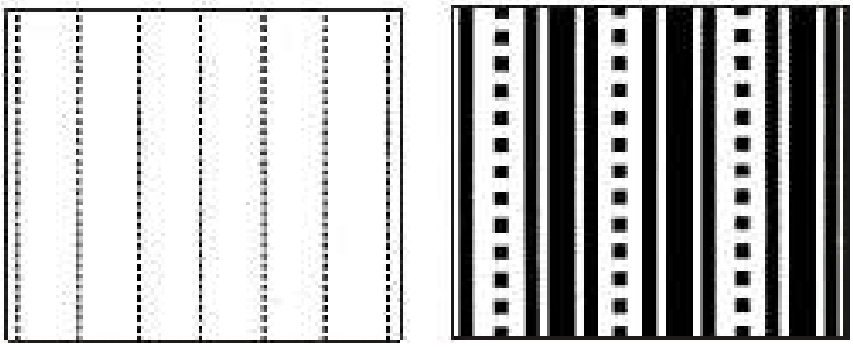

ग घ

चित्र 2.1

- **अनुप्रस्थ या क्षैतिज रेखा** – ये रेखा स्थिरता व शिथिलता को दर्शाती है।

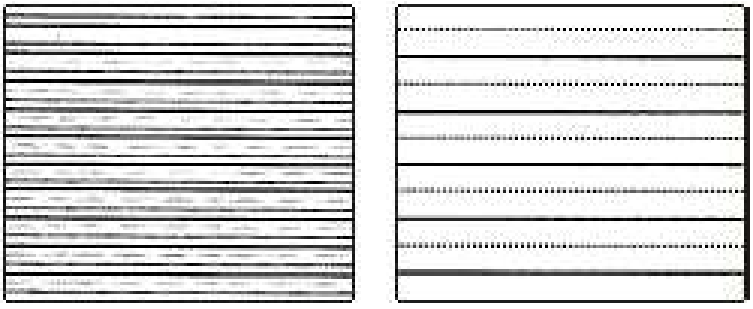

क ख

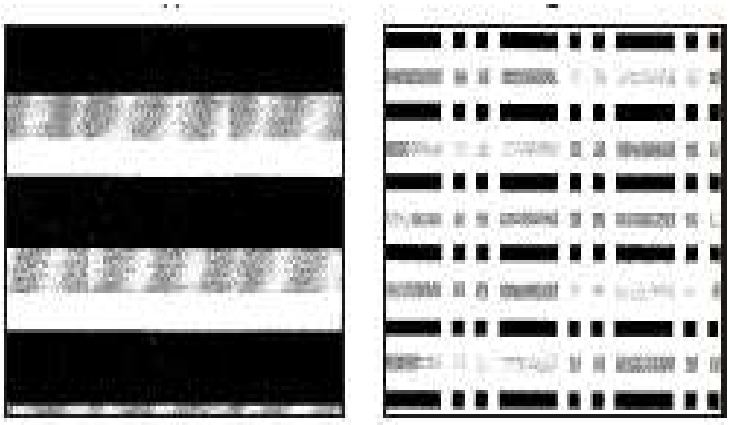

ग घ

चित्र 2.2

- **विकर्ण रेखा** – यह रेखा गति और बल की अनुभूति उत्पन्न करती है।

चित्र 2.3

- **वक्र रेखा** – ये रेखा लावण्य, लचीलापन और आनन्द की अनुभूति को दर्शाती है।

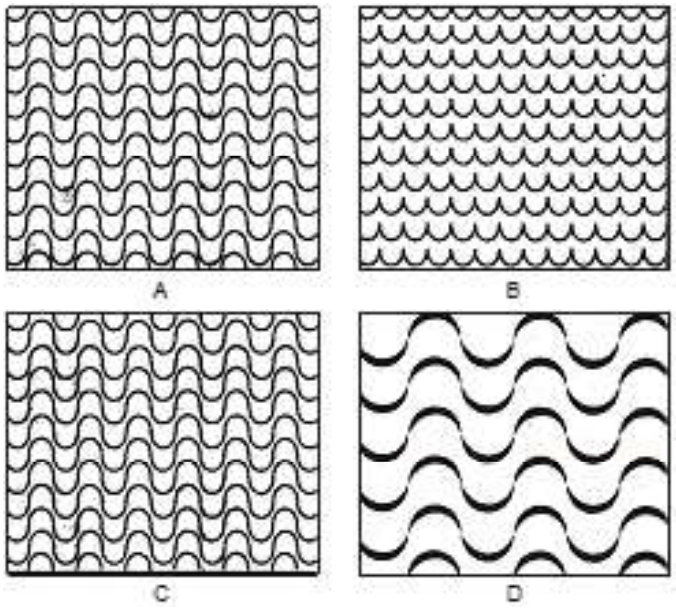

चित्र 2.4

3. **बुनावट** – किसी भी वस्तु को स्पर्श करने पर, जो अनूभूति या एहसास होता है, उसे बुनावट कहते है। उदाहरण : चिकना, रेशमी, समतली, खुरदरा, मुलायम आदि।

4. **रोशनी** – सूरज की रोशनी में असली रंग नज़र आता है, परन्तु ट्यूबलाईट व अन्य कृत्रिम रोशनी में ये हल्का सा बदल जाता है।

5. **स्थान** – हर डिज़ाइन को अपने चारों ओर स्थान चाहिये जिससे वह स्पष्टता से दिखाई दे सके।

टिप्पणी

6. **पैटर्न** – इसको डिज़ाइन भी कहते है। रूप की व्यवस्था अगर दोहराई गई हो तो उसे पैटर्न कहते है। पैटर्न का आंलकारिक मूल्य होता है।

7. **रंग** – रंग जीवन में उत्साह व खुशी भरता है। सूरज की किरण जो हमें श्वेत दिखाई देती है, वो वास्तव में इन सारे रंगों से बनी होती है। ये रंग है–

- V – Violet बैगंनी
- I – Indigo नील
- B – Blue नीला
- G – Green हरा
- Y – Yellow पीला
- O – Orange नारंगी
- R – Red लाल

इसे VIBGYOR कहा जाता है।

2.1.2 रंगों का वर्गीकरण

1. प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक रंग
2. गर्म, ठंडे और निष्प्रभावी रंग

प्राथमिक द्वितीयक तृतीयक

चित्र 2.5

प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक रंग

- प्राथमिक रंग – लाल, पीला और नीला। ये दूसरे रंगों के मिश्रण द्वारा नहीं बनते हैं। परन्तु सारे रंग इन्ही रंगो को विभिन्न अनुपात में मिलाने से बनते है।

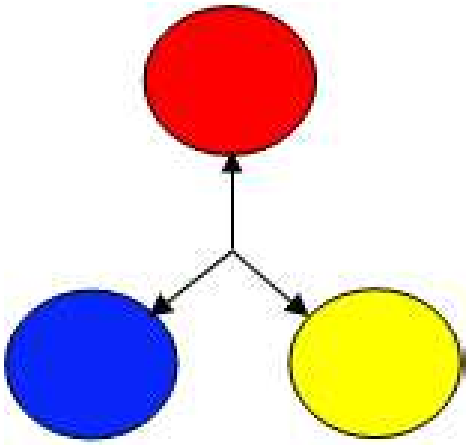

चित्र 2.6

- द्वितीयक रंग – नारंगी, हरा और बैगनी। यह दो प्राथमिक रंगों को बराबर के अनुपात में मिलाकर प्राप्त होते है।

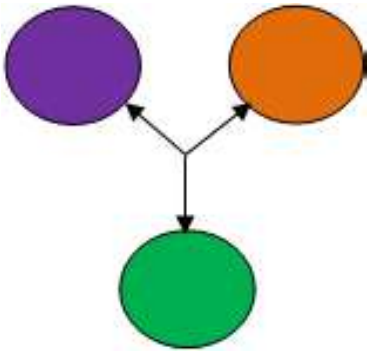

चित्र 2.7

- तृतीयक रंग – पीला नांरगी, लाल नांरगी, लाल बैगनी, नीला बैंगनी, नीला हरा, पीला हरा। यह रंग पाने के लिये एक प्राथमिक रंग और एक द्वितीयक रंग को बराबर अनुपात में मिलाना पड़ता है।

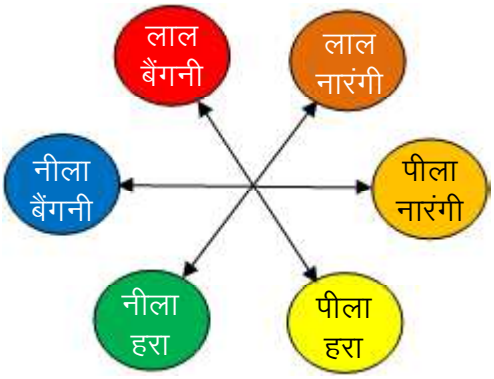

चित्र 2.8

टिप्पणी

1. **गर्म, ठंडे और निष्प्रभावी रंग**

- **गर्म रंग** – लाल, नांरगी, पीले रंग अग्नि या सूर्य का अवयव होते हैं, इसलिये ये गर्मी का आभास कराते हैं। यह लंबाई और आकार का दृष्टि भ्रम उत्पन्न करते है।

चित्र 2.9

- **ठड़े रंग** – नीले, हरे, बैंगनी आदि रंगों में पानी या वनस्पति के अवयव होते हैं, इसलिए ये ठंडक का आभास कराते है। यह आराम व शान्ति की भावना को दर्शाते है।

चित्र 2.10

गर्म और ठंडे रंग एक दूसरे के पूरक और सदा रूचिकर प्रभाव उत्पन्न करते है।

- **निष्प्रभावी रंग** – सफेद, काला, ग्रे (सलेटी), भूरा, टैन, बेज आदि निष्प्रभावी रंग कहलाते हैं। ये गाढ़े प्रिंट के लिये प्रभावी पृष्ठभूमि बनाते हैं।

क्रियाकलाप 2.1

एक कागज पर 5 इंच × 5 इंच के दो चौकार आकार में अपनी पसन्द का डिज़ाइन बनाएँ।

1. एक में ठंडे रंग भरें।
2. दूसरे डिज़ाइन में गरम रंग से भरें।

नोट : प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक रंगों को मिलाकर कुल 12 रंग प्राप्त होते हैं। यह 12 रंग एक क्रम में चक्र के रूप में रखे गये हैं। ये रंग चक्र, हमें रंग योजना बनाने में सहायक होता है।

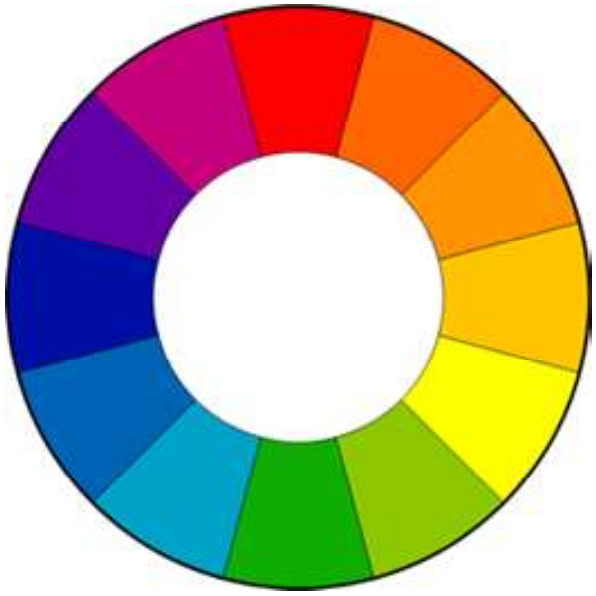

चित्र 2.11

2.1.3 रंगो के गुण

रंगों का वर्णन निम्न प्रकार से किया जाता है।

1. वर्ण (Hue) रंग का नाम है
2. श्रेणी (Value) रंग के हलकेपन या गहरेपन का संकेत
3. प्रगाढ़ता (Intensity) – किसी रंग की तेजी या हलकापन

नोट – किसी भी रंग में सफेद रंग मिला देने से हल्का रंग प्राप्त होता है। इसे टिन्ट कहते है। किसी भी रंग में काला रंग मिला देने से गहरा रंग प्राप्त होता है। इसे शेड या टोन कहते है।

2.1.4 रंग योजना

जब आप एक से अधिक रंगों का प्रयोग करते हैं, तब एक निश्चित योजना के अंतर्गत इनका प्रयोग हमेशा सुन्दर प्रभाव उत्पन्न कर सकता है। ये दो प्रकार की होती हैं।

1. समान या संबंधित रंग योजना
2. वैषम्य रंग योजना

टिप्पणी

1. समान या संबंधित रंग योजना

इस योजना में रंग चक्र के एक दूसरे के समीप वाले रंगों का प्रयोग किया जाता है।

- मोनोक्रोमेटिक रंग योजना – इस में एक ही रंग का प्रयोग होता है। इस में एक रंग के ही शेड्स व टिन्ट्स प्रयोग किये जाते हैं।

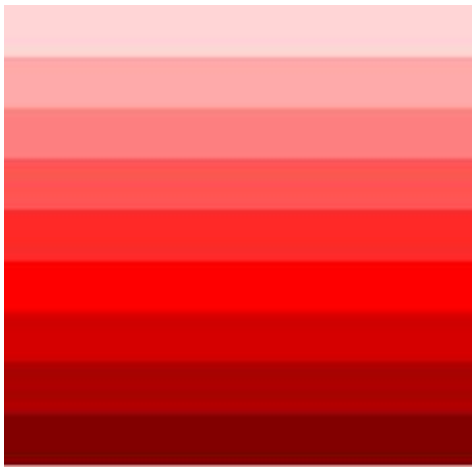

चित्र 2.12

2. **समीपवर्ती (Analagous) रंग योजना –** इस रंग योजना में रंग चक्र में स्थित पास–पास के रंगों का प्रयोग किया जाता है।

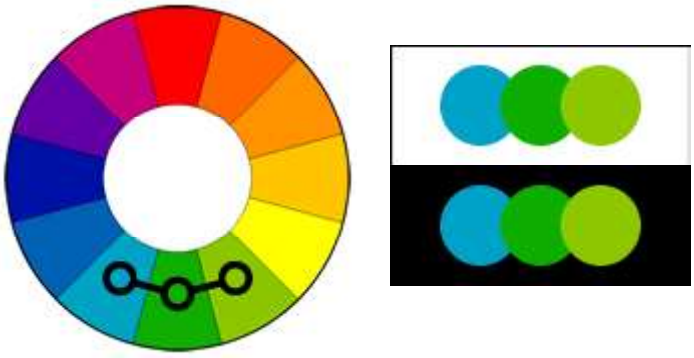

चित्र 2.13

3. वैषम्य रंग योजना

इस योजना में उन रंगों का प्रयोग किया जाता है, जो रंग चक्र में परस्पर एक दूसरे के विरूद्ध रखे जाते हैं।

- **पूरक (Complementary) रंग योजना –** यह दो रंगो की योजना होती है। इस में एक रंग और उसका पूरक रंग एक साथ प्रयोग होता है। जैसे – लाल व हरा।

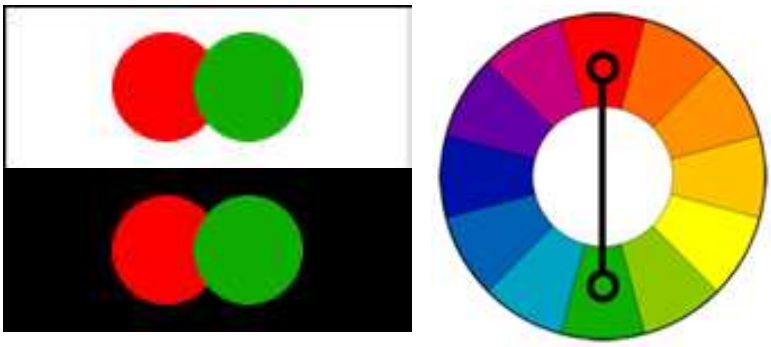

चित्र 2.14

- **विभक्त पूरक (Split Complimentary) रंग योजना –** यह तीन रंग वाली योजना है। इस रंग योजना में रंग और चक्र का एक रंग और उसके पूरक रंग को विभाजित करने के उपरान्त प्राप्त दो रंगों का प्रयोग किया जाता है। यह रंग चक्र में पूरक रंग की दोनों ओर रखे हुये मिलते है जैसे – पीला, लाल बैगंनी और नीला बैंगनी।

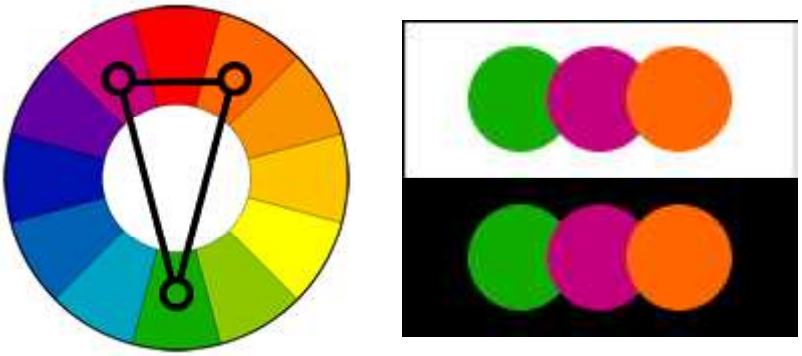

चित्र 2.15

- **त्रिकोणीय (Triad) रंग योजना –** यह तीन रंगों का संयोजन होता है। यह वह रंग है जो चक्र में समभुज त्रिकोण की रचना करते है।

जैसे – लाल, नीला व पीला।

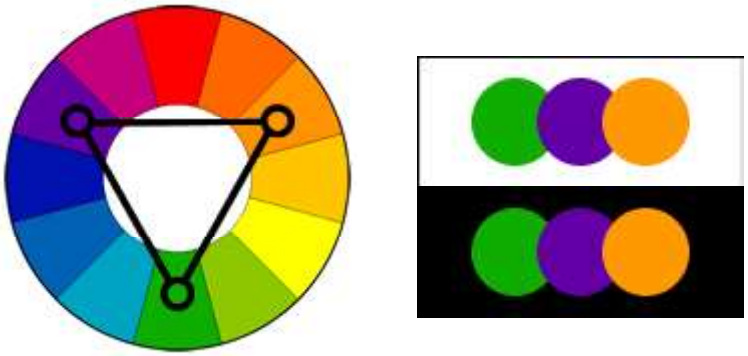

चित्र 2.16

- **चतुर्भुज (Tetrad) रंग योजना** – यह चार रंगों वाली योजना है। इसमें किन्ही चार रंगों का संयोजन किया जाता है। जिन से रंग चक्र में एक वर्ग की रचना होती है। जैसे – लाल, नीला–बैंगनी, पीला नांरगी व हरा।

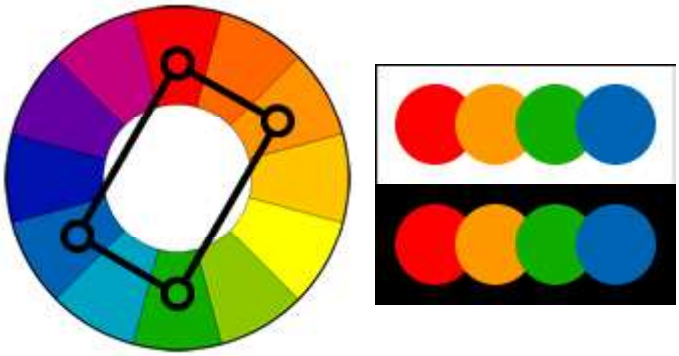

चित्र 2.17

2.1.5 कला के सिद्धांत

कला के मूल सिद्धांत को ध्यान में रखकर प्रभावशाली रूप से उनका प्रयोग करने पर किसी भी वस्तु की सुंदरता में और निखार लाया जा सकता है।

ये सिद्धांत है –

- सांमजस्य
- संतुलन
- अनुपात
- लयात्मकता
- सुस्पष्टता

1. **सामंजस्य (Harmony)** – सामंजस्य, कला का वह सिद्धांत है, जो विचारों और वस्तुओं के चयन से एकता का आभास उत्पन्न करता है।

अच्छा सामंजस्य गलत सामंजस्य

चित्र 2.18

निम्नलिखित के सही चयन से ही सामंजस्य स्थापित होता है :

रेखा

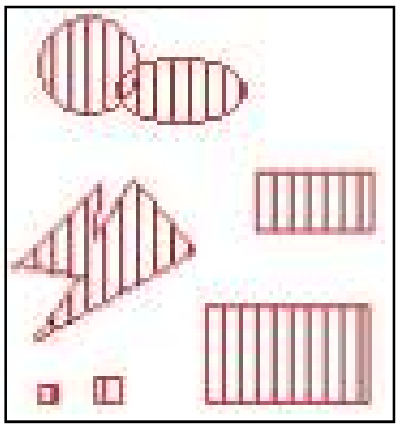

चित्र 2.19

आकार और आकृति

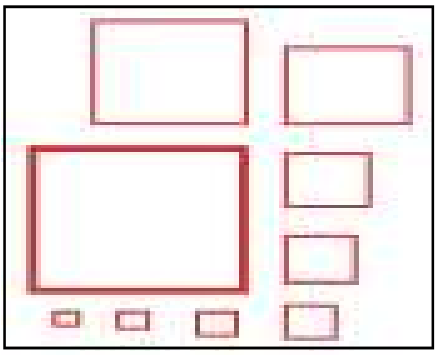

चित्र 2.20

बुनावट

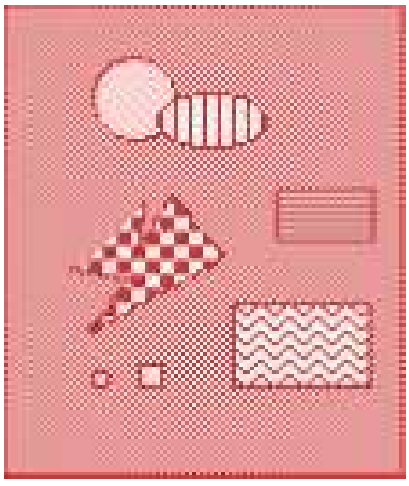

चित्र 2.21

रंग

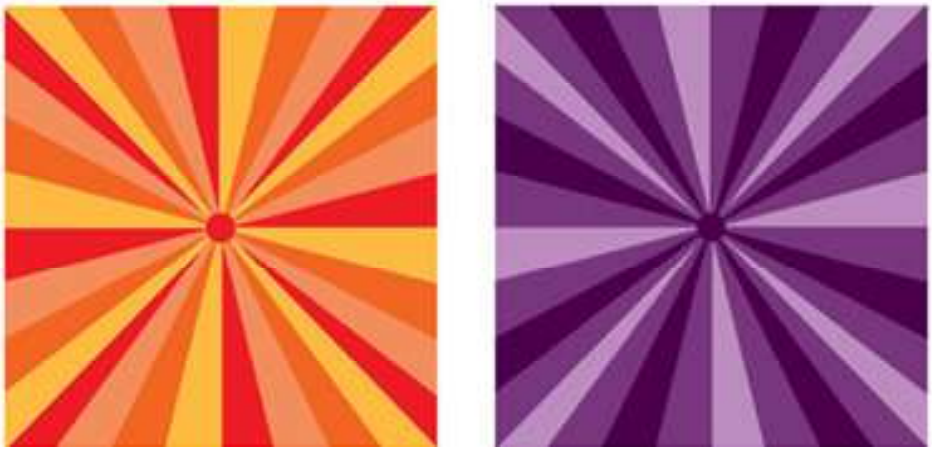

चित्र 2.22

2. **संतुलन (Balance)** – मध्य बिन्दु या क्षेत्र से वज़न का बराबरी से वितरण को संतुलन कहा जाता है। यह पूर्ण विराम की स्थिति है। इसमें हम भार को नहीं नापते, परन्तु उसकी दूसरों को आकर्षित करने की क्षमता को नापते हैं। अतः संतुलन, कला का वह सिद्धांत है जिसमें रंग, बुनावट, डिज़ाइन, प्रकाश, आकृति और भार, आकृति के रूप का सही ढंग और मात्रा में प्रयोग करके रोचक और सुंदर प्रभाव उत्पन्न किया जाता है। हल्का सा असंतुलन भी आपको क्रोधित और बेचैन कर सकता है।

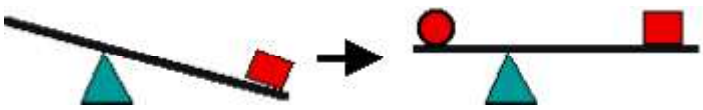

चित्र 2.23

संतुलन दो प्रकार का होता है :

क) औपचारिक संतुलन

ख) अनौपचारिक संतुलन

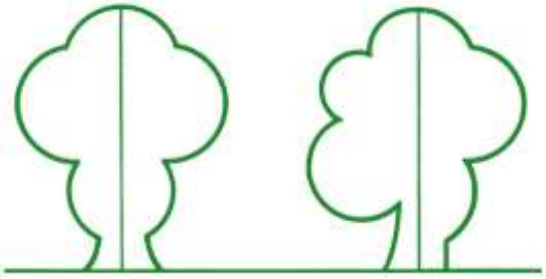

क ख

चित्र 2.24

i) **औपचारिक संतुलन** – इसको सुडौल संतुलन (Symmetrical Balance) भी कहते है। औपचारिक संतुलन में दो समान मोटिफ काढ़े जाते है। ये मोटिफ मध्य बिंदु से बराबर की दूरी पर होते हैं। औपचारिक संतुलन भी दो प्रकार के होते हैं –

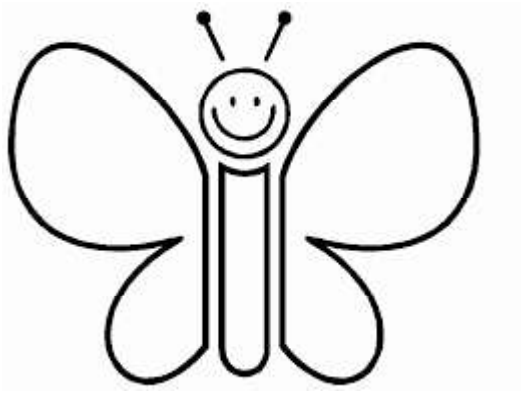

चित्र 2.25

द्विसममित या सुडौल औपचारिक संतुलन – द्विसममित संतुलन में मध्य बिंदु से मोटिफ को बराबर दूरी पर रखा जाता है। प्रत्यक्ष संतुलन में, विभिन्न मोटिफ का प्रयोग होता है, परन्तु अलग होने पर भी समान आकर्षण वाले मध्य बिन्दु से बराबर दूरी पर होते है। इस प्रकार की व्यवस्था काफी प्रभावी और आकर्षक होती है। यह डिज़ाइन को रोचक बना देती है।

ii) **अनौपचारिक संतुलन** – इसको असममित संतुलन कहते है। यह संतुलन पाने के लिए बहुत ही परिष्कृत और सूक्ष्म विधि है। इसमें अपनी कलात्मक सवेंदनशीलता के साथ–साथ अपनी मानसिक क्षमताओं का भी प्रयोग करना पडता है। मान लीजिए, आपके पास दो मोटिफ हैं, जो बराबर से ध्यान आकर्षिक करने में असफल है। तब आप बड़े मोटिफ को मध्य बिंदु के पास रखते हैं। इससे छोटा मोटिफ जो केन्द्र से दूर स्थिति है संतुलित हो जाता है। ऐसा करना थोड़ा कठिन है, लेकिन इसकी कलापूर्ण विशेषता बहुत महत्वपूर्ण है।

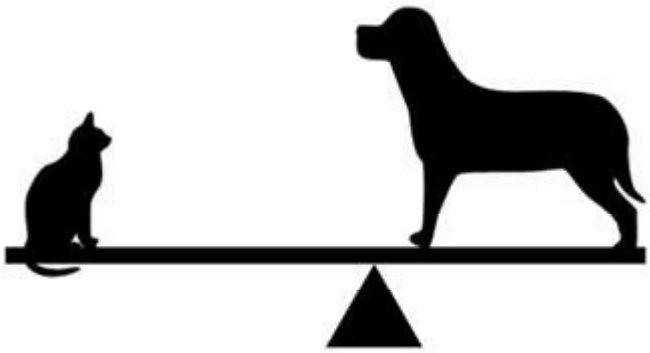

चित्र 2.26

3. अनुपात

जब भी दो वस्तुएं एक साथ व्यवस्थित की जाती हैं, तो अपने आप ही अनुपात से रिश्ता स्थापित हो जाता है। रंग, आकार, आकृति, पैटर्न, बुनावट के बीच कोई न कोई रिश्ता है। अगर ये सारे अवयव सही अनुपात में हैं, तो परिधान सुंदर दिखता है।

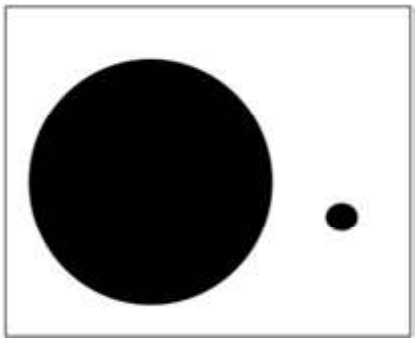

चित्र 2.27

4. लयात्मकता (Rhythm)

लयात्मकता अपने आप में गति नहीं है परन्तु उसका इससे गहरा संबंध है। कोई रेखीय डिज़ाइन वाले कपड़े को ध्यान से आधे मिनट के लिए देखें। आप देखेंगे कि आपकी आँखें रेखा की दिशा या मार्ग पर घूमने लगती हैं। यह इस की लयात्मकता के कारण होता है। लयात्मकता डिज़ाइन में निहित होती है। एक अच्छे डिज़ाइन में सौम्य लयात्मकता होती है।

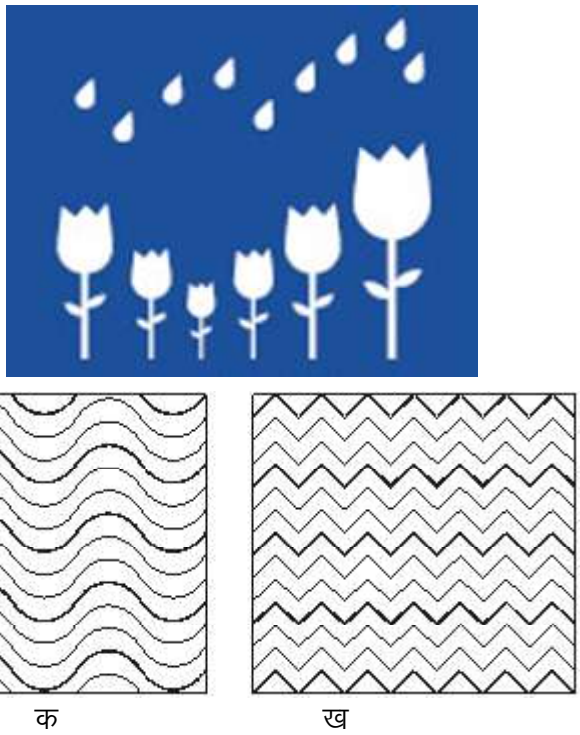

क ख

चित्र 2.28

5. सुस्पष्टता (Emphasis)

हर डिज़ाइन में कोई न कोई बिन्दु ऐसा होता है, जो आपकी नज़र अपनी ओर आकर्षित करता है। आप बाकी डिज़ाइन बाद में देखते हैं। इस बिन्दु पर ही सुसपष्टता उत्पन्न होती है। सुस्पष्टता का अर्थ है, रूचि का केन्द्र।

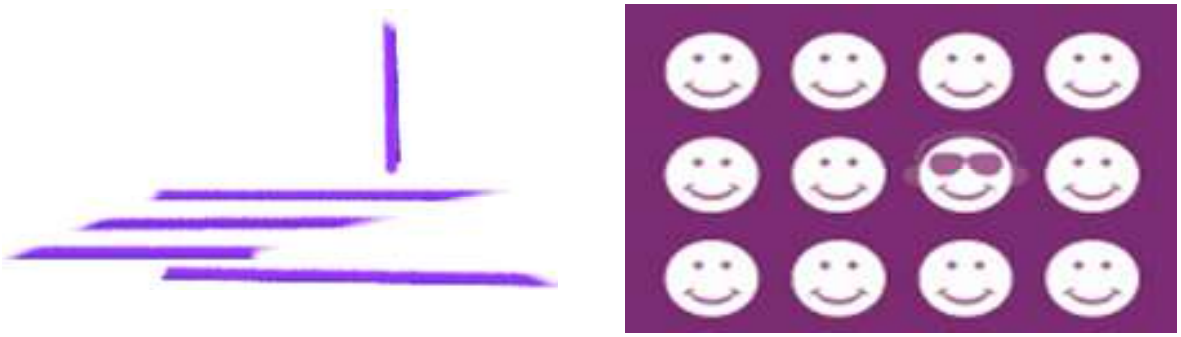

चित्र 2.29

पाठगत प्रश्न 2.1

रिक्त स्थान भरो।

1. खड़ी या अनुलंब रेखा ..... दर्शाती है।
2. ..... रंग गाढ़े प्रिन्ट के लिये प्रभावी पृष्ठभूमि बनाते है।
3. किसी रंग की तेजी या हलकेपन को ..... कहते है।
4. मध्य बिन्दु या क्षेत्र से वजन का बराबरी से वितरण को ..... कहते है।
5. ..... का अर्थ है, रूचि का केन्द्र।

2.2 डिज़ाइन के प्रकार

रेखा, रूप, आकृति, रंग, बुनावट और स्थान की व्यवस्था डिज़ाइन को कलात्मक बना देती हैं। डिज़ाइन दो प्रकार के होते है, संरचनात्मक डिज़ाइन और आलंकारिक डिज़ाइन। कोई भी रेखा, रंग या वस्तु जिसको संरचनात्मक डिज़ाइन के साथ इस तरह जोड़ा जाये, जिससे वह और अधिक सुंदर लगे–ऐसे डिज़ाइन को कलात्मक डिज़ाइन कहते हैं।

कलात्मक डिज़ाइन निम्न प्रकार के होते हैः

1) प्रकृतिवादी डिज़ाइन

टिप्पणी

2) रूढ़िवादी डिज़ाइन

3) ज्यामितीय डिज़ाइन

4) अमूर्त डिज़ाइन

2.2.1 प्रकृतिवादी डिज़ाइन

ये डिज़ाइन प्रकृति से प्रभावित होते हैं। यह सुंदर फूल, पत्तियाँ, बेल, पक्षी और पशुओं के मोटिफ से बने डिज़ाइन होते हैं।

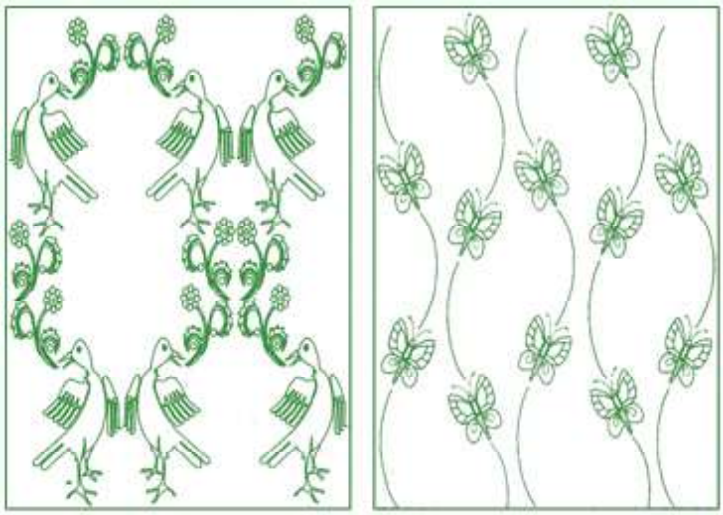

चित्र 2.30

2.2.2 रूढ़िवादी (कन्सरवेटिव) डिज़ाइन

यह आकृति सरल है। इन डिज़ाइनों को कई शताब्दियों से विभिन्न समूह के लोग प्रयोग करते आ रहे हैं। इनको बंगाल की कांथा और बिहार की सुजनी की लोक कला के नाम से जाना जाता है।

चित्र 2.31

2.2.3 ज्यामितीय डिज़ाइन

विभिन्न आकार और रेखाओं के प्रयोग से जो डिज़ाइन बनते हैं, उन्हें ज्यामितीय डिज़ाइन कहते हैं। कर्नाटक की कसूती और पंजाब की फुलकारी, ज्यामितीय डिज़ाइन के श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

चित्र 2.32

2.2.4 अमूर्त डिज़ाइन

ये बिल्कुल नवीन और आधुनिक डिज़ाइन हैं। यह वास्तव में अपने चारों ओर देखी गई चीजों की व्याख्या करते हैं।

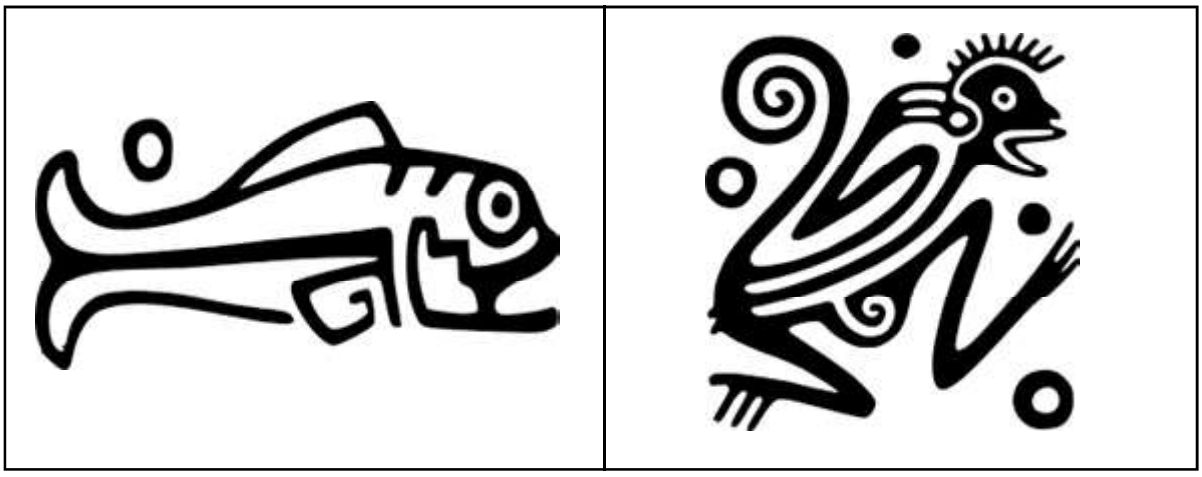

चित्र 2.33

2.3 डिज़ाइन का स्थान–निर्धारण अथवा उसे व्यवस्थित करना

हमने अभी तक डिज़ाइन और उसके प्रकार के बारे में सीखा। अब हम जानेंगे कि सुंदरता उत्पन्न करने की सबसे अच्छी विधि क्या है। इस के लिए हम डिज़ाइन को विभिन्न प्रकार से रख कर देखेंगे, जिससे उत्पाद के सम्पूर्ण रूप में और निखार आए।

टिप्पणी

2.3.1 डिज़ाइन को व्यवस्थित करने के 6 प्रकार होते हैं –

1. क्षैतिज
2. अनुलम्ब
3. अर्ध ड्राप (half drop)
4. विकर्ण
5. कोना
6. बॉर्डर

आइए, देखते हैं कि विभिन्न प्रकार की व्यवस्था कैसी लगती है।

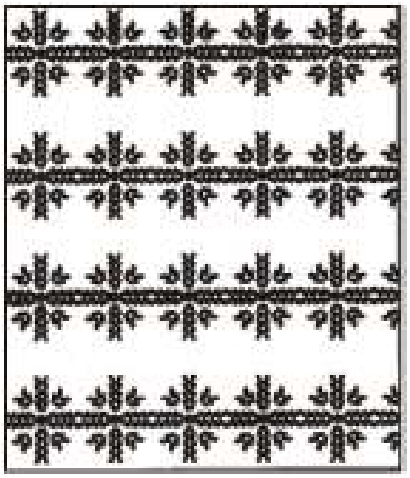

क्षैतिज

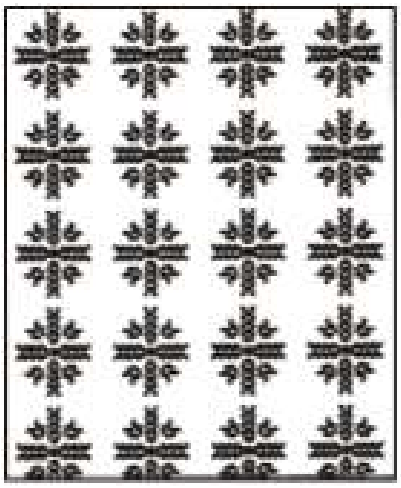

अनुलम्ब

अर्ध–ड्राप

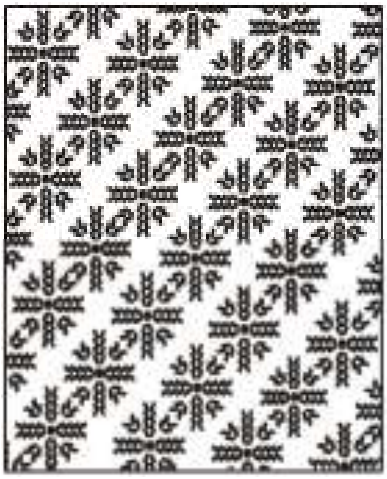

विकर्ण

चित्र 2.34(क)

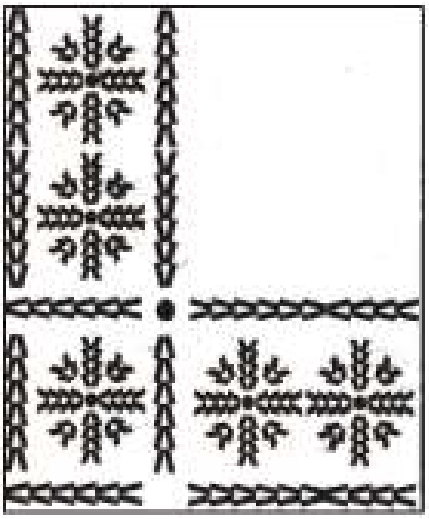

कोना

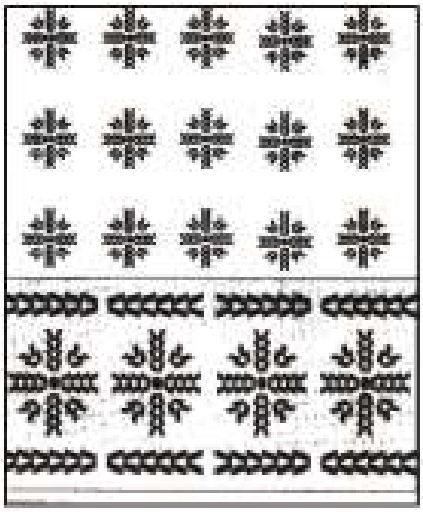

बॉर्डर

चित्र 2.34(ख)

2.3.2 व्यवस्था करते समय ध्यान देने योग्य बातें

- अपने उद्देश्य के अनुरूप जैसे बच्चे के परिधान पर कार्टून।
- परिधान के आकार और रूप के अनुपात में होनी चाहिए।
- बुनावट को पूरक करने वाली हो।
- अवसर व समय के अनुसार हो।
- उम्र के लिए उपयुक्त हो।
- सतह का प्रयोग प्रभावशाली रूप में होना चाहिए।
- संरचनात्मक डिज़ाइन के पास के क्षेत्र को सजा कर सुस्पष्टता दें। उदाहरण के लिए कॉलर, पॉकेट, प्रिंसेज़ लाइन, आदि।
- परिधान के आरामदायक स्तर को ध्यान में रखकर व्यवस्था होनी चाहिए।

2.4 मोटिफ का स्थानांतरण

आप किसी भी पुस्तक, पत्रिका या किसी दूसरे कढ़ाई किए हुए वस्त्र से डिज़ाइन चुन सकते हैं। परन्तु इस मोटिफ को प्रयोग करने के लिए आपको उस वस्त्र पर स्थानांतरित करना होगा, जिस पर कढ़ाई करनी है। मोटिफ को स्थानांतरित करने की आम विधियाँ हैं :

1) बैक ट्रेसिंग (बैक अनुरेखण)

2) अनुरेखण कागज़ और कार्बन पेपर

टिप्पणी

3) कार्बन पेपर

4) छेददार बटर पेपर

5) अनुरेखण मेज़

1. बैक अनुरेखण

इस विधि में अनुरेखण पर डिज़ाइन के पीछे से नरम पेंसिल को डिज़ाइन की रेखाओं पर घुमाया जाता है और फिर चिकने वस्त्र पर डिज़ाइन का स्थानांतरण किया जाता है। वस्त्र पर अनुरेखण सीधी तरफ की ओर होना चाहिए। कठोर पेंसिल को सारी रेखाओं पर चलाइए। अगर आपके पास कोई और सामग्री नहीं हो तो यह एक अच्छी विधि है।

2. अनुरेखण कागज़ और कार्बन पेपर

सबसे पहले मोटिफ का अनुरेखण कागज़ पर मूल स्रोत से अनुरेखण कीजिए। डिज़ाइन का अनुरेखण करने के लिए तेज़ नुकीली एचबी पेंसिल का प्रयोग करें। जब आपने मोटिफ का अनुरेखण कर दिया हो, तो आप इसे अपने परिधान पर रखने के लिए तैयार हैं। जो स्थान या व्यवस्था आपने चुने हैं, उस पर उपयुक्त निशान लगाइए। ध्यान से उस निशान पर अनुरेखित डिज़ाइन रखें। पिन के सहारे उस डिज़ाइन को स्थिर करें। अब सावधानी बरतते हुए एक कार्बन पेपर को अनुरेखण कागज के नीचे सरकाइए। अच्छी नुकीली पेंसिल के सहारे डिज़ाइन के ऊपर ट्रेस कीजिए। जब तक पूरे मोटिफ पर आपने पेंसिल नहीं घुमा ली तब तक पेंसिल नहीं उठाइए। एक बार डिज़ाइन समाप्त हो जाए तो कार्बन पेपर को धीरे से बाहर निकालिए। अपने डिज़ाइन को चैक करिए कि डिज़ाइन की हर बारीक रेखा सही रूप में ट्रेस हुई है या नहीं।

3. कार्बन पेपर

यह विधि तब उपयुक्त है, जब आपके पास डिज़ाइन ट्रेस पेपर पर उपलब्ध है। बिन्दु दो में दी गई विधि के अनुसार डिज़ाइन को कपड़े पर ट्रेस करें। कुछ स्थिति में कार्बन पेपर हिलने की संभावना रहती है। इसलिये सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है।

4. छेददार बटर पेपर

बड़े डिज़ाइन भी छेददार बटर पेपर द्वारा स्थानांतरित किये जा सकते हैं। बटर पेपर के ऊपर किसी डिज़ाइन को नुकीले स्केच पेन या मार्कर से ट्रेस करें। इसके ऊपर बिना धागे की सुई से सिलाई मशीन चलाएँ। इससे डिज़ाइन में कई सारे छिद्र हो जाएगें। अब आपका ट्रेस तैयार है। जो स्थान आपने निश्चित कर लिया उस पर ट्रेस को पिन की सहायता से स्थिर कीजिए। अब एक कटोरे में थोड़ा नील का पाउडर और मिट्टी का तेल मिलाइए। मिश्रण अधिक गाढ़ा या अधिक पतला नहीं होना चाहिए। मुलायम कपड़ा या रुई से इस मिश्रण को थपथपा के डिज़ाइन वाले बटर पेपर पर गिरा दें। अब इन छिद्रों पर रूई/कपड़ा मल दें। इस के उपरान्त ध्यान से छेददार पैटर्न को उठाएँ और देखें कि डिज़ाइन सफाई से स्थानान्तरित हुई है कि नहीं। अगर नहीं हुई है तो यह पूरी विधि फिर से

दोहराइए। जब स्थानान्तरण पूरा हो जाए तो ध्यान से पैटर्न को उठाइए। आपको कपड़े पर नील की छोटी बूँदे दिखेंगी। एक कपड़े से अब धीरे से अनुरेखण कागज़ को साफ करें। कागज़ को संभाल कर रखें क्योंकि इसे फ़िर से प्रयोग किया जा सकता है।

5. अनुरेखण मेज़

अनुरेखण मेज़ के सहारे भी डिज़ाइन स्थानन्तरित होता है। आप अपनी अनुरेखण मेज आसानी से बना सकते है। इसके लिए आपको चाहिए :

- चार टाँगों का स्टूल
- काँच की शीट
- लैम्प

स्टूल को उलटा रखिए। अब उसके पैर हवा में होंगे। अब ध्यान से कॉच की शीट को इन पैरों पर रखिए। काँच के नीचे ऊपर की ओर मुँह किए हुए बल्ब रखिए। आपकी अनुरेखण मेज़ तैयार है।

विधि :

- नीचे रखा बल्ब जलाएं।
- डिज़ाइन को शीशे पर रखें।
- कपड़े को उस के ऊपर ध्यान से रखें।
- अब नुकीली HB पेंसिल के सहारे डिज़ाइन को कपड़े पर उतारिए।
- इस प्रकार आप बिना अनुरेखण कागज़ बनाए ही कपड़े पर सीधे डिज़ाइन ट्रेस कर सकेंगे। ऐसे में सब बारीक चीज़ें आसानी से दिखती हैं।

अगर आप डिज़ाइन किताब या किसी और स्रोत से ले रहें हैं तो आप डिज़ाइन के ऊपर ट्रेसिंग पेपर रखकर ध्यान से पूरे डिज़ाइन को उतारें। बुक को खराब होने से बचाने के लिए, एक काँच का टुकड़ा डिज़ाइन और ट्रेसिंग पेपर के बीच में रखें।

पाठगत प्रश्न 2.2

नीचे दिये गए वाक्यों के सामने सही/गलत (√/×) का चिन्ह लगाए।

1. डिज़ाइन को व्यवस्थित करने के 8 तरीके है। ( )
2. बैक अनुरेखण में कठोर पैन्सिल को डिज़ाइन की रेखाओं पर चलाया जाता है। ( )
3. एक मोटिफ को बड़ा करने को परिवर्धन और छोटा करने को लघुकरण कहते है। ( )

टिप्पणी

4. छेददार बटर पेपर कपड़े पर छोटी–छोटी नील की बूँदे छोड़ता है। ( )

5. रूढ़िवादी डिज़ाइन बिलकुल नवीन और आधुनिक डिज़ाइन होते है। ( )

क्रियाकलाप 2.2

1. विभिन्न प्रकार के संतुलनों के चार चित्र एकत्रित कीजिए और उन्हें अपनी प्रयोग पुस्तिका में चिपकाइए। हर चित्र के नीचे अपनी टिप्पणी दीजिए।

2. अनुपात प्राप्त करने के लिए विभिन्न तरीकों के चार चित्र एकत्रित करके अपनी प्रयोग पुस्तिका में चिपकाइए। हर चित्र के नीचे अपनी टिप्पणी दीजिए।

3. लयात्मकता को प्राप्त करने के विभिन्न तरीकों के चार चित्र एकत्रित कीजिए और उन्हें अपनी प्रयोग पुस्तिका में लगाइए। हर चित्र के नीचे अपनी टिप्पणी भी दीजिए।

2.5 डिज़ाइन का परिवर्धन और लघुकरण

एक ही मोटिफ को बड़ा या छोटा करने से आप उसी मोटिफ को विभिन्न आकार और रूप की वस्तुओं पर प्रयोग कर सकते हैं। अगर आपको दीवान कवर और मेल खाते हुए कुशन कवर को काढ़ना है तो आप क्या करेगे? हाँ, आप दीवान कवर पर बड़ा फूल काढ़ सकते हैं और उसी फूल को छोटा कर के कुशन कवर पर काढ़ सकते हैं।

विधि :

नीचे दिए गए चित्रों को ध्यान से देखिए। आइए, एक मोटिफ को बड़ा करके देखें।

6 सेमी × 6 सेमी. का एक चौकोर खाना लीजिए। इस खाने को 'क' का नाम दें। 1 सेमी. × 1 सेमी. का ग्रिड (जाली) बनाकर, इस खाने 'क' को छोटे खानों में विभाजित कीजिए।

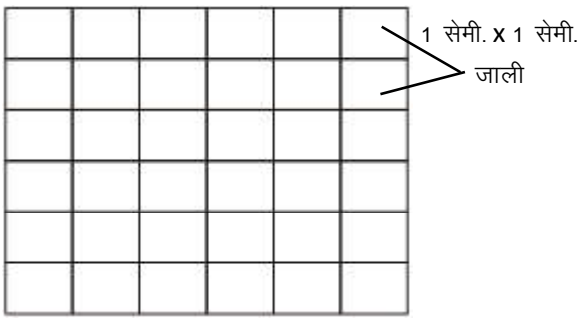

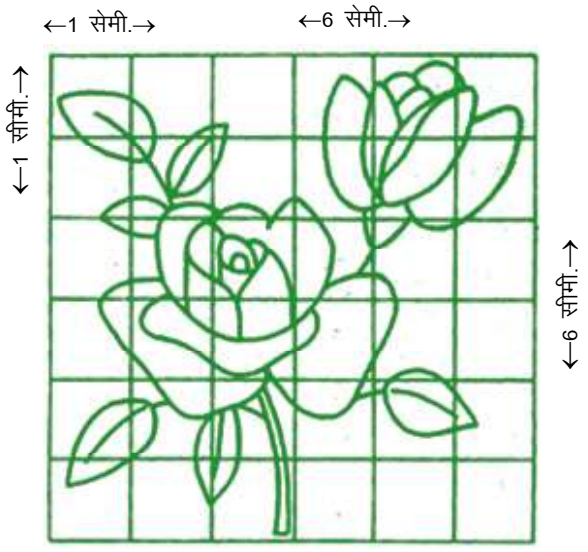

'क'

अब 9 सेमी × 9 सेमी का एक और खाना लीजिए। जिसे हम खाना 'ख' कहेंगे। इस खाने को 1.5 सेमी × 1.5 सेमी के बराबर खानों में विभाजित कीजिए। अब खाने 'क' के हर चौकोर खाने को खाने 'ख' के हर चौकोर खाने से मेल कराइए। उसी डिज़ाइन को खाने 'ख' में दोहराएं। इससे हमें परिवर्धित डिज़ाइन प्राप्त होगा।

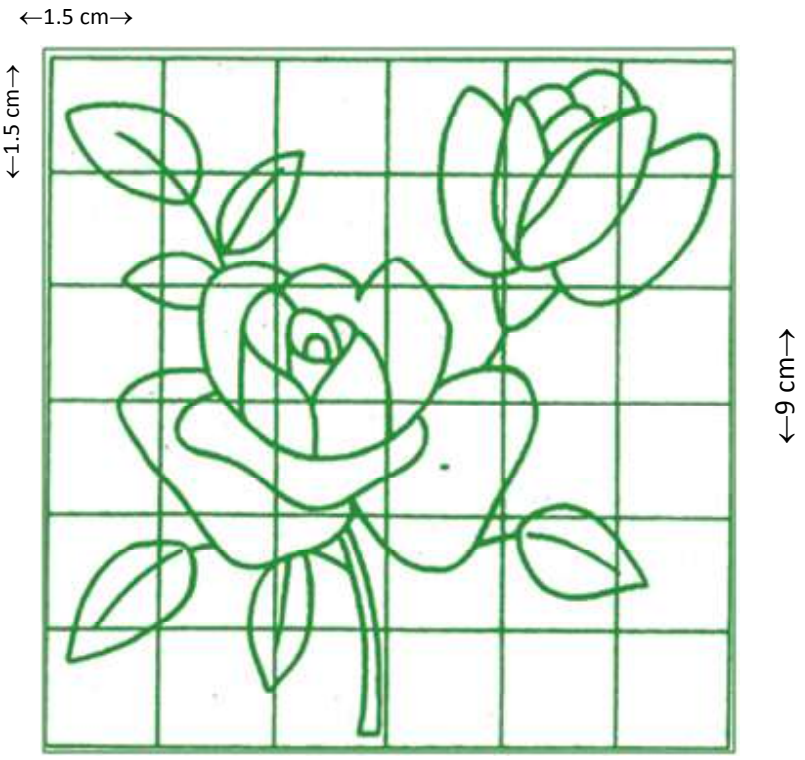

'ख'

चित्र 2.35

आपने क्या सीखा

कला के अवयव

- रूप
- रेखा
- रोशनी
- स्थान
- बुनावट
- पैटर्न
- रंग

टिप्पणी

रंग

- रंगों का वर्गीकरण
  - प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक
  - गर्म, ठंडे, व निष्प्रभावी
- रंगो के गुण
- रंग योजना
  - समान रंग योजना
  - वैषम्य रंग योजना

कला के सिद्धांत

- सांमजस्य
- संतुलन
- अनुपात
- लयात्मकता
- सुस्पष्टता

डिज़ाइन के प्रकार

- प्रकृतिवादी डिज़ाइन
- रूढ़िवादी डिज़ाइन
- ज्यामितीय डिज़ाइन
- अमूर्त डिज़ाइन

डिज़ाइन का स्थान निर्धारण व व्यवस्थित करना

मोटिफ का स्थांनातरण

डिज़ाइन का परिवर्धन व लघुकरण

पाठान्त प्रश्न

1. कला के अवयव को सूचीबद्ध करें और किन्हीं तीन को संक्षिप्त में समझाएँ।
2. संतुलन से आप क्या समझते हैं। संतुलन के प्रकार को सूचीबद्ध कीजिए।

3. डिज़ाइन को व्यवस्थित करने के तरीकों की सूची बनाएं।
4. अनुरेखण मेंज व्यवस्थित करने की विधि बताए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1

1. अनुशासन / गरिमा
2. निष्प्रभावी
3. प्रगाढ़ता
4. संतुलन
5. सुस्पष्टता

2.2

1. गलत (×)
2. गलत (×)
3. सही (√)
4. सही (√)
5. गलत (×)

3

कढ़ाई के औजार व टाँके

सदियों से, कढ़ाई का प्रयोग चीज़ों को सजाने के लिए किया जाता रहा है, चाहे वह छोटी से छोटी व्यक्तिगत वस्तु हो। रुमाल से लेकर पर्दे, कुशन, वाल हैंगिग, चादर और मेज़पोश, आदि पर कढ़ाई की जा सकती है। कशीदाकारी उन सब प्रकार के वस्त्रों पर की जाती है जिसके आर-पार सुई जा सके और सुई के साथ धागा। लिनेन, सूती, ऊनी, रेशमी और चमड़े पर कढ़ाई की जा सकती है। संग्रहालय में विभिन्न स्रोतों से एकत्रित सुंदर उदाहरण देखने को मिलते हैं। यूँ तो कशीदाकारी के लिए डिज़ाइनों में आश्चर्यजनक भिन्नता हो सकती है, परन्तु फ़िर भी दुनिया भर के टाँकों और आधारभूत तकनीक विधियों में समानता देखने को मिलती है।

इस पाठ में आपको मौलिक टाँके और डिज़ाइन से परिचय कराया जाएगा, जिससे आप कशीदाकारी का सुंदर नमूना बना सकें। इस पाठ में आप कढ़ाई में प्रयोग किये जाने वाले औज़ारों के बारे में भी जानेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप :

- कढ़ाई में प्रयोग होने वाले औजार को पहचान कर सूची बना सकेंगे;
- कपड़े के अनुसार धागे और सुई का चयन कर सकेंगे;
- टाँकों की पहचान कर उन्हें बना सकेंगे।

टिप्पणी

3.1 साम्रगी और औजार

यदि आपने कढ़ाई करने का निश्चय कर लिया है तो यह आवश्यक है कि आप उपयुक्त औजार एकत्रित करें। याद रखिए कि उचित औजार सुंदर काम करने में मदद करते हैं। कढ़ाई की सहायक सामग्री को उपयुक्त प्रकार से प्रयोग करना सीखिए, जिससे आपका कार्य साफ और उत्तम गुण का होगा।

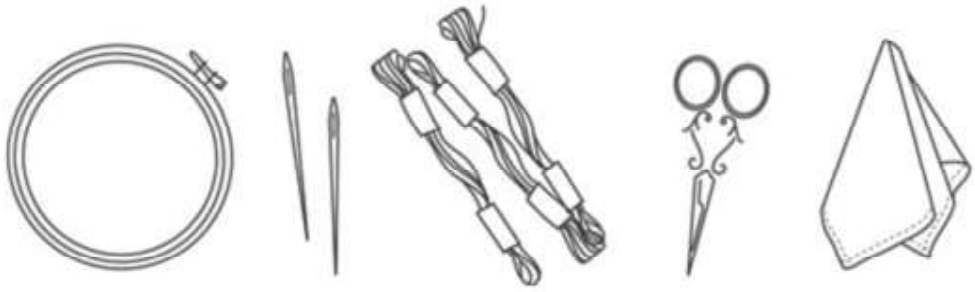

चित्र 3.1

i) **कढ़ाई की सुई –** कढ़ाई के लिए अच्छी सुई होना सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह भिन्न प्रकार और आकार में उपलब्ध है। सुई की नोक भी नुकीली और पतली होनी चाहिए। कढ़ाई की सुइयाँ थोड़ी छोटी और पतली अथवा लम्बा छेद वाली होती हैं। उनको 1-10 के आकार में बनाया जाता है। जितनी अधिक अंक, उतनी ही पतली सुई होगी।

चित्र 3.2

विभिन्न प्रकार की सुईयों का भंडारण आपके पास होना चाहिए। सुई को डिब्बे में ही रखें। अपनी सुई को साफ और नुकीला रखने के लिए उसे 'रेगमार' पर हलके से घिसना उचित होता है।

ii) **कैंची** – कढ़ाई की कैंची छोटी और तेज़ व संकरे, नुकीले सिरे वाली होती है। इसके ब्लेड तेज़ धार के होने चाहिए, जिससे धागे को सफाई से काटने में मदद मिलती है। ब्लेड की रक्षा करने के लिए उन्हें हमेशा कवर में रखें और कभी–कभी कैंची पर धार लगवाते रहें।

चित्र 3.3

iii) **अंगुस्ताना/थिम्बल** – यह एक छोटा–सा, हल्की धातु का गोलाकार टुकड़ा होता है, जो मध्यमा/बीच की अंगुली में आसानी से फिट हो जाता है। यह सिर्फ बेहतर कढ़ाई करने में ही मदद नहीं करता अपितु सुई को कपड़े में डालते समय अंगुली जख्मी भी नहीं होती। अंगुस्ताना कई आकारों में आता है। खरीदने से पहले, सही नाप के लिए अपनी अंगुली में डालकर अवश्य देखें।

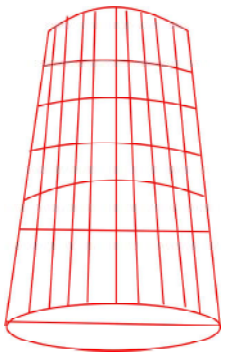

चित्र 3.4

iv) **कढ़ाई के फ्रेम :** कढ़ाई करते वक्त आमतौर से फ्रेम का प्रयोग होता है। फ्रेम कपड़े को कसकर और समान रूप से खींच कर रखता है। फ्रेम का उपयोग कर की गयी कढ़ाई हाथ से पकड़कर की गयी कढ़ाई से अधिक साफ और त्रुटिहीन होती है। फ्रेम दो प्रकार के होते हैं:

1) गोल और 2) आयताकार

गोल फ्रेम

गोल फ्रेम, हूप भी कहलाते हैं। इसमें दो भाग होते हैं। एक छोटा छल्ला जो बड़े छल्ले में फिट हो जाता है। इन्हें सटाकर फिट रखने के लिए सामान्यतया एक पेंच या स्प्रिंग लगा होता है। यह फ्रेम लकड़ी या धातु के बने होते हैं।

चित्र 3.5

आयताकार/चौकोर फ्रेम

इसमें चार टुकडों को एक दूसरे से जोड़ कर इस प्रकार रखा जाता है, ताकि एक आयत बन जाए। कढ़ाई वाले कपड़े को इस फ्रेम पर चारों ओर से खींचकर रखा जाता है। कपड़े को फ्रेम के अंत पर सुई और धागे की सहायता से सिल दिया जाता है। यह कपड़े को सही तनाव/खिंचाव प्रदान करता है।

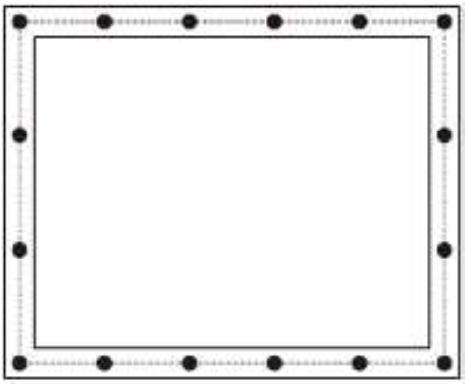

चित्र 3.6

v) **डिज़ाइन :** कढ़ाई करने के लिए अति आवश्यक है, डिज़ाइन जिसे काढ़ना है। आप अपने डिज़ाइन स्वयं बना सकते हैं। आपने डिज़ाइन का स्थानान्तरण और उसे आकार में बढ़ा या छोटा करने की विधि पाठ 2 'डिज़ाइन के सिद्धांत', में सीख ली हैं।

vi) **कढ़ाई के धागे –** कढ़ाई के लिए धागे अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। बाज़ार में अनेकों प्रकार के धागे उपलब्ध हैं। अलग-अलग प्रकार की कढ़ाई के लिए अलग-अलग प्रकार के धागे प्रयोग किए जाते हैं। कौन सा धागा प्रयोग किया जाएगा, यह इस बात पर निर्भर करता है, कि कढ़ाई किस वस्त्र पर की जाएगी। धागे सूती, रेशमी, ऊनी या सिंथेटिक हो सकते हैं। इनमें कम या अधिक ऐंठन हो सकती है, अतः अलग–अलग धागों में अलग–अलग प्रकार की बारीकी और चमक होगी। कढ़ाई के धागे अधिकतर छः प्लाई में उपलब्ध होते हैं। इस प्लाई वाले धागे में से आप कितने भी धागे खींचकर प्रयोग कर सकते हैं।

चित्र 3.7

बाज़ार में सामान्य रूप से उपलब्ध कशीदा (कढ़ाई) के धागे हैं :

- सूती कशीदा (कढ़ाई) के धागे
- रेशमी फ्लॉस (Floss) जिसे 'पट' भी कहते हैं, यह कमज़ोर और कम ऐंठन वाला धागा होता है। यह बेहद चमकदार होता है।
- रेशमी धागे ऐंठनदार होते हैं, अच्छी चमक होती है परन्तु सूती धागों से कम मज़बूती होती है।
- ऊनी धागों को मोटी कढ़ाई के लिए खूबसूरती से प्रयोग किया जा सकता है

अतः धागे का चयन कपड़े की बुनावट तथा कढ़ाई पर निर्भर करता है।

vii) कपड़ा –

आपके कार्य की दिखावट इस बात पर निर्भर करती है, कि आपने किस कपड़े का चयन किया है। आप पतले कपड़े पर पतले धागे से नाजुक – सा दिखने वाला कार्य कर सकते हैं, और उसी डिज़ाइन को मोटे कपड़े पर मोटे धागे से बना सकते है। अलग–अलग प्रकार की कढ़ाई की तकनीक के लिए अलग–अलग सुईयों का प्रयोग होता है। पतले कपड़े पर बहुत ही महीन सुई का और मोटे कपड़े पर मोटी सुई का प्रयोग होता है।

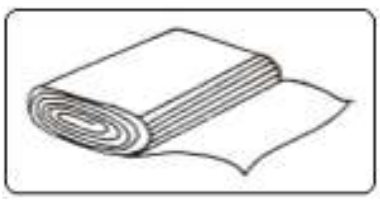

चित्र 3.8

क्रियाकलाप 3.1

आप अपने लिए कढ़ाई की किट तैयार करें।

पाठगत प्रश्न 3.1

निम्न का मिलान कीजिए।

	स्तम्भ I		स्तम्भ II
i.	कढ़ाई की कैंची	क)	चमकदार रेशमी धागा
ii.	अंगुस्ताना	ख)	सुई की ऊपरी संख्या
iii.	फ्रेम	ग)	सूती धागे से कम मज़बूत धागा
iv.	महीन सुई	घ)	सुई की कम संख्या
v.	मोटी सुई	ङ)	तेज़ और नुकीली धार
vi.	पट	च)	अंगुलियों की सुरक्षा के लिए धातु का टुकड़ा
vii.	रेशम का धागा	छ)	कढ़ाई करने वाले कपड़े को पकड़ने वाला लकड़ी का छल्ला

3.2 कढ़ाई के मूलभूत टांके

कढ़ाई के सभी मूलभूत टांके काफी आसान होते हैं। कई मूलभूत टांकों के संयोजन से सुंदर एवं आकर्षक कढ़ाई का नमूना बनाया जा सकता है। याद रखिए, कि कढ़ाई कभी भी गांठ से आरंभ न करें, हमेशा बैक स्टिच का प्रयोग करें। आइए विभिन्न प्रकार के टाँकों (स्टिच) के बारे में जानेः

i) **रनिंग स्टिच** – यह कच्चे टाँके से मिलता जुलता टांका है, इसके टाँके काफी छोटे होते हैं। यह टाँका दोनों तरफ एक समान दिखता है। सुई को कपड़े में ऊपर नीचे एक समान दूरी पर डाला व निकाला जाता है। इसे कच्चा टाँका/बखिया टाँका भी कहते है।

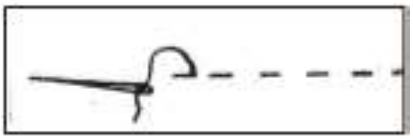

चित्र 3.9

ii) **बैक स्टिच** – यह बहुत मज़बूत टांका है, और इसे कशीदे की उलटी ओर से दायें से बायीं ओर बनाया जाता है। सुई में धागा डालें और जहाँ से कशीदे को प्रारंभ करना हो, वहीं से सुई को कपड़े में डालें। कपड़े के आरपार एक छोटा–सा पीछे की तरफ स्टिच ले और फ़िर पहली स्टिच के थोड़ा सामने सुई

और धागे को निकालें। फ़िर से सुई को उसी जगह डालें जहाँ से सुई निकाली गई थी और उसे आगे वाली बिन्दू के आगे कुछ दूरी पर निकालें। अगर बैक स्टिच को सीधे रेखा पर करना है, तो अच्छा यहीं रहेगा कि कपड़े का एक धागा खींच लें, परन्तु अगर विकर्ण या वक्र रेखा पर करना है तो रूपरेखा के लिए टैकिंग स्टिच का प्रयोग करें।

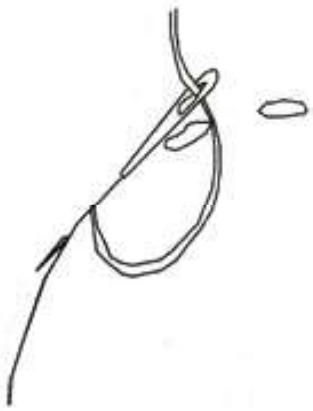

चित्र 3.10

iii) **स्टेम स्टिच :** यह मूलतः आउटलाइन को बनाने के लिए प्रयुक्त टांका है। बैक स्टिच के विपरीत स्टेम स्टिच बायीं से दायीं ओर बनायी जाती है, इस में बीच–बीच में बराबर से डिज़ाइन की रेखा पर छोटे स्टिच लेते रहते हैं। इसे डंडी टाँका अथवा उल्टी बखिया भी कहते हैं। इस में टाँका पीछे से लिया जाता है। इसमें धागे को आगे रखते हुये बखियों का टाँका लेते हैं।

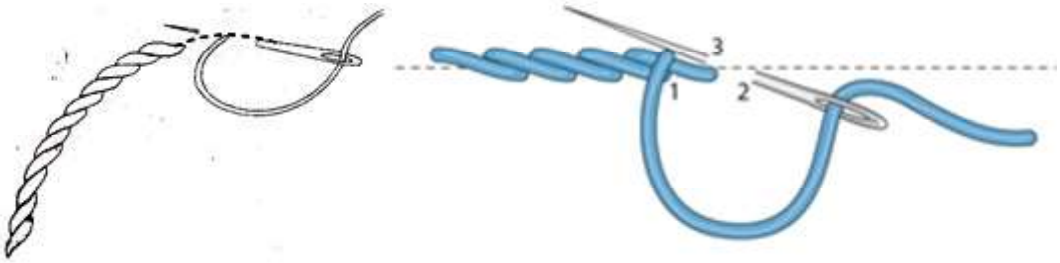

चित्र 3.11

धागा सदैव पूर्व टाँके के बायीं ओर से निकाला जाता है। स्टेम स्टिच की कई पंक्तियाँ पास–पास काढ़ने से भरने के काम भी आती हैं।

iv) **साटिन स्टिच** : यह मूलतः भराई का टांका है, जो कढ़ाई को चिकनी सतह देता है। कढ़ाई के सीधी या उल्टी ओर धागे को बराबर मात्रा में लिया जाता है। टाँके ऊपर और नीचे की ओर सीधे दिखते हैं। ये सीधे टाँके पास–पास लगाए जाते हैं। अगर आपको उभरे हुए या गठियां वाला प्रभाव चाहिए तो इस टाँके पूर्व सतह पर रनिंग स्टिच या चेन स्टिच कर लें। सफाई के लिए किनारों को सावधानी से काढ़िए। बहुत लम्बे टाँके न लगाइए क्योंकि वह उलझ सकते हैं और आकार को खराब कर सकते हैं।

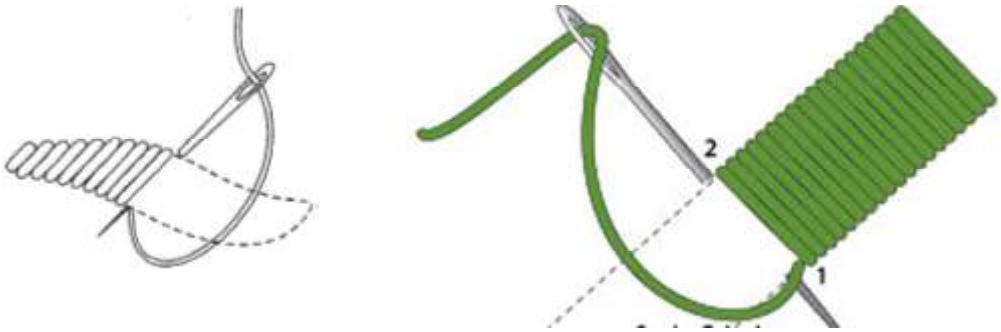

चित्र 3.12

v) **लौंग एण्ड शॉर्ट स्टिच :** इस स्टिच का प्रयोग उन नमूनों को भरने में होता है जो या तो बहुत बड़े आकार के हैं या उनका अनियमित आकार है और जिन्हें साटिन स्टिच से नहीं भर सकते। यह शेडिंग का प्रभाव दिखाने के लिए भी प्रयोग किया जाता है।

जैसे कि नाम से जाना जाता है कि इस स्टिच में बारी–बारी से टांकें लम्बे या छोटे होते हैं। पहली पंक्ति लम्बी और छोटी टांकों से बनायी जाती है और किनारे को बहुत सावधानी से बनाया जाता है। बाद की पंक्ति में, छोटे टाँकों के आगे लंबे टाँके और लंबे टाँकों के आगे छोटे टाँकें बनाए जाते है। जिससे कि इसकी सतह चिकनी प्रतीत हो। बाद वाली पंक्तियों की सही विधि से भरा जाना पहली वाली पंक्ति पर निर्भर होता है। किसी भी स्थान को भरने के लिए टांकों को प्रयोग करने की योजना इस प्रकार बनायें कि वे स्वाभाविक और सुन्दर लगें।

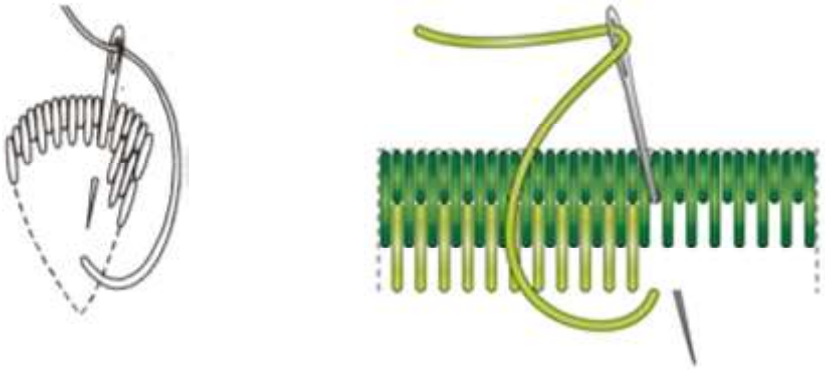

चित्र 3.13

vi) **चेन स्टिच :** कपड़े पर यह टांका जंजीर या चेन की भांति दिखाई देता है। इस में एक कड़ी को ऊपर से नीचे की ओर जोड़ा जाता है। कपड़े से सुई को ऊपर की ओर लायें। धागे के फंदे को अंगूठे से पकड़कर सुई को उसी स्थान पर वापस डालें। सुई को कुछ दूरी पर आगे लायें।

सुई के नीचे धागे के छल्ले को रखकर फिर से दोहरायें। यह टांका आउटलाइन रेखाओं के लिए या भराई के लिए प्रयोग होता है। भराई के लिए चेन की कई पंक्तियाँ साथ–साथ बनाई जाती हैं।

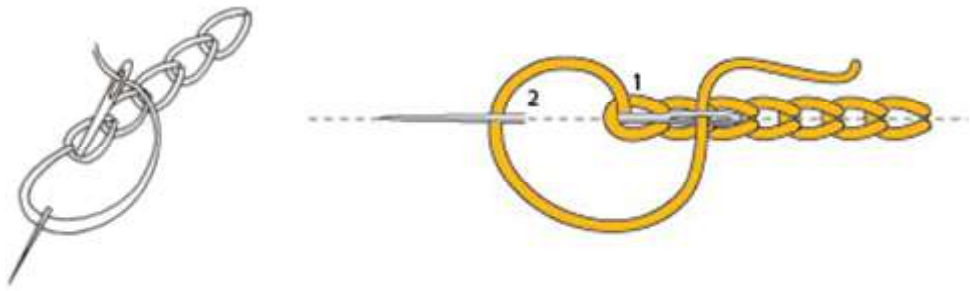

चित्र 3.14

vii) **लेजी डेजी स्टिच** : यह चेन स्टिच की तरह ही होता है। यह टाँका अलग–अलग लेकर बाँधा जाता है। इस में चेन नही बनती। इस में भी धागा सूई के गिर्द ही रखा जाता है। हर टाँके को बनाने के बाद बाँध दिया जाता है। यह फूल बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

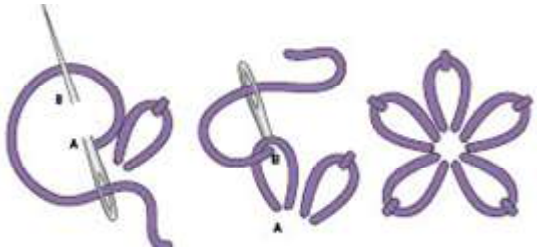

चित्र 3.15

viii) **डार्निंग स्टिच :** यह कपड़े की तन्तुरचना के साथ बनाई गई साधारण रनिंग स्टिच की पंक्ति है, जिसकी हर पंक्ति के अंत में पहुँच कर दिशा बदल दी जाती है। यह भी भराई का टाँका है परन्तु टाँका सिर्फ़ कपड़े के सामने की ओर दिखाई देता है। सुई को सामने की ओर लाकर एक टांका लेकर सुई को नीचे ले जाया जाता है। फिर इसे पीछे की ओर से अगले ही धागे से उसी पंक्ति में बाहर लाया जाता है।

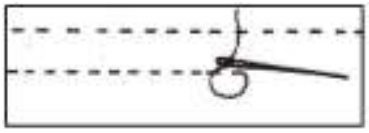

चित्र 3.16

ix) **हेरिंग बोन स्टिच :** इसे हिंदी में मछली टाँका भी कहते हैं। इसे दो समानान्तर रेखाओं के बीच में बनाया जाता हैं। नीचे की रेखा से धागा ऊपर लाया जाता है और सुई को ऊपर की रेखा में थोड़ी दायीं ओर डालकर, और बायीं ओर एक छोटा टांका लेते हुये निकाला जाता है। इस के बाद सुई से नीचे की रेखा पर भी इसी प्रकार टाँका बनाया जाता है।

उत्तम प्रभाव के लिए सुनिश्चित करें, कि सुई द्वारा उठाया गया कपड़ा और स्टिचों के बीच की अन्तर हर बार बराबर हो।

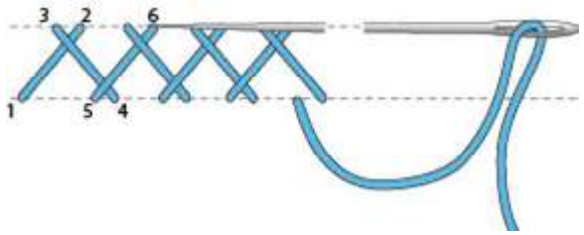

चित्र 3.17

x) **बटन होल या काज स्टिच :** आदमी की कमीज़ के काज को ध्यान से देखिए। इस काज को जिस टाँके से तैयार किया जाता है, उसे काज स्टिच या बटन होल स्टिच कहते हैं। इसे बायीं ओर से दायीं ओर बनाया जाता है। कपड़े से सुई को ऊपर लाइये। धागे को बायें अंगूठे से पकड़कर एक फंदा बनाइये, फिर कपड़े के बीच से सुई को फंदे के नीचे से लाएँ। यह प्रक्रिया दोहरायें। ये टाँके एक दूसरे के काफी पास–पास बनाए जाते हैं। इन टाँके को किसी स्थान को भरने के लिए, किनारों को परिसज्जित करने और पैच वर्क बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है।

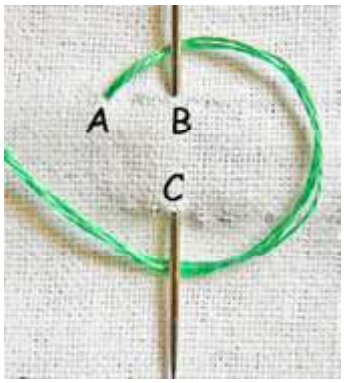

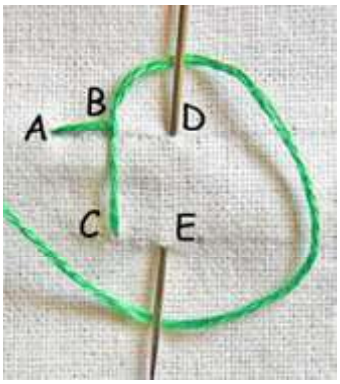

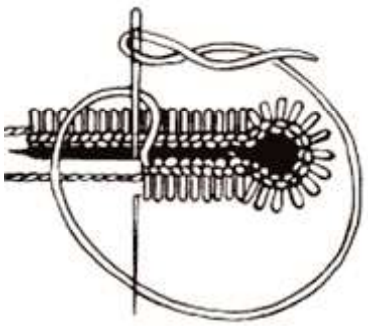

चित्र 3.18

xi) **ब्लैंकट स्टिच :** यह टाँका बटन होल स्टिच के समान ही बनाया जाता है, लेकिल अंतर सिर्फ यह है कि बटन होल स्टिच में टाँके पास–पास लगाए जाते हैं, परन्तु इस में कुछ दूरी पर बनाएं जाते हैं। कम्बलों, कालीनों और भारी वस्तुओं के किनारे को इस स्टिच से फिनिश किया जाता है।

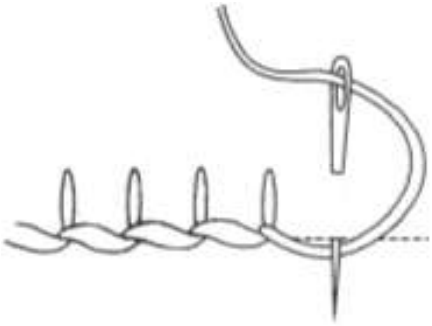

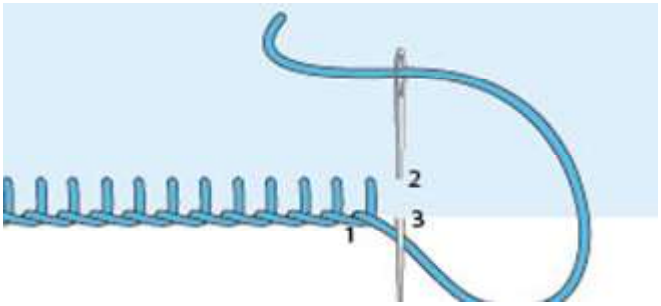

चित्र 3.19

xii) **फैदर स्टिच :** यह एक ऐसा टाँका है, जो ऊपर से नीचे की ओर बनता है। एक रेखा पर काम करते हुए, सुई को रेखा की ओर तिरछा टाँका लेते हुए, सुई को फ़िर ऊपरी मध्य स्थान पर निकाला जाता है। धागे को बायें अंगूठे से दबाते हुए, पहले दायीं ओर सुई डालिए और अगली बार बाईं ओर। धागे को हर बार सुई के नीचे की ओर रखा जाता है।

चित्र 3.20

xiii) **क्रास स्टिच :** यह टाँका 'X' की आकार में कपड़े की सतह पर दिखता है। यह ऊपर से नीचे की ओर बनाया जाता है। बाएं ओर सुई को रखते हुये छोटे–छोटे 'X' तिरछे टाँके बनाएँ, जो उतनी दूर बनाए जाते है, जितनी की टाँके की लंबाई होती है। धागे को दृढ़ता से खींचने पर तिरछे टाँके बन जाते है। जब पंक्ति समाप्त हो जाए तब नीचे से ऊपर की ओर उलट कर टाँके बनाए। ध्यान रहे कि सुई की दिशा बाईं ओर ही होनी चाहिए। टाँको के धागे मध्य में मिलकर 'X' की रचना करेगें। सुव्यस्थित प्रभाव के लिये ध्यान रखें कि हर स्टिच एक ही दिशा में बने।

क्रास स्टिच 'क'　　क्रॉस स्टिच 'ख'

चित्र 3.21

पाठगत प्रश्न 3.2

निम्नलिखित टाँकों का कोई एक प्रयोग बताएँ:

1. स्टेम स्टिच
2. साटिन स्टिच
3. लौंग एण्ड शॉर्ट स्टिच
4. ब्लैकंट स्टिच
5. बटनहोल स्टिच

क्रियाकलाप 3.2

1. कोई भी 5 स्टिचों का चयन कीजिए और इनका प्रयोग करते हुये एक 40 इंच × 40 इंच का मेज़पोश पर सुन्दर डिज़ाइन काढ़े।

2. 6 रुमालों को काढ़िए और कम से कम 2 स्टिचों का प्रयोग हर रुमाल पर काढ़ने के लिए प्रयोग करें।

xiv) **फ्रैन्च नॉट :** यह कढ़ाई किए हुए कपड़े पर उभरी हुई गाँठ की तरह दिखती है। फ्रैंच नाट बनाने के लिए कपड़े से सुई को ऊपर लाएं। सुई के चारों ओर धागे को दो या तीन बार लपेटें। धागे को दृढ़ता से पकड़ते हुए, सुई को कपड़े में जहाँ से इसे ऊपर लाया गया था, उसी के पास वापिस डालें। धागे को पीछे की ओर खींचे और फ्रैंच नाट को पक्का करें। फिर अगली स्टिच के लिए अगले स्थान पर जाएँ। यदि बड़ी गांठे बनानी हों तो धागे को दोहरा कर लें।

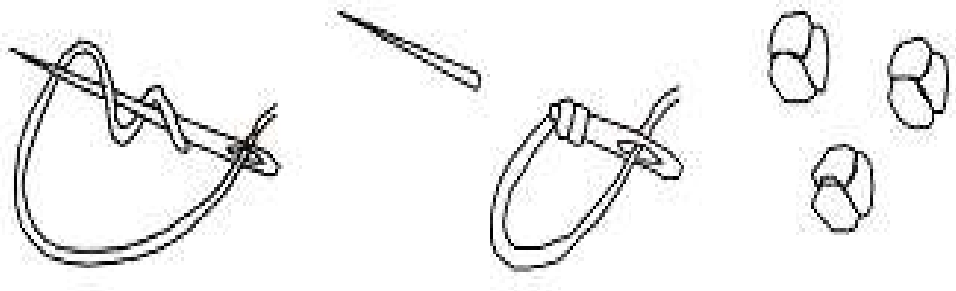

फ्रैंच नाट 'क' फ्रैंच नाट 'ख' फ्रैंच नाट 'ग'

चित्र 3.22

xv) **काउचिंग –** इसमें कपड़े पर रखे हुए धागे पर कढ़ाई की जाती है। इस स्टिच को बनाने के लिए डिज़ाइन की रेखा पर कपड़े के ऊपर एक मोटा धागा रखा जाता है। उसी रंग से या विपरीत रंग से बराबर अंतराल पर छोटे–छोटे स्टिचों के सहयोग से मोटे धागे को कपड़े से जोड़ दिया जाता है। ये छोटे टाँके कपड़े के ऊपर रखे हुए मोटे धागे को दृढ़ता से डिज़ाइन का आकार बनाने में सहायक होते है। काउचिंग पास–पास या दूरी पर किया जा सकता है। काउचिंग का प्रयोग, छोटे से क्षेत्र में विशेष प्रभाव दिखाने के लिए होता है।

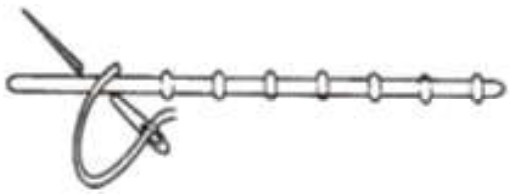

कांउचिंग स्टिच

चित्र 3.23

टिप्पणी

xvi) **बुलियन स्टिच :** कढ़ाई में फूल और पत्तियों को उभरा हुआ दिखाने के लिए इस स्टिच का प्रयोग होता है। इस स्टिच को बनाने के लिए जिस आकार का बुलियन स्टिच चाहिए, उस आकार का बैकस्टिच लीजिए और सुई को खींचिए मत। धागे को सुई के चारों ओर उतनी बार लपेटिए, जब तक बैक स्टिच की जगह के बराबर न हो जाए। लपेटी हुई सुई और कपड़े को बाँए हाथ के अंगूठे और अंगुली से कस कर पकड़िए और धीरे से सुई को खींच लीजिए, और धागे को ऊपर की ओर लाइए। स्टिच की दिशा बदल कर सुई विपरीत दिशा में ले जाइए। स्टिच के अंत के सिरे पर सुई को नीचे डालिए। सुनिश्चित कीजिए की बुलियन स्टिच कपड़े पर पूरी तरह लेट जाए। हमेशा छोटे छेद वाली सुई का प्रयोग करें जिससे लपेटे हुए धागे से धागा निकालना आसान हो। सुई की पूरी लम्बाई में एक–सी मोटाई होनी चाहिये।

बुलियन नाट स्टिच 'क'

बुलियन नाट स्टिच 'ख'

बुलियन नाट स्टिच 'ग'

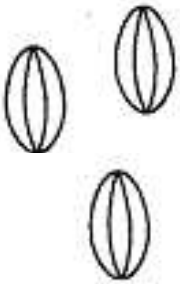

बुलियन नाट स्टिच 'घ'

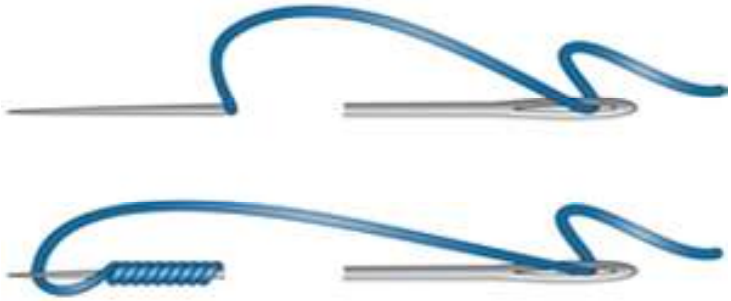

चित्र 3.24

टिप्पणी

क्रियाकलाप 3.3

सूती कपड़े के 14 टुकड़े 5 इंच × 5 इंच के आकार के लें। 14 कशीदा की स्टिचों को इन कपड़ों पर काढ़िए और अपनी प्रयोगात्मक पुस्तिका में चिपकाइए। कढ़ाई के नमूनों पर टाँको के नाम सही ढ़ंग से अंकित कीजिए।

आपने क्या सीखा

औजार व सामग्री

- सुई
- कैंची
- अंगुस्ताना
- फ्रेम
- डिज़ाइन
- धागे
- कपड़ा

मूलभूत टाँके

- रनिंग स्टिच
- बैक स्टिच
- स्टेम स्टिच
- साटिन स्टिच
- लौंग एण्ड शॉर्ट स्टिच
- चेन स्टिच
- डार्निंग स्टिच
- हेरिंग बोन स्टिच
- बटन होल स्टिच

टिप्पणी

- ब्लैंकट स्टिच
- फैदर स्टिच
- क्रास स्टिच
- फ्रैन्च नॉट स्टिच
- काउचिंग
- बुलियन स्टिच

पाठान्त प्रश्न

कोई एक असमानता बताइए :

i. बटन होल स्टिच और ब्लैंकट स्टिच

ii. फ्रैंच नॉट और बुलियन नॉट

iii. बैक स्टिच और स्टेम स्टिच

iv. साटिन स्टिच और लौंग एण्ड शॉर्ट स्टिच

v. चेन स्टिच और फैदर स्टिच

पाठगत प्रश्नों उतर

3.1

i) - (ङ)

ii) - (च)

iii) - (छ)

vi) - (ख)

v) - (घ)

vi) - (क)

vii) - (ग)

टिप्पणी

3.2

1. रेखाएं
2. भराई
3. भरना
4. किनारे बनाना
5. काज बनाना

4

बंगाल की कांथा

पश्चिम बंगाल कांथा कढ़ाई के लिये मशहूर है। यह एक पुरानी व पांरपरिक लोककला है। बंगाल की अधिकतर महिलाएं इस कढ़ाई को करती हैं। इस कढ़ाई की विशेषता है कि पुरानी साड़ी व धोती को तह बना कर उस पर कढ़ाई कर उसे सुन्दर रूप दिया जाता है। नवजात शिशु को पुराने कपड़ो में लपेटने की प्रथा ने इस कला को जन्म दिया। पश्चिम बंगाल में कांथा कढ़ाई के मुख्य केन्द्र हैः हुगली, जैसोर, फरीदपुर आदि। कांथा की हर एक वस्तु विशिष्ट होती है। कोई भी दो वस्तु एक समान नहीं दिखती, क्योंकि इसको बनाने वाली महिलाओं की कल्पना भिन्न होती है। इस पाठ में हम, बंगाल में की जाने वाली कढ़ाई के बारे में विस्तार से जानेगें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप :

- कांथा में प्रयोग किये जाने वाले रंगों की पहचान कर पाएंगें;
- कांथा में अपनाए जाने वाले डिज़ाइन को सूचीबद्ध कर सकेंगे;
- कांथा में प्रयोग किये जाने वाले टाँके बना पाएंगे;
- कांथा कढ़ाई से बने उत्पादों की सूची बना सकेंगे; तथा
- सुजनी और कांथा में अंतर स्पष्ट कर पाएंगे।

टिप्पणी

4.1 रंग

इस कढ़ाई के लिए आमतौर से काला, हरा, गहरा नीला या लाल रंग का प्रयोग होता है। पारंपरिक रूप से कपड़े का रंग सफेद होता है। परन्तु अब हल्के रंगो के कपड़ो का भी प्रयोग होने लगा है।

आपको यह जानकर आष्चर्य होगा कि सफेद धागे का प्रयोग कपड़े पर लहरदार या संरचना प्रभाव को उत्पन्न करने के लिए होता है। इसको पूरे कपड़े पर किया जाता है, जिससे डिज़ाइन पर गति का आभास उत्पन्न होता है।

4.2 डिज़ाइन

कांथा के डिज़ाइन जैसे पहले बताया गया है, दिन–प्रतिदिन से प्रेरित होते है। बंगाल तटवर्ती प्रदेश (समुद्र के समीप) है, अतः मछली और पानी इसके आम डिज़ाइन हैं। लोक कथाएँ, वीर कथाएँ, और धर्म से संबंधित मोटिफ अति लोकप्रिय हैं। पशु–पक्षी जैसे भागता हुआ हिरण, नाचता हुआ मोर, हाथी, घोड़ा आदि प्रयोग किये जाते हैं।

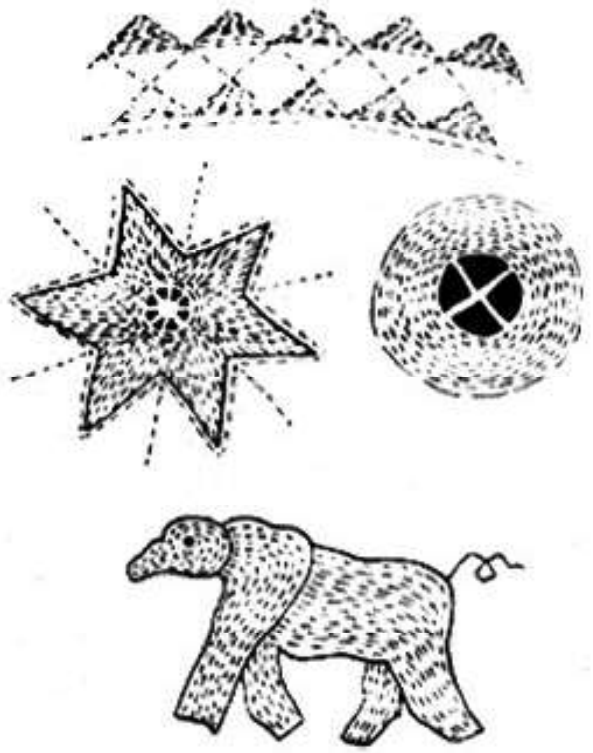

चित्र 4.1

'शतदल पद्म' (सौ पत्तियाँ वाला कमल), कलश, कालका (Paisley) आदि कुछ पारंपरिक डिज़ाइन हैं।

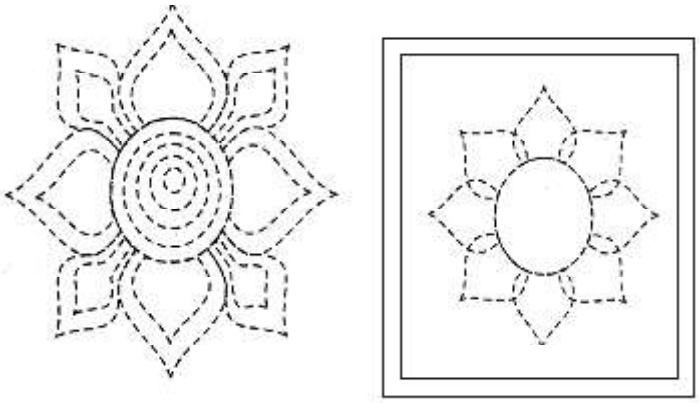

चित्र 4.2

कांथा में डिज़ाइन कपड़े पर ट्रेस नहीं किया जाता है। महिलाएँ आसपास की जिंदगी का निरीक्षण करके कपड़े पर सीधे कढ़ाई के द्वारा डिज़ाइन बनाती हैं।

4.3 टाँके

कांथा की मुख्य स्टिच है – रनिंग स्टिच। स्टेम और साटिन स्टिच का भी कभी– कभार प्रयोग होता है। डिज़ाइन को बनाने के लिए रनिंग स्टिच का प्रयोग नीचे दिये गये चित्रों के अनुसार होता है।

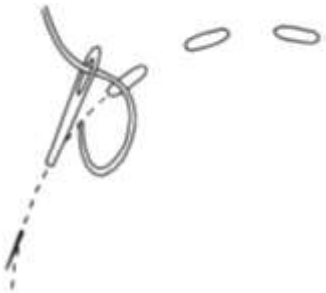

चित्र 4.3

i) **बरखा / चटाई**

छोटी–छोटी रनिंग स्टिच का प्रयोग इस प्रकार होता है, जिससे चटाई का प्रभाव उत्पन्न हो। इसमें छोटे–छोटे टाँको का समूह बनाया जाता है।

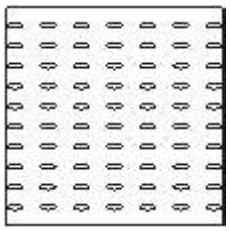

चित्र 4.4

ii) **कांथा फोर (Kantha Phor) :** टाँके एक के बाद एक लगाए जाते हैं। इस विधि का प्रयोग सतह को पूरी तरह से ढक देने के लिए होता है जिससे छोटी–छोटी लहरो का प्रभाव उत्पन्न होता है।

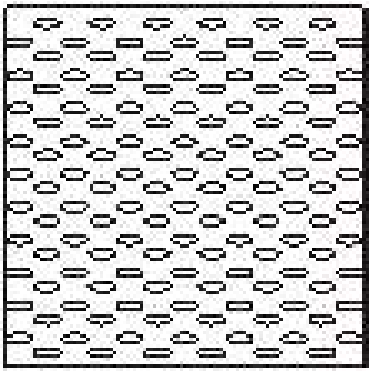

चित्र 4.5

iii) **बसपाथा (Baspatha) :** इस प्रकार के कांथा में रनिंग स्टिच द्वारा घुमावदार रेखा के समान प्रभाव उत्पन्न किया जाता है।

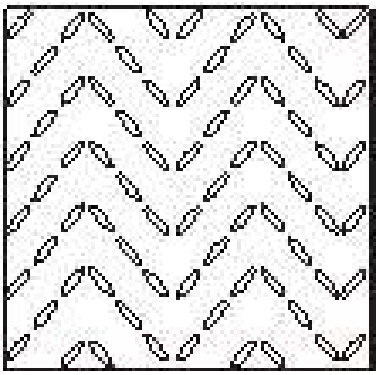

चित्र 4.6

iv) **तिरछी (Tirchi) :** रनिंग स्टिच को विकर्ण पैटर्न (उरेब लाईनों) में बनाया जाता है।

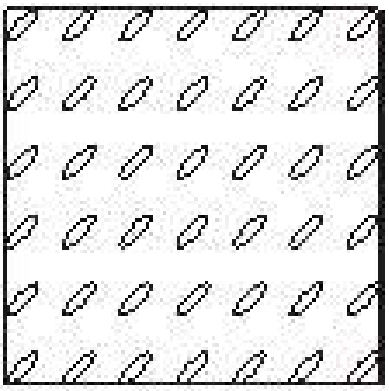

चित्र 4.7

v) **वज़रा (गाज़) :** रनिंग स्टिच का प्रयोग वज्र आकार में गाज़ का प्रभाव उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। यह कुंडलीदार चक्र (सांप जैसा घेरा) में भी बनाया जाता हैं।

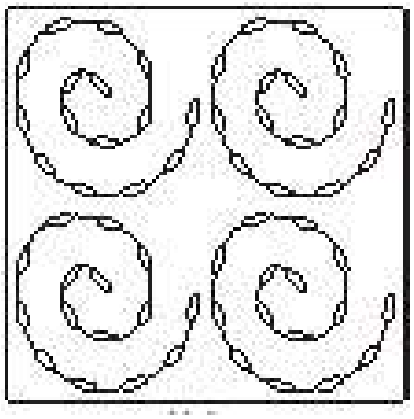

चित्र 4.8

पाठगत प्रश्न 4.1

रिक्त स्थान भरिए :

i) ..... पश्चिम बंगाल की प्रसिद्ध कढ़ाई है।

ii) कांथा के डिज़ाइन ..... से प्रेरित होती है।

iii) ..... कांथा की मुख्य स्टिच है।

iv) कमल के सौ पत्तों को ..... कहते हैं।

क्रियाकलाप 4.1

सूती कपड़े के 5 इंच x 5 इंच के पांच सैंपल लेकर इन पर 5 टाँको की सहायता से कांथा कढ़ाई करें। तैयार सैंपल को अपनी प्रयोग पुस्तिका में चिपकाइए।

4.4 कपड़ा

कांथा का मूल कपड़ा सूती होता है, और इसे तैयार करने के लिए पुरानी धोती/साड़ी की तहों को हाथ से जोड़ा जाता है। बंगाली महिलाएँ अधिकतर सफेद साड़ी पहनती हैं, इसलिए कांथा अधिकतर सफेद रंग के कपड़े पर किया जाता है। परन्तु व्यापारीकरण के कारण अब पुराने कपड़े का प्रयोग नहीं होता है। कांथा अब अधिकतर नई सूती साड़ी या टस्सर रेशमी साड़ी पर किया जाता है।

4.5 धागा

कांथा के लिए पहले पुरानी धोतियों में से धागा खींच कर प्रयोग किया जाता था। यह धागा या तो सफ़ेद रंग का होता था या बार्डर और पल्लू से रंगीन धागा निकालकर प्रयोग होता था। यह धागा हमेशा सूती ही

होता था। परन्तु आजकल बाज़ार में उपलब्ध सूती धागों का प्रयोग होता है (जैसे एंकर धागे) और कभी–कभार टस्सर के रेशमी धागे का भी प्रयोग होता है।

4.6 उत्पाद

उत्पादों के आधार पर कांथा विभिन्न प्रकार की होती है। कांथा कढ़ाई से बने कुछ उत्पाद हैं – किताबों को ढकने के लिए कपड़ा, बटुआ, तकिया गिलाफ, सूट, चादरें, दुपट्टा, साड़ी आदि।

चित्र 4.9

4.7 बिहार की सुजनी

बिहार में भी औरतें कांथा के समान ही कम्बल काढ़ती हैं। इन कम्बलों को बिहार की सुजनी कहते हैं। कांथा की तरह ही, इस में भी पुरानी साड़ियों को एक के ऊपर एक रखकर, साथ में सिला जाता है। इस कम्बल को फिर रंगीन धागों से काढ़ा जाता है।

सुजनी कढ़ाई में भी प्रतिदिन के दृष्य, मोटिफ के रूप में प्रयोग होते हैं। जैसे पतंग उड़ाते हुए बच्चे, दुल्हन और उसकी पालकी, फल पर चोंच मारता हुआ पक्षी, आदि। कुछ धार्मिक दृष्यों जैसे गोपियों के साथ कृष्ण भगवान के डिज़ाइन भी काढ़े जाते है।

क्रियाकलाप 4.2

10 इंच x 6 इंच का टेबल मैट पर कोई भी दो टाँको का प्रयोग करते हुए कांथा का डिज़ाइन बनाएँ।

आपने क्या सीखा

- **कांथा में प्रयोग किये जाने वाले :**
  - रंग

टिप्पणी

- ♦ डिज़ाइन
- ♦ टाँके

- टाँके
  - ♦ रनिंग स्टिच
  - ♦ स्टेम स्टिच
  - ♦ साटिन स्टिच
  - ♦ बरखा/चटाई
  - ♦ कांथा फोर
  - ♦ बसपाथा
  - ♦ तिरछी
- वज़रा
- कांथा में आम तौर पर प्रयोग किए जाने वाले कपड़े
- कांथा कढ़ाई में प्रयुक्त धागे
- कांथा कढ़ाई द्वारा बनाए गए उत्पादः
  - ♦ सूट
  - ♦ चादर
  - ♦ दुपट्टा
  - ♦ बटुआ
  - ♦ तकिया गिलाफ
- सुजनी और कांथा में अंतर

टिप्पणी

पाठान्त प्रश्न

नीचे दिये शब्दों को एक वाक्य में समझाइए –

1. चटाई
2. कांथा फोर
3. बसपाथा
4. तिरछी
5. सुजनी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1

i) कांथा

ii) दिन प्रतिदिन

iii) रनिंग स्टिच

iv) शतदल पद्म

5

कर्नाटक की कसूती

कूसती कर्नाटक की प्रसिद्ध कढ़ाई है। 17वीं और 18वीं शताब्दी में महिलाओं द्वारा कढ़ाई की जाती थी। डिज़ाइन के लियें इमारतें प्रेरणा की स्रोत है। कसूती उत्पादित करने वाले मुख्य क्षेत्र है – धारवड़, बीजापुर, बेलगाम आदि। इन कढ़ाई द्वारा बनाई गई वस्तुएँ अब व्यापारिक रूप से सराही जाने लगी है। इस पाठ में हम कर्नाटक में की जाने वाले कढ़ाई के बारे में विस्तार से जानेगें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप :

- कसूती में प्रयोग किये जाने वाले रंगों की पहचान कर पांएगें;
- कसूती में अपनाए जाने वाले डिज़ाइन को सूचीबद्ध कर सकेगें;
- कसूती में प्रयोग किये जाने वाले टाँके बना पांएगें; तथा
- कसूती कढ़ाई से बने उत्पादों की सूची बना सकेंगे।

5.1 रंग

कसूती में प्रायः प्रयोग होने वाले रंग होते हैं लाल, नारंगी, बैंगनी, हरा, पीला और नीला। काली सतह पर सफेद रंग का प्रयोग होता है। आमतौर से इस्तेमाल होने वाले संयोजित रंग हैं लाल–हरा, लाल–नीला, लाल–पीला, नीला–नारंगी, आदि। चमकदार रंगों का प्रयोग विरोधी रंग प्रणाली में किया जाता हैं, जिससे डिज़ाइन स्पष्ट और साफ दिखे।

टिप्पणी

5.2 डिज़ाइन

कसूती के डिज़ाइन बहुत ही रुचिकर होते हैं। कसूती के डिज़ाइनों का क्षेत्र संरचनात्मक और पौराणिक से लेकर उस इलाके के खूबसूरत फूल–पत्तियों और पशु–पक्षियों तक विस्तृत है। संरचनात्मक कला से प्रेरित गोपुरम, पालकी, और रथ के डिज़ाइन होते हैं। पशु ज़ैसे हाथी, पावन बैल नन्दी, घोड़ा, मोर, तोता, हंस, गिलहरी और हिरण भी प्रयोग होते हैं। कुछ पेड़–पौधों के मोटिफ जैसे कमल, चमेली, अंगूर, आदि भी कसूती में देखने को मिलते हैं।

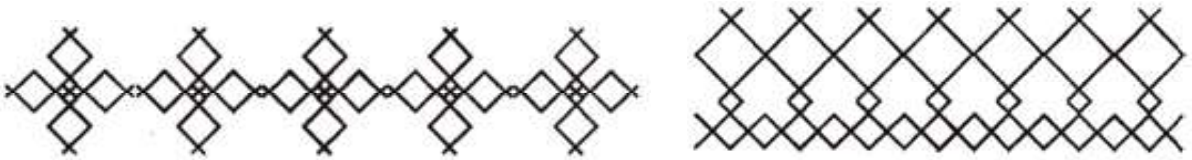

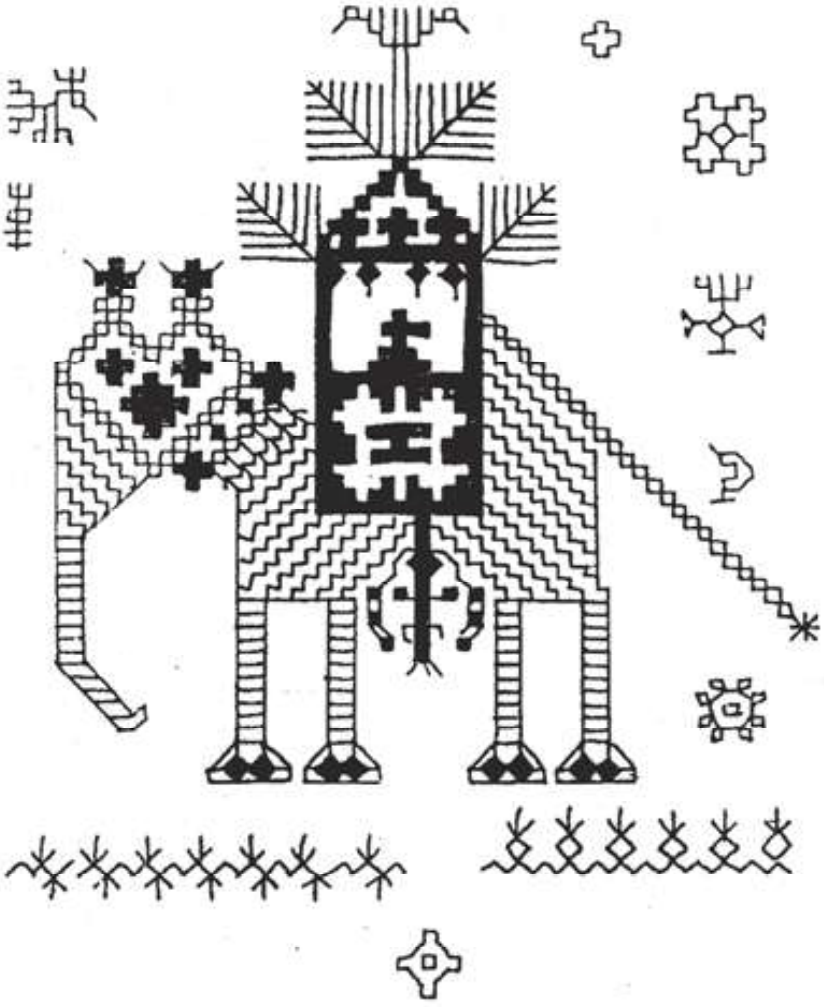

चित्र 5.1

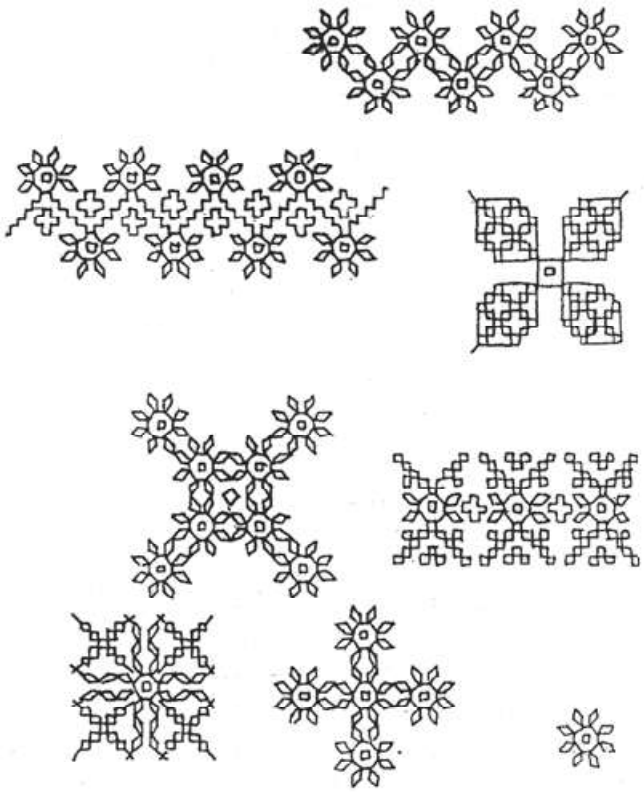

कसूती के मोटिफ

चित्र 5.2

5.3 टाँकें

कसूती कढ़ाई करने की विधि अन्य किसी भी प्रकार की कढ़ाई से भिन्न है। कपड़े पर डिज़ाइन कभी भी ट्रेस नहीं किया जाता है। धागे की संख्या गिन कर टांके लगाए जाते हैं। इस कारण, टाँके हमेशा सीधी रेखा में होते हैं – क्षैतिज, (Horizontal), अनुलम्ब (Vertical) या विकर्ण (Diagonal)। कसूती में रेखाओं के घुमावदार आकार नहीं मिलते हैं। कसूती का आधार बैक स्टिच, डार्निंग स्टिच और क्रॉस स्टिच है।

चित्र 5.3

टिप्पणी

चार मुख्य प्रकार के टाँके कसूती में प्रयोग होते हैं –

i) **गावन्ती –** बैक स्टिच और रनिंग स्टिच का प्रयोग करके गावन्ती बनाई जाती है। यह एक रेखा (पंक्ति) जैसे दिखती है। डिज़ाइन के अनुसार रनिगं स्टिच की एक पंक्ति बनाते हैं। फिर उसी पैटर्न में लौटते समय टाँकों की बीच की जगह को भरा जाता है। गावंती स्टिच से कपड़े के दोनों ओर एक सा डिज़ाइन दिखता है।

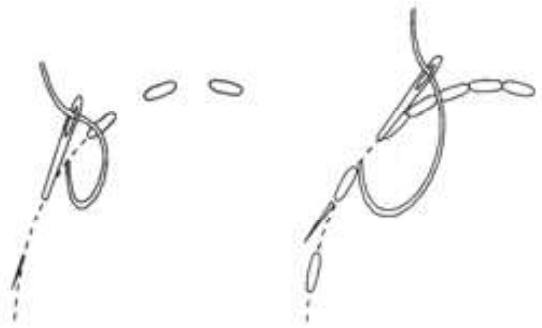

स्टेप I **स्टेप II**

गावन्ती चित्र 5.4

ii) **मुर्गी (Murgi) –** इस स्टिच को भी गावन्ती के समान ही बनाया जाता है। परंतु मुर्गी में रनिंग स्टिच आड़ी–तिरछी ढंग से बनायी जाती है। इससे सीढ़ी का-सा प्रभाव दिखता है। पहले क्षैतिज स्टेप बनाए जाते हैं, फिर दूसरी कतार को करते वक्त रनिंग स्टिच द्वारा सीढ़ीनुमा पैटर्न पूरा किया जाता है। सीधी तरफ या उलटी तरफ देखने से डिज़ाइन एक समान दिखता है।

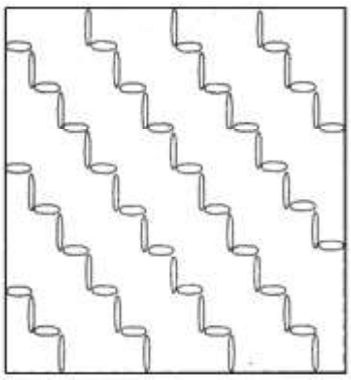

चित्र 5.5

iii) **नेगी (Negi) –** नेगी स्टिच से बुना हुआ डिज़ाइन स्पष्ट रूप से दिखता है। असल में यह डार्निंग स्टिच है। स्टिच की लम्बाई को बदलकर, डिज़ाइन को बनाया जाता है। नेगी स्टिच कपड़े के दोनों ओर एक समान नहीं होती। इस स्टिच को धागा गिनकर बनाया जाता है।

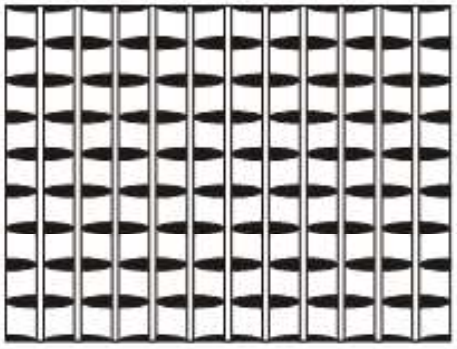

चित्र 5.6

iv) **मेंथी (Menthi) –** मेंथी असल में क्रॉस स्टिच ही है। कभी–कभार क्रॉस को बढ़ाकर तारा जैसा बना दिया जाता हैं। नेगी के समान, मेंथी टाँका भी दोनो ओर एक समान नहीं होता।

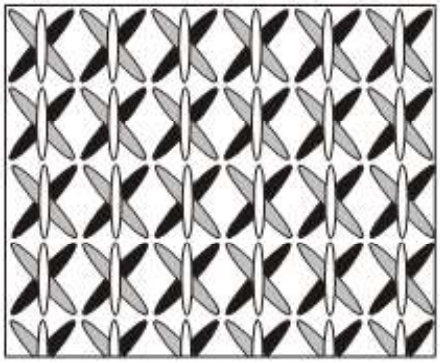

चित्र 5.7

क्रियाकलाप 5.1

5 इंच × 5 इंच आकार के 4 सूती कपड़े के टुकड़े लीजिए। चारों टुकड़ों पर चार अलग अलग कसूती के टाँको का प्रयोग करते हुये एक नमूना काढ़िए। अपनी प्रयोगात्मक पुस्तिका में चिपकाइए।

5.4 कपड़ा

केसमेन्ट या मैटी का कपड़ा कसूती काढ़ने के लिए प्रयोग किया जाता है। इस कपड़े को 'दोसूती' भी कहते हैं। इसमें धागे को गिनना आसान होता है। इस कढ़ाई को कैन्वस पर भी किया जाता है।

5.5 धागा

पहले कसूती के लिए सिर्फ रेशमी धागा प्रयोग होता था। यह इलकल साड़ी के पल्लू से खींचे गए धागे होते थे। परन्तु अब पक्के रंग के सूती धागों का भी प्रयोग होता है। आमतौर से महीन डिज़ाइन के लिए एक धागा ही प्रयोग होता है। मोटिफ, कपड़ा और स्टिच के अनुसार अधिक धागों का भी प्रयोग कर सकते हैं।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 5.1

रिक्त स्थान भरें:

1. ..... रनिंग और बैक स्टिच द्वारा बनाई जाती है।
2. मैटी या ..... कपड़ा कसूती काढ़ने के लिये प्रयोग किया जाता है।
3. ..... स्टिच से बना हुआ डिज़ाइन स्पष्ट रूप से दिखता है।
4. ..... असल में क्रॉस स्टिच है।
5. आड़ी तिरछी रनिंग स्टिच को ..... कहते है।

5.6 उत्पाद

उपयोगिता के अनुसार कसूती कई प्रकार से प्रयोग होती है। धार्मिक उत्सवों पर कसूती कढ़ाई की साड़ी पहनी जाती है। ये शुभ उपहार वस्तु के रूप में भी प्रयोग होती हैं।

चित्र 5.8

कसूती की कढ़ाई विशेष रेशमी साड़ी जिसे हम 'इलकल साड़ी' कहते हैं, पर की जाती है। यह कर्नाटक की साड़ी है और इसमें चौड़ा पल्लू और साधारण किनारा होता है। पल्लू पर छोटे–छोटे कसूती के मोटिफ काढ़े जाते हैं और कभी–कभी किनारों पर भी काढ़े जाते है। जिससे साड़ी रंग–बिरंगी और सुंदर लगे। व्यापारीकरण के कारण कसूती अब घरेलू लिनेन जैसे चादरें, सोफा कवर और कुशन कवर पर भी की जाती है। रेशमी साड़ी, सलवार कुर्ता, टोपी आदि कसूती कढ़ाई के मुख्य उत्पाद है।

कसूती कढ़ाई के कुछ विशेष वस्तु हैं : –

i) टोपे–टेनी (Tope-Teni)

ii) रावके (Ravke)

iii) कंचगी कुलाय (Kunchagi Kulai)

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

- कसूती प्रयोग किये जाने वाले
  - ♦ रंग
  - ♦ डिज़ाइन
  - ♦ टाँके
    - ○ रनिंग स्टिच
    - ○ बैक स्टिच
    - ○ डार्निंग स्टिच
    - ○ क्रॉस स्टिच
    - ○ गावन्ती
    - ○ मुर्गी
    - ○ नेगी
    - ○ मेंथी
  - ♦ कपड़ा
  - ♦ धागा
  - ♦ कसूती कढ़ाई द्वारा बनाए गए उत्पादः
    - ○ टोपी टेनी
    - ○ रावके
    - ○ इलकल साड़ी
    - ○ सलवार सूट
    - ○ टोपी, कुर्ता

पाठान्त प्रश्न

1. कसूती में प्रयोग किये जाने वाले मोटिफ की सूची बनाएं।

टिप्पणी

2. कसूती कढ़ाई द्वारा बनाए गए उत्पादों की सूची बनाएं।
3. कसूती में आमतौर पर कौन–कौन से रंग प्रयोग होते हैं।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1

1. गावन्ती
2. केसमैन्ट
3. नेगी
4. मेन्थी
5. मुर्गी

टिप्पणी

6

पंजाब की फुलकारी

फुलकारी पंजाब की बहुत पुरानी कला है। फुलकारी शब्द, दो शब्दों से बना है, फुल यानि कि फूल और कारी का अर्थ होता है काम। यह हाथ की विशेष कढ़ाई है जो पूर्वी पंजाब में मुख्यतः की जाती थी। आजकल फुल्कारी कढ़ाई के मुख्य केन्द्र हिसार, गुड़गाँव, करनाल, रोहतक आदि हैं। इसे 'बाग' के नाम से भी जाना जाता हैं। इसका अर्थ उपवन है। यह कढ़ाई मुख्यरूप से महिलाओं द्वारा की जाती रही है। इस पाठ में हम पंजाब की कढ़ाई के बारे में जानेगें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप :

- फुलकारी में प्रयोग किये जाने वाले रंगों की पहचान कर पांएगे;
- फुलकारी में अपनाए जाने वाले डिज़ाइन को सूचीबद्ध कर सकेगें;
- फुलकारी में प्रयोग किये जाने वाले टाँके बना पांएगें;
- फुलकारी कढ़ाई से बने उत्पादों की सूची बना सकेगे।

6.1 रंग

इस कढ़ाई में चमकदार रंगों का प्रयोग होता है, जैसे लाल, नारंगी, हरा, सुनहरा, पीला, सफेद और गहरा नीला। फुलकारी जिस कपड़े पर की जाती है उसका रंग भी लाल, नारंगी, भूरा और कभी–कभी सफ़ेद या नीला भी होता है।

टिप्पणी

6.2 डिज़ाइन

फुलकारी के डिज़ाइन उन वस्तुओं से प्रभावित हैं जो दिन–प्रतिदिन प्रयोग में आती हैं। कई प्रकार के फूलों (कमल, सूरजमुखी), फलों (संतरा, नाशपाती, आम), सब्जियों (बैंगन, मिर्ची, फूलगोभी) को मोटिफ के रूप में प्रयोग किया जाता है। पशु भी काढ़े जाते हैं। फुलकारी में गाय, भैंस, बिल्ली, खरगोश, चूहा, घोड़ा, हाथी और पक्षी जैसे कबूतर, कौवा और मैना देखने को मिलते हैं। यहाँ तक कि घरेलू वस्तुएँ जैसे बर्तन और घरेलू कार्य चीज़ें जैसे दही मथने को डिज़ाइन के रूप में दिखाया जाता हैं। आधारभूत ज्यामितीय आकृतियाँ जैसे त्रिभुज, चौकोर, आयत और रेखाओं का प्रयोग साथ–साथ में करके नमूने बनाए जाते हैं। बाग में ज्यामितीय डिज़ाइन से कपड़े की सतह को पूरी तरह से भर कर काढ़ा जाता है। हर अवसर के लिए विशेष बाग बनाए जाते हैं।

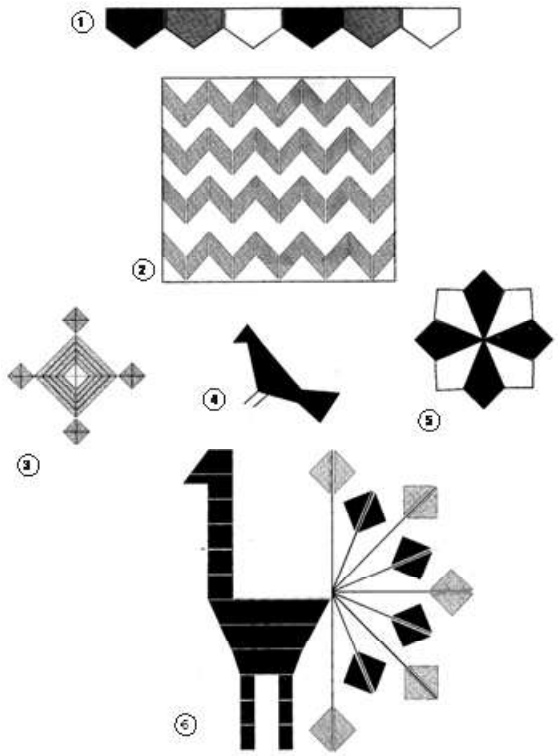

चित्र 6.1

6.3 टांके

डार्निंग स्टिच फुलकारी में प्रयोग होने वाली मुख्य स्टिच है। कपड़े पर डिज़ाइन ट्रेस ना करके सीधी कढ़ाई की जाती है। सावधानी से ताना (धागा जो किनारे के समानान्तर है) और बाना (धागा जो किनारे के लम्ब में) को गिनकर डिज़ाइन बनाया जाता है। कढ़ाई को कपड़े के उलटी ओर से करते हैं। हर स्टिच की लम्बाई लगभग 1/2 इंच से 1/4 इंच तक होती है। कुछ और कढ़ाई के टाँके जैसे स्टेम, चेन, हेरिंगबोन, बटनहोल और साटिन स्टिच का भी कभी–कभी प्रयोग होता है।

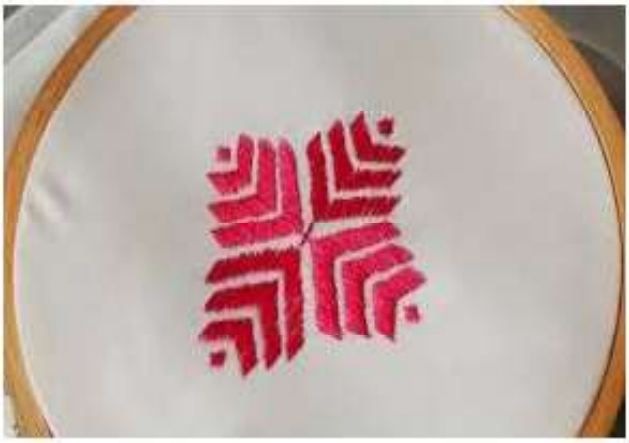

चित्र 6.2

6.4 कपड़ा

फुलकारी मुख्य रूप से खद्दर पर काढ़ी जाती है। खद्दर महीन या मोटा हो सकता है। ये स्थानीय लोकप्रिय कपड़ा है जो टिकाऊ और आसानी से उपलब्ध हो जाता हैं।

6.5 धागा

फुलकारी का एक बहुत ही महत्वपूर्ण पहलु है इसका 'धागा', यह बहुत ही मुलायम व चमकदार होता है। इसे 'पट' कहते हैं।

'पट' बिना ऐंठन वाला रेशमी धागा है, इसे सिल्क फ्लॉस(Floss) भी कहते हैं। यह बहुत ही मुलायम और चमकदार होता है। उत्तम गुण वाला पट चीन से आता है जो बहुत ही मूल्यवान होता है। कश्मीर में स्थानीय रूप से उपलब्ध पट का भी इस्तेमाल यहाँ पर होता हैं। इस कढ़ाई के लिए सूती और ऊनी धागों का भी प्रयोग किया जाता है।

क्रियाकलाप 6.1

सूती कपडें का 5 इंच × 5 इंच आकार का टुकड़ा लीजिए। इस पर फुलकारी से एक नमूना बनाइए और अपनी प्रयोगात्मक पुस्तिका में चिपकाइए।

6.6 उत्पाद

फुलकारी कढ़ाई से काढ़ी हुई वस्तुओं को मुख्य रूप से महिलाएँ शाल या लपेटने के काम लाती हैं। फुलकारी शाल का आकार अधिकतर 2½ मी.लम्बा और (11/4) सवा मी. चौड़ा होता है। फुलकारी का प्रयोग सूट, साड़ी, थैले, पर्स, चादर, मेजपोश, कुशन कवर आदि के लिये होता है। 'बाग' फुलकारी के सब से ज्यादा प्रचलित उत्पादों में से एक है।

चित्र 6.3

बाग के कुछ प्रकार है :

i) **घूँघट बाग (Ghunghat Bagh)**

ii) **वरी दा बाग (Varida Bagh)**

iii) **बावन बाग**

व्यापारीकरण के कारण, फुलकारी में कई प्रकार की विविधता भी पायी जाती है चाहे वह कपड़े का रंग हो या धागे या टाँके का।

पाठगत प्रश्न 6.1

रिक्त स्थान भरो :

i) पश्चिम पंजाब में फुलकारी, ... के नाम से प्रसिद्ध है।

ii) फुलकारी का मुख्य टाँका है .....।

iii) ..... धागे का प्रयोग फुलकारी कढ़ाई में होता है।

iv) फुलकारी ..... के कपड़े पर काढ़ी जाती हैं।

टिप्पणी

क्रियाकलाप 6.2

12 इंच × 12 इंच आकार का छोटे कुशन कवर पर फुलकारी की कढ़ाई कीजिए।

आपने क्या सीखा

- फुलकारी में प्रयोग किये जाने वाले
  - रंग
  - डिज़ाइन
  - टाँके
    - डार्निंग स्टिच
    - स्टेम स्टिच
    - चेन स्टिच
    - हेरिंगबोन स्टिच
    - बटन होल स्टिच
    - साटिन स्टिच
  - कपड़ा
  - धागा
- फुलकारी कढ़ाई द्वारा बनाए गए उत्पादः
  - शॉल
  - सलवार
  - साड़ी
  - थैले
  - पर्स
  - चादर
  - मेजपोश
  - कुशन कवर
- बाग

- घूँघट बाग
- वरी दा बाग
- बावन बाग

पाठान्त प्रश्न

निम्नलिखित के उत्तर दें –

i) फुलकारी कढ़ाई के प्रमुख केन्द्र कौन से हैं।

ii) फुलकारी में प्रयोग होने वाले डिज़ाइन के बारे में संक्षेप में लिखें।

iii) फुलकारी के विभिन्न बागों के नाम लिखें।

iv) फुलकारी में मुख्यतः कौन से धागे प्रयोग किये जाते हैं।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1

1. बाग
2. डार्निंग स्टिच
3. पट
4. खद्दर

7

जम्मू कश्मीर की कशीदा, ज़रदोज़ी व ज़लकदोज़ी

कशीदाकारी के लिए आम शब्द 'कशीदा' प्रयोग होता है। भारत का जम्मू और कश्मीर अपनी 'कशीदा' नाम की कढ़ाई के लिए जाना जाता है। मूलतः कशीदा एक कुटीर उद्योग है, जिसमें लगभग सारे परिवार जन शामिल होते हैं। जम्मू और कश्मीर कशीदाकारी के अलावा दो और पारम्परिक कढ़ाई – ज़रदोज़ी और ज़लकदोज़ी के लिए भी बहुत प्रसिद्ध है।

इस पाठ में हम जम्मू –कश्मीर की कढ़ाई के बारे में जानेगें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आपः

- कशीदाकारी, ज़रदोज़ी और ज़लकदोज़ी में प्रयोग किये जाने वाले रंगों की पहचान कर पांएगे;
- कशीदाकारी, ज़रदोज़ी और ज़लकदोज़ी में अपनाए जाने वाले डिज़ाइन को सूचीबद्ध कर सकेगें;
- कशीदाकारी, ज़रदोज़ी और ज़लकदोज़ी में प्रयोग किये जाने वाले टाँके बना पांएगें;
- कशीदाकारी, ज़रदोज़ी और ज़लकदोज़ी से बने उत्पादों की सूची बना सकेगें।

7.1 रंग

कश्मीर के कारीगरों में रंगों की समझ बहुत ही उत्तम होती है। उनकी रंगों की और रंग संयोजन की अपनी पसंद होती है। हलके व गाढ़े रंग, सभी रंगों का प्रयोग कशीदाकरी में होता है। क्रिमसन लाल, स्कार्लेट

लाल, नीला, पीला, बैंगनी, काला और भूरा रंग आमतौर से प्रयोग होते हैं। कपड़े की सतह आमतौर से सफेद या क्रीम होती है। परन्तु अधिक माँग के कारण कुछ गाढ़े रंग के कपड़ों का भी प्रयोग होने लगा है।

7.2 डिज़ाइन

प्रदेश की चारों ओर की प्राकृतिक सुंदरता देखकर आप आसानी से अंदाज़ लगा सकते हैं कि कशीदा के लिए किस प्रकार के डिज़ाइन प्रयोग होते होगें। आमतौर से प्रयोग में आने वाले डिज़ाइन हैं फूल जैसे लिली, लोटस, ट्यूलिप, केसर, आइरिस, फल जैसे सेब, अंगूर, बादाम, चेरी, प्लम और पक्षी जैसे चिड़िया तोता, कैनरी आदि। चिनार पत्ता और साइपरस का पेड़ लोकप्रिय मोटिफ में से एक हैं।

चित्र 7.1

हालांकि त्रिकोण के आकार का आम का मोटिफ जिसे 'कालका' या 'बादामी बूटा' या 'बूटा' कहते हैं, बहुत ही लोकप्रिय मोटिफ है। कशीदा में यह प्राकृतिक, ज्यामितीय और स्टाइलाइज्ड रूप में मिलता है। शॉल पर कशीदाकारी विभिन्न भागों पर की जाती है। जैसे किनारा, कोना, बीच में, इधर–उधर या पूरे शॉल पर।

चित्र 7.2

टिप्पणी

7.3 टाँके

कशीदा तकनीक की शुरुआत डार्निंग स्टिच से हुई जो रफुगरों द्वारा शॉल को फिनिश करने के लिए प्रयोग में लायी जाती थी। साटिन, स्टेम, लौंग एण्ड शार्ट, चेन और हैरिंगबोन आदि भी आमतौर से प्रयोग की जाती हैं।

कशीदाकारी के लिए प्रायः निम्न 5 टाँकों का प्रयोग होता है –

i) **रफूगरी –** यह डार्निंग स्टिच द्वारा की गई कशीदाकारी का स्थानीय नाम है। शॉल पर बनी हुई डिज़ाइन का आभास इसी स्टिच के कारण होता है।

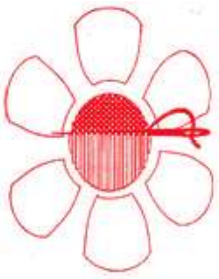

चित्र 7.3

ii) **वाटा चिकन (Vata Chikan) –** बटन होल स्टिच द्वारा कढ़ाई की गई कशीदाकारी को वाटा चिकन कशीदा कहते हैं।

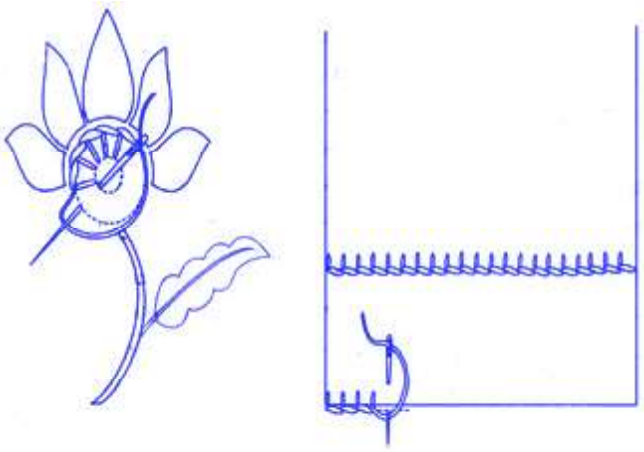

वाटा चिकन चित्र 7.4

iii) **सोज़नी (Sozni) –** इस विधि में पहले साटिन स्टिच से मोटिफ को भरा जाता है, बाद में मोटिफ की किनारी पर चेन स्टिच या स्टेम स्टिच करके उसे उभार दिया जाता है। इस विधि को आमतौर से सोज़नी कहते हैं।

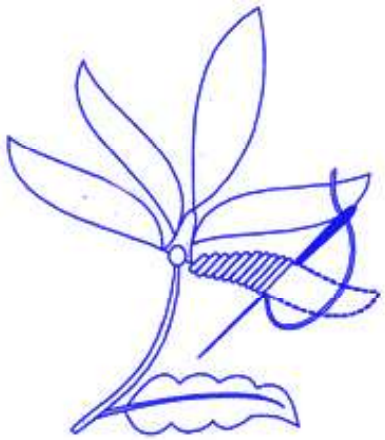

चित्र 7.5

iv) **तलैबार (Talaibar)** – सुनहरी धातु के धागे के प्रयोग से कशीदाकारी को अधिक आकर्षक बनाया जाता है। डिज़ाइन में लौंग एण्ड शार्ट स्टिच के द्वारा रंगों को बहुत अच्छी तरह से मिलाया जाता है।

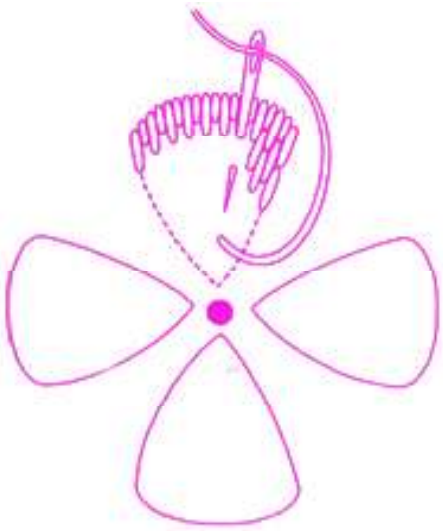

तलैबार चित्र 7.6

क्रियाकलाप 7.1

5 इंच × 5 इंच आकार के सूती कपड़े के चार सैंपल लीजिए। चार टाँकों का नमूना इन चार सैंपल पर बनाइए और अपनी प्रयोगात्मक पुस्तिका में चिपकाए।

टिप्पणी

7.4 कपड़ा

कपड़ा, जिस पर कशीदा की जाती है, भिन्न प्रकार के ऊनी फैब्रिक होते हैं जैसे पशमीना, शाहतूश, सिल्क, चिनौन और लिनेन आदि। शाहतूश दुनिया में अति उत्तम गुण का ऊनी कपड़ा है। कशीदाकारी के लिए परम्परागत रूप से रेशमी और ऊनी कपड़ों का प्रयोग होता है।

7.5 धागा

पहले मुख्य रूप से उत्तम गुण का ऊनी धागा प्रयोग होता था। धीरे–धीरे इनकी जगह चमकदार, शानदार रेशमी धागों ने ले ली। फिर सस्ते आर्ट सिल्क (रेयान) धागे ने जगह ली। अब चमकदार और अच्छे धुलाई–सहने वाले सूती धागे जैसे 'एंकर' धागे बाज़ार में उपलब्ध हैं। यह धागे पहले स्थानीय रूप से प्राकृतिक डाई में रंगे जाते थे।

7.6 उत्पाद

कश्मीरी कढ़ाई द्वारा बनी वस्तुएं सबसे अधिक माँग में है। कश्मीर में हर प्रकार की शॉल पर कढ़ाई की जाती थी। परन्तु अब यह वस्त्रों पर, साड़ियों, कोट, जैकेट, कुर्ती, मफलर, दुपट्टा, कुशन कवर, चादरें, पर्दे, कम्बल आदि पर भी की जाने लगी है।

शॉल चित्र 7.7

कशीदा की शुरुआत शॉल कशीदाकारी करने से हुई थी। यह महीन कशीदाकारी जैसे जादू करता है, विशेष रूप से लिनेन पर जैसे मेज़पोश, टिकोज़ी, नैपकिन, ट्रे कवर, टेबल मैट आदि।

क्रियाकलाप 7.2

i) एक छोटी वाल हैंगिंग बनाइए (लगभग 10 इंच × 10 इंच) और उसको कशीदाकारी के नमूने से सजाए।

7.7 ज़रदोज़ी (Zaradozi)

आदि काल से आदमी का बहुमूल्य धातु से लगाव रहा है। खूबसूरत ब्रोकेड बनाने के लिए धातु का तार जिसे 'कलाबट्टु' कहते हैं, का प्रयोग होता था। ज़रदोज़ी कशीदाकारी (ज़री) जो धातु के तारों से की जाती है आज के ज़माने की प्रसिद्ध भारतीय कढ़ाई है। धातु तारों से कशीदा भारत के अन्य इलाकों में भी की जाती है, जैसे कि दिल्ली, उत्तरप्रदेश में आगरा और लखनऊ, मध्यप्रदेश में भोपाल, गुज़रात में सूरत और काठियावाड़, महाराष्ट्र में मुम्बई, मद्रास, आँध्रप्रदेश में हैदराबाद और राजस्थान में अज़मेर आदि।

चित्र 7.8

रंग – पारंपरिक रूप से सोने और चाँदी जैसे रंग उपलब्ध होते थे परन्तु कृत्रिम और अनुकृति ज़री के प्रवेश से अब हर रंग की ज़री को पाना मुमकिन है।

टिप्पणी

डिज़ाइन – धातु तारों का प्रयोग मोटिफ को निखारने और कपड़े को अलंकृत करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

टाँके – ज़रदोज़ी में प्रयोग होने वाले मुख्य टाँके हैं, चेन स्टिच, डार्निंग, साटिन, स्टेम और काउचिंग आदि।

पाठगत प्रश्न 7.1

रिक्त स्थान भरो :

i) कशीदा एक कुटीर उद्योग है जो ..... द्वारा किया जाता है।

ii) डार्निंग स्टिच कशीदाकारी, कश्मीर में ..... नाम से जानी जाती है।

iii) धातु की तार को ..... कहते है।

iv) त्रिकोण में आम के मोटिफ को ..... कहते है।

कारचोब और थापा – इस कढ़ाई में विशेष औजार प्रयोग किये जाते है जैसे कि कारचोब जो एक लकड़ी का बना आयताकार फ्रेम है, जो दो तिपाइयों पर सम्भला हुआ होता है और थापा उसकी एक लकड़ी की टाँग है। यह उपकरण रफ्तार और क्षमता को बढाने में मदद करते हैं।

भारी काम को ज़रदोज़ी कहते हैं और हलके काम को कामदानी कहते हैं।

कपड़ा – पहले ज़रदोज़ी का काम महीन भारतीय मलमल पर होता था परन्तु अब रेशम, साटिन और शनील पर भी होता है। जूता, चप्पल, चमड़े से बने साज–सामान आदि पर भी होता है। ज़रदोज़ी भारी कपड़े पर की जाती है जिससे वह कढ़ाई का भार ले सके। कामदानी हलके कपड़े पर की जाती है।

धागा – धातु के तीन धागे प्रकार के होते हैं –

- **शुद्ध सोना**
- **अर्ध फाइन सोना**
- **अनुकृति सोना (Imitation Gold)**

ज़री के अलावा धात्विक धागे, बादला (Badla) (धातु की पतली पट्टी), गिजाई (Gijai) (पतला घुमावदार तार), सितारा (छोटा धातु का टुकड़ा जो तारे से मिलता है) के रूप में भी उपलब्ध होते हैं। सलमा और मोतियों का भी प्रयोग होता है।

उत्पाद – ज़रदोज़ी पहले भारी कोट, कुशन, पर्दे, केनोपी, जूते, पशु की साज–सज्जा के सामान, जैकेट, बटुआ पर ही जाती थी। परन्तु आजकल कपड़ों पर भी कि जाने लगी है। दुलहन के लहँगों पर ज़रदोजी का काम होता है। ज़रदोज़ी की हुई साड़ियाँ और सूट भी आजकल माँग में है।

7.8 ज़लकदोज़ी (Zalakdozi)

क्रोशिया के समान हुक की मदद से की गई चेन स्टिच कढ़ाई को स्थानीय भाषा में ज़लकदोज़ी कहते हैं। यह कशीदाकारी में प्रयोग होने वाली बहुत ही लोकप्रिय स्टिच है। जमीन पर बिछाने वाले नमदा और गब्बा बहुत समय से लोकप्रिय रहे हैं। इन पर जलकदोज़ी ऊन से की जाती है। हालांकि आजकल मेल खाते पर्दे, कुशन कवर और चादरों की भारी माँग है। यहाँ तक ज़लकदोज़ी के थैले भी उपहार के रूप में बहुत लोकप्रिय है।

चित्र 7.9

क्रियाकलाप 7.3

i) 5 इंच × 5 इंच के आकार का सूती कपड़े का टुकड़ा ले और उस पर ज़रदोज़ी के नमूने को काढ़े। इस नमूने को प्रयोगात्मक पुस्तिका में चिपकाइए।

ii) रेज़गारी रखने के लिए बटुआ, जिसका आकार 6 इंच × 4 इंच हो, तैयार कीजिए और फिर उस पर ज़लकदोज़ी का नमूना काढ़े।

आपने क्या सीखा

- कशीदाकारी में प्रयोग किये जाने वाले
  1. रंग
  2. डिज़ाइन
  3. टाँके
     - रफूगरी
     - काटा चिकन

टिप्पणी

- सोजनी
- तलैबार

4. कपड़ा
5. धागा
6. कशीदाकारी कढ़ाई द्वारा बनाए गए उत्पादः
   - शॉल
   - मेजपोश
   - टिकोजी
   - नैपकिन
   - ट्रेकवर
   - सलवार सूट
   - साड़ियाँ
   - कोट
   - मफलर

- ज़रदोज़ी में प्रयोग किये जाने वाले
  1. रंग
  2. डिज़ाइन
  3. टाँके
     - बादला
     - मोती
  4. धागे
     - सोना
     - चाँदी
  5. कपड़ा
- ज़रदोजी कढ़ाई से बनाए गए उत्पाद

- लंहगा
- साड़ी
- कोट
- शॉल

- ज़लकदोज़ी द्वारा बनाए गए उत्पाद
  - नमदा
  - कुशन कवर — हुक द्वारा चेन स्टिच
  - पर्दे

पाठान्त प्रश्न

निम्नलिखित पर संक्षेप में लिखेः

i) कशीदाकारी के लोकप्रिय मोटिफ

ii) जलकदोजी

iii) ज़रदोज़ी के विशेष औज़ार

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1) परिवारजनों

2) रफुगरी

3) कलाबट्टु

4) कालका, बादामी बूटा व बूटा

8

उत्तर प्रदेश की चिकनकारी

चिकनकारी, उत्तर प्रदेश के लखनऊ शहर की प्रसिद्ध कढ़ाई है। चिकनकारी की कला दिल्ली, आगरा, बनारस और कानपुर के इलाकों में भी बहुत ही लोकप्रिय है। चिकनकारी खाड़ी के देशों में भी निर्यात होती है। इस पाठ में हम उत्तर प्रदेश की कढ़ाई के बारे में जानेगें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आपः

- चिकनकारी में प्रयोग किये जाने वाले रंगों की पहचान कर पांएगे;
- चिकनकारी में अपनाए जाने वाले डिज़ाइन को सूचीबद्ध कर सकेगें;
- चिकनकारी में प्रयोग किये जाने वाले टाँके बना पांएगें; तथा
- चिकनकारी से बने उत्पादों की सूची बना सकेगे।

8.1 रंग

चिकनकारी में मुख्य रूप से कढ़ाई करने के लिए सफेद सतह पर सफेद धागे का प्रयोग होता है। परन्तु आजकल लोगों की पसंद के अनुसार दोनों, रंगीन कपड़े और धागे का भी प्रयोग किया जाने लगा है। चिकनकारी उत्पाद बनाने के लिये कई प्रकार के हल्के रंग जैसे नीला, हरा, गुलाबी आदि रंगों का प्रयोग होता है। कभी कभी गहरे और चमकदार रंग जैसे लाल, पीला आदि का भी उपयोग में लाया जाता है।

टिप्पणी

8.2 डिज़ाइन

चिकनकारी में आमतौर से फूलों के डिज़ाइन होते है जैसे आलंकारिक फूल, बेल, फल जैसे आम, अंगूर बादाम, आदि। कभी–कभी पक्षी जैसे मोर और तोता भी काढ़े जाते हैं।

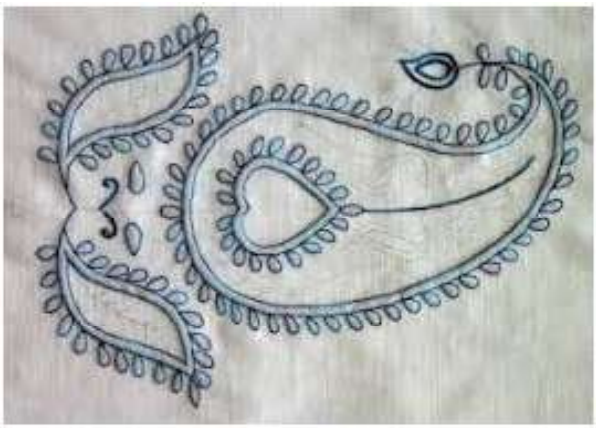

चित्र 8.1

8.3 टाँके

चिकनकारी में टाँकों का बहुत ही रुचिकर संयोजन होता है। इसके दो प्रकार है – सपाट और उभरा हुआ। सपाट विधि में हेरिंगबोन टाँके का प्रयोग होता है। कढ़ाई के उभरे हुए स्टाइल में कुछ विशेष टाँकों का भी इस्तेमाल होता है, जो स्टिच को उभरा हुआ प्रभाव देते हैं, जिससे स्टिच, कपड़े की सतह पर उभरे हुए नज़र आते हैं।

i) **बखिया (Bukhia) –** कपड़े के उलटी ओर हेंरिंगबोन स्टिच की जाती है, जिससे कपड़े के सीधी ओर मोटिफ की रूप–रेखा एक परछाई के रूप में दिखाई देती है। इसे शेडो वर्क (**Shadow work**) भी कहते है। ये एक सपाट विधि है।

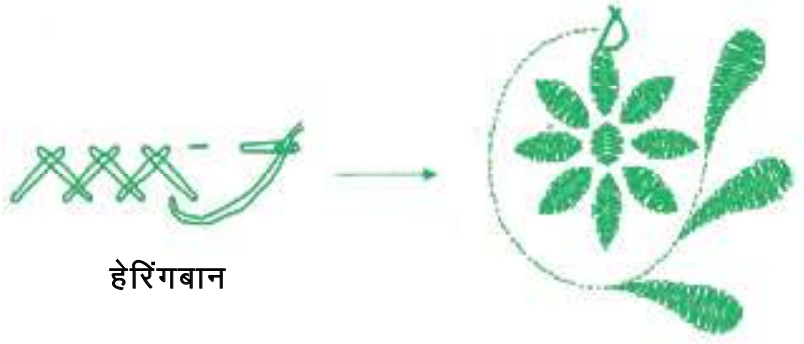

हेरिंगबान

शेडो वर्क

चित्र 8.2

ii) **जाली वर्क (Jali Work) –** जाली वर्क, चिकनकारी की सपाट विधि है। ये खुले हुए जाल या मेश का आभास कराती है। नेट को हिन्दी में जाली कहते हैं। इसे बनाने के लिए जब सुई को कपड़े से निकालते हैं, तो धागे को कस कर खींचते हैं, इससे कपड़े में छेद हो जाता है। जब यह टाँके एक निश्चित तरीके से काढ़े जाते है, तो यह छेद, जाली का आभास कराते हैं।

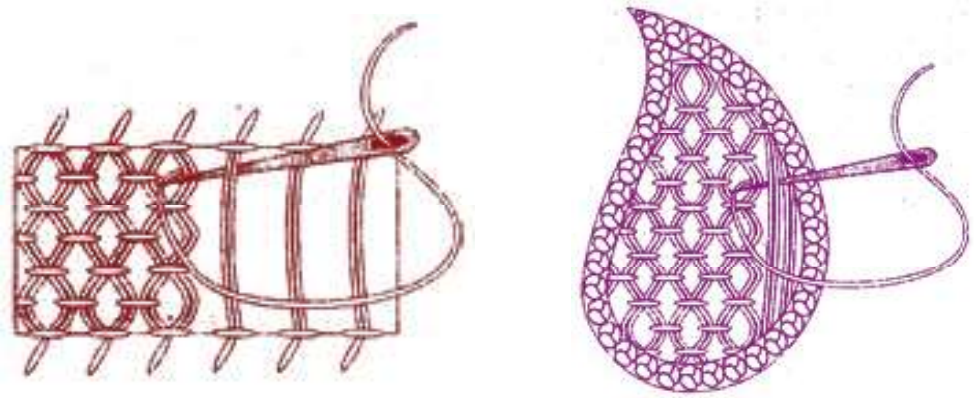

जाली बनाने की क्रिया

पैसली बुटे में जाली कार्य

चित्र 8.3

टिप्पणी

iii) **खतावा या खताऊ** – यह एपलीक वर्क का छोटा रूप है। यह कढ़ाई भी एक सपाट विधि है। जो कपड़ा उत्पाद बनाने के लिए प्रयोग होती है, इसी का प्रयोग एपलीक वर्क के लिए भी किया जाता है। कपड़े को छोटी पत्तियों में काटा जाता है, फिर इसे पीछे की ओर से डार्निंग स्टिच से आकार दिया जाता है।

चित्र 8.4

iv) **तेपची (Taipachi)** – यह सपाट विधि होती है, जो सीधी रेखाएँ बनाती है। यह साधारण स्टेम स्टिच और रनिंग स्टिच के द्वारा बनायी जाती है।

स्टेम स्टिच रनिंग स्टिच

चित्र 8.5

v) **मुर्री (Murri)** – चिकनकारी कढ़ाई की यह उभरी हुई विधि है। इसका नाम 'मुरमुरा' या फूले हुए चावल से पड़ा है। यह फ्रेंच नॉट का थोड़ा लम्बा रूप होता है।

फ्रेंच नाट 'क'

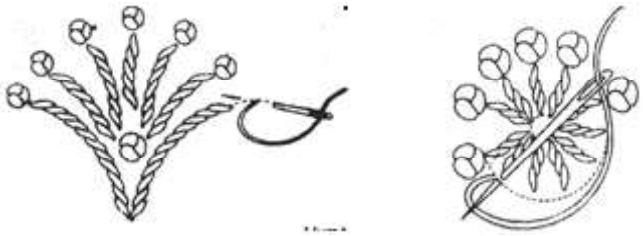

फ्रेंच नाट 'ख' फ्रेंच नाट 'ग'

मुर्री चित्र 8.6

vi) **फंदा (Phanda) –** यह मुर्री के तरह की जाती है, परन्तु उस से छोटी होती है। यह भी उभरी हुई विधि है। यह डिज़ाइन में पंखुड़ी, पत्ती आदि को भरने के लिये प्रयोग होती है।

क्रियाकलाप 8.1

5 इंच × 5 इंच के आकार का सूती कपड़ा लीजिए। उस पर एक चिकनकारी का नमूना काढ़िए और अपनी प्रयोगात्मक पुस्तिका में चिपकाइए।

पाठगत प्रश्न 8.1

रिक्त स्थान भरो

i) मुख्य रूप से चिकनकारी ..... रंग के सतह पर ..... रंग से की जाती है।

ii) चिकनकारी में ..... एक प्रकार का छोटा एप्लीक वर्क है।

iii) ..... में कपड़े के उलटी तरफ हेरिंगबोन टाँके लगाए जाते हैं।

iv) ..... और ..... चिकनकारी कढ़ाई की उभरी हुई विधि हैं।

8.4 कपड़ा

चिकनकारी कढ़ाई हमेशा से सफ़ेद मलमल के कपड़े पर सफ़ेद धागे से किया जाता था। परन्तु आजकल हर प्रकार के सूती कपड़े जैसे वॉयल, चामब्रे (Chambray), आरगेण्डी आदि पर किया जाने लगा है। लगातार नवनीकरण और उत्तम उत्पाद की माँग ने कशीदाकारों को शिफौन, जारजॅट, नेट तथा अन्य पतले या पारदर्शी कपड़े पर इस कढ़ाई का प्रयोग करने को प्रेरित किया है। आजकल रंगीन कपड़े पर भी ये कढ़ाई दिखाई देती है।

8.5 धागा

मुख्य रूप से, सूती सफेद धागे का प्रयोग होता था। परन्तु आजकल कभी–कभी हलके रंगीन धागों का भी प्रयोग होने लगा हैं।

8.6 उत्पाद

चिकनकारी कढ़ाई से जो वस्तुएँ बनायी जाती है वह हैं – साड़ी, कुर्ती, जुब्बा (आदमियों की लम्बी जैकेट) रुमाल, मेज़पोश, (टेबलमेट), कुशनकवर, पर्दे आदि।

चिकनकारी कढ़ाई आजकल पूरी तरह से व्यापारिक हो चुकी है। यह दूसरे देशों में भी निर्यात होती है।

क्रियाकलाप 8.2

i) एक छोटा थैला (15 इंच × 10 इंच) तैयार कीजिए और उस पर कोई एक उभरी हुई और एक सपाट चिकनकारी कढ़ाई कीजिए।

ii) 4 आरगेण्डी या मलमल (लगभग 6 इंच × 6 इंच) के रूमाल सेट तैयार कीजिए, और उस पर कोई भी दो चिकनकारी कढ़ाई कीजिए।

आपने क्या सीखा

- चिकनकारी में प्रयोग होने वाले

1. रंग
2. डिज़ाइन
3. टाँके
   - ✓ सपाट विधि
     - ○ बखिया
     - ○ जाली वर्क
     - ○ खतावा
     - ○ तेपची
   - ✓ उभरी विधि
     - ○ मुर्री
     - ○ फंदा

टिप्पणी

4. कपड़ा

5. धागा

- चिकनकारी कढ़ाई द्वारा बनाए गए उत्पाद :

  साड़ी, कुर्ती, जुब्बा, रूमाल, मेजपोश, पर्दे कुशन कवर।

पाठान्त प्रश्न

निम्न पर लघु टिप्पणी लिखिए :

i) चिकनकारी में जाली वर्क

ii) चिकनकारी कढ़ाई में उभरा स्टाइल

iii) चिकनकारी के उत्पाद

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1

1) सफेद, सफेद

2) खतावा

3) बखिया

4) मुर्री, फंदा

9

गुज़रात की कढ़ाई

राजस्थान व गुज़रात की विभिन्न प्रकार की लोक कलाएं बहुत प्रसिद्ध है। दोनों प्रान्तों की एक सम्पन्न कढ़ाई की परम्परा है। इन की कढ़ाई भारत में ही नहीं पूरी दुनियाँ में सराही जाती है। दोनों की कढ़ाई शीशे, मोती आदि से परिसज्जित होती है। यहाँ कढ़ाई कपड़े तथा चमड़े पर की जाती हैं। दोनों प्रान्तों की कढ़ाई में चमकीले व गहरे रंगों के धागों का प्रयोग होता है, जिस कारण यह सब को आकर्षित करती है। इस पाठ में हम गुज़रात में की जाने वाली कढ़ाई के बारे में विस्तार से जानेगें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आपः

- गुज़रात कढ़ाई में प्रयोग किये जाने वाले रंगों की पहचान कर पांएगे;
- गुज़रात कढ़ाई में अपनाए जाने वाले डिज़ाइन को सूचीबद्ध कर सकेगें;
- गुज़रात कढ़ाई में प्रयोग किये जाने वाले टाँके बना पांएगें;
- गुज़रात कढ़ाई से बने उत्पादों की सूची बना सकेगें।

गुज़रात की कढ़ाई – गुज़रात में विभिन्न संप्रदाय है जो कढ़ाई से जुड़ी हुयी है, विशेषतौर पर राबरी समुदाय की महिलाएँ। गुज़रात की कढ़ाई के मुख्य केन्द्र है सौराष्ट्र और कच्छ।

9.1 रंग

यहाँ चटकीले रंग जैसे लाल, हरा, बैंगनी, काला, नीला, केसरी, पीला और सफेद आदि प्रयोग किये जाते है। इसके अलावा चमकीली सजावटी सामग्री का प्रयोग करके अति रूचि पूर्वक कढ़ाई की जाती है।

9.2 डिज़ाइन

इनके डिज़ाइन रोजमर्रा की जिन्दगी को दर्शाते है। आमतौर पर इनके डिज़ाइनों में मोर, फूल, जानवर, पुरूष, महिलाएँ आदि देखने को मिलते है। इनके मोटिफ में मुगल शिल्प का प्रभाव भी दिखाई देता है। इसका एक उदाहरण, 'हीर भारत' है। उनके 'पैच वर्क' में ज्यामितीय डिज़ाइन प्रयोग किया जाते है। इसमें विधि में बहुरंगीय कपड़ों के टुकड़ो को आपस में जोड़कर मोटिफ बनाया जाता है।

चित्र 9.1

9.3 टाँके

यहाँ की सबसे प्रसिद्ध कढ़ाई में से एक है 'अभला कढ़ाई'। इस में कपड़े को, छोटे–छोटे गोल शीशे के टुकड़े और मोती को हेरिंग बोन स्टिच और तुरपन से सजाया जाता है। 'आरी कढ़ाई' में हुक के द्वारा चेन स्टिच का प्रयोग कर के मोटिफ को भरा जाता है। इसके अलावा रनिंग, डारनिंग, साटिन स्टिच, स्टेम स्टिच का भी प्रयोग होता है। इस प्रान्त की सबसे विशेष कढ़ाई है 'कच्छ या सिंधि तरोपा'।

चित्र 9.2

9.4 कपड़ा

यहाँ सूती, सिल्क व ऊनी कपड़ो पर कढ़ाई की जाती है। यहाँ पर चमड़े पर भी कढ़ाई की जाती है।

9.5 धागा

यहाँ पट (Silk floss), ऊनी, सूती, धागों के अलावा कई अन्य प्रकार के धागे भी प्रयोग में लाये जाते हैं।

चित्र 9.3

9.6 उत्पाद

गुज़रात में विभिन्न श्रेणी के उत्पाद तैयार किये जाते है, जैसे – वस्त्र, गृहसज्जा की विभिन्न वस्तुएं 'एपलीक या कताव' में छोटे–छोटे कपड़े के टुकड़ों को सादे सतह पर जोड़कर रजाई, परदे, और वॉल हैंगिंग आदि बनाए जाते है। 'ओढ़नी' पर अक्सर बॉडर या बड़े बड़े मोटिफ काढ़े जाते है। गुज़रात के कुछ अन्य प्रमुख उत्पाद है –

- तोरण
- चकला
- काठी
- अभला
- घाघरा चोली
- ब्लाउज
- चटाई
- कुशन कवर
- मोज़री
- पायदान

चित्र 9.4

9.7 काठियावाड़ कढ़ाई

इस कढ़ाई में सिंधी तरोपा व आरो टाँकों का ज्यादा प्रयोग किया जाता है।

9.7.1 सिंघी तरोपा की कढ़ाई

ये काठियावाड़ गुज़रात की एक विशेष कढ़ाई शैली है। इस का प्रायः प्रयोग घाघरा चोली को परिसज्जित करने में किया जाता है।

सिंधी तरोपा विधिः – यह टाँका एक आधारभूत डंड़ी टाँका बना कर, उस पर धागों को एक विशेष क्रम में गूँथ कर बनाया जाता है। यह गूँथना हेरिंगबोन स्टिच द्वारा किया जाता है। इसका क्रम विशेष होता है और ज़रा सी चूक होने पर यह सही नही बन पाता।

विधि :

1. नीचे दिये चित्रों को देखते हुए ये टाँका बनाए। धागे को ऊपर A पर लाए और एक टाँका B से C तक बनाए। फिर C से धागा D की ओर ले जाए। फिर एक छोटा टाँका D से E तक बनाए। चित्र को देखते हुए वर्णमाला के क्रम से X तक टाँके बनाए। इससे आपका सिंधी तरोपा का आधार बन जाएगा।
2. बीच में स्थित Z बिन्दु से शुरू करते हए धागा गूँथना शुरू करें।
3. पूरा गूँथने पर नीचे दिया हुआ आकार बन जाएगा।

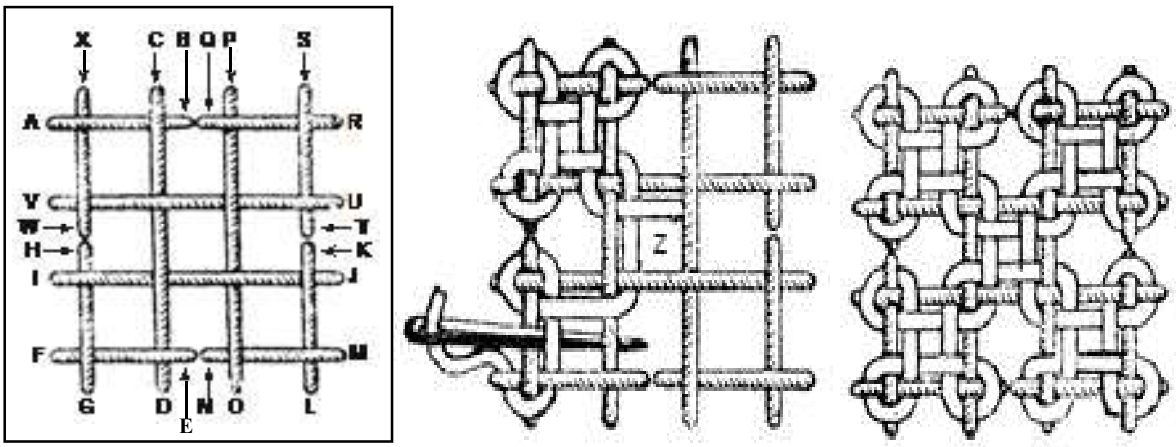

चित्र 9.5

9.7.2 'आरी' कढ़ाई

इस कढ़ाई में विशेष प्रकार के औजार प्रयोग किये जाते है।

i. **एक हुक नुमा सुई** – इस हुक द्वारा की गई चेन स्टिच को 'आरीकाम' कहा जाता है।

ii. **नियत्त** – ये एक विशेष प्रकार का अंगुस्ताना है। ये दाँये हाथ की पहली अँगुली में पहना जाता है। क्योंकि आरी की कढ़ाई मोटे कपड़े पर की जाती है, तो इस अगुंस्ताना का प्रयोग सुरक्षा प्रदान करता है।

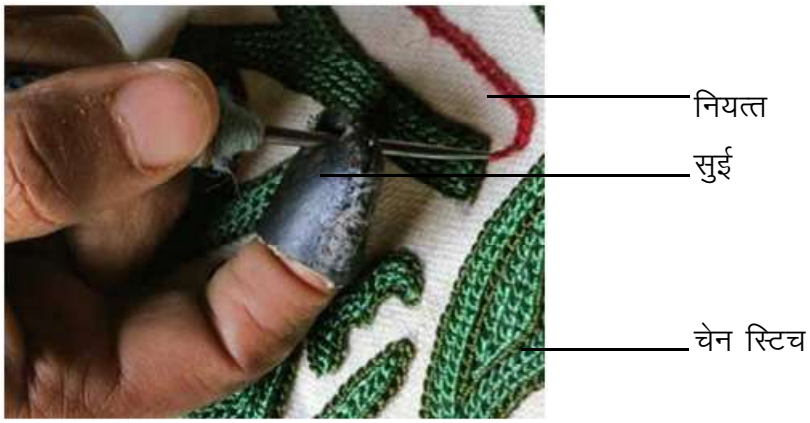

चित्र 9.6

आरी कढ़ाई दो प्रकार की होती है –

- **अक्सी** – जिसका का तात्पर्य है 'परछाई'। इस में कढ़ाई कपड़े के एक तरफ ही की जाती है।
- **दोरूखा** – इसमें कढ़ाई कपड़े के दोनों तरफ की जाती है।

पाठगत प्रश्न 9.1

रिक्त स्थान भरो:

i) गुज़रात के मुख्य कढ़ाई केन्द्र सौराष्ट्र और ..... हैं।

ii) ..... रंग जैसे लाल, हरा, बैंगनी, केसरी, पीला आदि ज्यादा प्रयोग किये जाते है।

iii) अभला कढ़ाई में छोटे शीशे व मोती को ..... स्टिच से टाँका जाता हैं।

iv) आरी कढ़ाई के विशेष औजार है आरी हुक और .....।

क्रियाकलाप 9.1

1. गुज़रात की विशेष कढ़ाई व उत्पादों के चित्र एकत्रित करके अपनी प्रयोग पुस्तिका में चिपकाएं।
2. 5 इंच × 5 इंच के सूती कपड़े के टुकड़े पर सिंधी तरोपा का एक सैंपल तैयार करें।

आपने क्या सीखा

- गुज़रात कढ़ाई में प्रयोग होने वाले

1. रंग
2. डिज़ाइन
3. टाँका

- हेरिंग बोन स्टिच
- स्टेम स्टिच
- चेन स्टिच
- साटिन स्टिच
- रंनिग स्टिच
- अभला कढ़ाई
- आरी कढ़ाई
- पैचवर्क (तुरपन)

4. गुजरात की कढ़ाई में प्रयोग किए जाने वाले कपड़े।
5. गुजरात की कढ़ाई में प्रयोग किए जाने वाले धागे।
6. गुज़रात कढ़ाई के प्रयोग द्वारा बनाये गये उत्पाद
   - ओढ़ी, घाघरा चोली, पगड़ी
   - रजाई चादर, परदे
   - तोरण, चकला
   - कुशन कवर, चटाई, पायदान
     - काठियावाड़ कढ़ाई
   - सिंधी तरोपा
   - आरी कढ़ाई

पाठान्त प्रश्न

प्र. 1 चित्रों के द्वारा सिंधी तरोपा बनाने की विधि स्पष्ट कीजिए।

प्र. 2 गुज़रात की कढ़ाई के कोई दस उत्पादों की सूची बनाए।

प्र. 3 अकसी व दोरूखा में अंतर स्पष्ट करें।

प्र. 4 आरी कढ़ाई बनाने में प्रयोग किए जाने वाले दो औजारों को संक्षिप्त में समझाए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

9.1

1) कच्छ
2) चटकीले
3) हेरिंग बोन
4) नियत्त

10

राजस्थान की कढ़ाई

राजस्थान में विभिन्न प्रकार की लोक कढ़ाईयाँ प्रसिद्ध हैं, जो 'भरत काम' के नाम से जानी जाती हैं। हर समुदाय की कढ़ाई अपने विशेष टाँको और विधि के लिये जानी जाती है। 'जैसलमेर' राजस्थान कढ़ाई का मुख्य केन्द्र है। यहाँ की 'एपलीक कढ़ाई' 'मोती का काम' और 'मीओ' कढ़ाई विश्व भर में प्रसिद्ध है। इस पाठ में हम राजस्थान में की जाने वाली कढ़ाई के बारे में विस्तार से जानेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आपः

- राजस्थान कढ़ाई में प्रयोग किये जाने वाले रंगों की पहचान कर पांएगे;
- राजस्थान कढ़ाई में अपनाए जाने वाले डिज़ाइन को सूचीबद्ध कर सकेगें;
- राजस्थान कढ़ाई में प्रयोग किये जाने वाले टाँके बना पांएगें;
- राजस्थान कढ़ाई से बने उत्पादों की सूची बना सकेगे;
- राजस्थान की लोक कढ़ाइयाँ पहचान कर सूचीबद्ध कर पाएंगे।

10.1 रंग

राजस्थान एक रेगिस्तान है, जहाँ पर प्राकृतिक फूल पत्ते कम दिखाई देते है। इन प्राकृतिक रंगों के अभाव को पूरा करने के लिये यहाँ के लोग इन रंगों को अपने वस्त्रों और कढ़ाई द्वारा जीवन में अपनाते हैं। यहाँ

पर भी गुज़रात की तरह प्रायः चटकीले रंगों का प्रयोग होता है। जैसे – लाल, पीला, हरा, सफेद व क्रिमसन आदि। नीला, संतरी व बैंगनी रंग प्रयोग में लाए जरूर जाते हैं, परन्तु कम मात्रा में इस्तेमाल होते हैं। मोटिफ का भरना हमेशा हल्के रंग से शुरू होकर गहरे रंग से समाप्त होता है। ये भराई गोलाकार में होती है।

10.2 डिज़ाइन

राजस्थान में ज्यामितीय डिज़ाइनों का प्रयोग ज्यादा होता है। इसके अलावा पक्षी, जानवर, मानव आकृति तथा गृह उपयोगी वस्तुएँ के नमूने भी बनाए जाते है। कलात्मक शैली का कमल बहुत ही लोकप्रिय नमूना है।

10.3 टाँके

यहाँ प्रायः चेन स्टिच, स्टेम स्टिच, साटिन स्टिच, बटनहोल स्टिच, हेरिंगबोन स्टिच, तुरपन आदि प्रयोग में लाए जाते है। इनके अलावा कढ़ाई में शीशे व मोती का प्रयोग ज्यादा किया जाता है।

10.4 कपड़ा

मुख्यतः खद्दर का प्रयोग इस कढ़ाई में किया जाता है। आवश्यकता और माँग के अनुसार अब सूती, सिल्क, जॉर्जट, शिफॉन, शनील, वॉइल, मलमल आदि भी प्रयोग होने लगे है।

10.5 धागा

यहाँ पट (Silk floss) सूती धागों के साथ–साथ मोती, शीशे, बादला, सीप, कोढी आदि का भी प्रयोग होता है। चमड़े पर भी ऊनी धागों से कढ़ाई की जाती है।

10.6 उत्पाद

मुख्य रूप से ये कढ़ाई घाघरा चोली, ओढ़नी व पगड़ियों पर की जाती है। वस्त्रों के अलावा ये गृहसज्जा की विभिन्न वस्तुओं पर भी होती है– जैसे चादरें, कुशन कवर, पायदान, मेजपोश, तोरण, पर्दे, आदि।

चित्र 10.1

10.7 लोक कढ़ाइयाँ

हर समुदाय की अपनी विशेष कढ़ाई व विधि है। जिसमें मुख्य हैं:

1. **मोची भरत** : इसमें विशेष औजारों जैसे 'आरी' और 'कतरनी' के द्वारा चेन स्टिच से मोटिफ को भरा जाता है। मोटिफ के केन्द्र बिन्दु पर छोटे–छोटे शीशे, बटनहोल स्टिच द्वारा लगाए जाते है।

2. **मोती भरत** – इस में मोटिफ को मोतियों की पंक्तियों से भरा जाता है। भराव का अहसास देने के लिए यह पक्तिंयाँ नजदीक–नजदीक बनायी जाती है।

चित्र 10.2

3. **मीओ कढ़ाई** – इसमें आमतौर पर पट से कढ़ाई की जाती है। विशेष अवसर पर पहने जाने वाले वस्त्रों पर चमक देने हेतु पट के अलावा चाँदी के धागों का भी प्रयोग किया जाता है।

4. **बादला का काम** : यह कढ़ाई चपटी चमकीली तार से बिना सुई के प्रयोग से की जाती है। इस में तुरपन, रनिंग व बैक स्टिच का प्रयोग होता है। ये कार्य दो विधि द्वारा किया जाता है।

   - ज्यामितीय मोटिफ को एपलीक वर्क तथा चमकीले सलमा सितारों से भरा जाता है।

- **एपलीक वर्क** (छोटे–छोटे कपड़े के टुकड़े) का मोटिफ बना कर, इसको कपड़े पर तुरपन से जोड़ा जाता है और उसके ऊपर बादला (एक चपटी तार) से बिना सुई के कढ़ाई की जाती है।

चित्र 10.3

5. **गोटा व किनारी का काम** – गोटा एक बुना हुआ धातु का रिबन होता है जो विभिन्न आकारों में काट कर तुरपन के द्वारा एक सुनिश्चित डिज़ाइन में टाँका जाता है। किनारी भी एक धातु का रिबन होता है। जो लटकनदार होता है। ये आमतौर पर ओढ़नी व साड़ी के सिरो (किनारों) पर टाँका जाता है।

चित्र 10.4

टिप्पणी

6. **सलमा कारीगरी** – यह भी दो प्रकार की होती है।

- **ज़रदोज़ी** – इस में चाँदी और सोने की तारों से बहुत ज्यादा घनी व भरी हुई कढ़ाई की जाती हैं।

चित्र 10.5

- **कामदानी** – यह कढ़ाई ज़रदोज़ी की तरह बनाई जाती है। परन्तु इसमें हल्का काम महीन कपड़ो पर किया जाता है। इसमें ज़री के अलावा बहुमुल्य रत्नों का भी प्रयोग होता है।

7. **धागे की कढ़ाई** – ये कढ़ाई पट के द्वारा मलमल व अन्य हल्के कपड़ों को तह बना कर की जाती है। डिज़ाइन को चेन, साटिन, स्टेम स्टिच के द्वारा बनाया जाता है। ये कढ़ाई चादरों, रजाई, पर्दे, पगड़ी बनाने के लिये इस्तेमाल होती है।

पाठगत प्रश्न 10.1

रिक्त स्थान भरो:

i) ..... भरत में मोती से डिज़ाइन भरा जाता है।

ii) मोची भरत में ..... के द्वारा चेन स्टिच बनायी जाती है।

iii) राजस्थान की लोक कढ़ाई ..... के नाम से भी जानी जाती है।

iv) ..... कढ़ाई एक चपटी तार के द्वारा बिना सुई के की जाती हैं।

10.8 शीशे लगाने की विधि

- शीशे भिन्न–भिन्न आकार और साइज में उपलब्ध होते है।
- इनको टाँकने के लिये बटनहोल, साटिन और चेन स्टिच का प्रयोग किया जाता है।

चित्र 10.6

विधि 1

- शीशे को जहाँ लगाना हो उस जगह पर शीशे को स्थिरता से रखें।
- इस स्थिरता को बनाये रखने के लिये चार लंबे टाँके लगाए (नीचे चित्र को देखे)।
- अब सुई को कपड़े में से निकाले और इन चार टाँकों के सहयोग से छल्ले बनाते हुए, चारों ओर शीशे के सिरे को ढ़के (नीचे चित्र को देखे)।

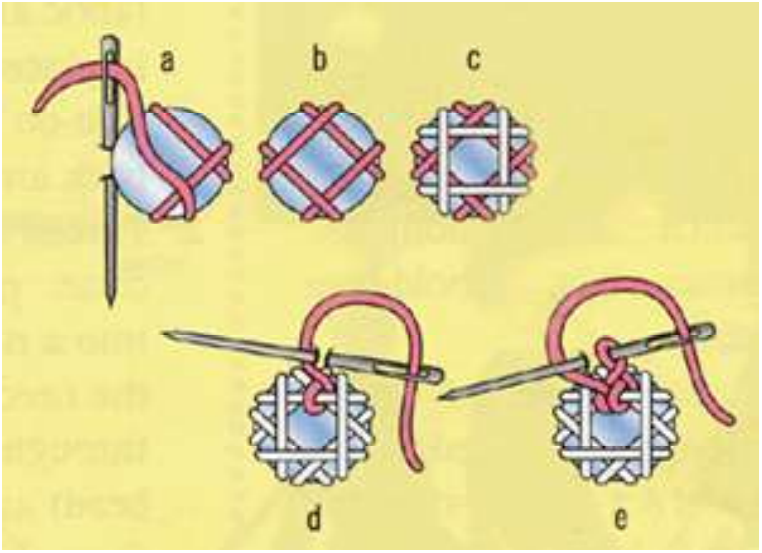

चित्र 10.7

विधि 2

- विधि 1 में दी गई क्रिया से शीशे को स्थिरता से कपड़े पर लगाएँ।
- परन्तु इस विधि में चार न लेकर आठ टाँके बनाए जाते है। (नीचे चित्र को देखे)।
- इसमें 'हेरिंगबोन स्टिच' का प्रयोग होता है। आपको याद होगा कि हेरिंग बोन में दो लाइनों के बीच में छोटे–छोटे टाँके लिए जाते है। यहाँ पर हेरिंग बोन का एक छोटा टाँका कपड़े में लेते है और दूसरा टाँका स्थिरता के लिए बनाए गये लंबे टाँको में लिया जाता है। (नीचे चित्र को देखे)

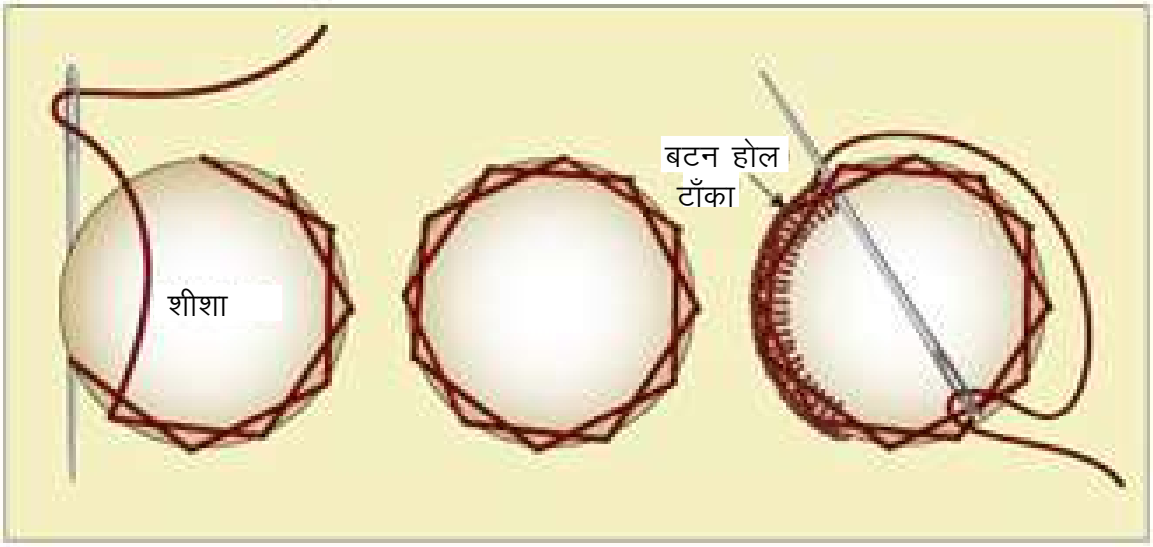

चित्र 10.8

क्रियाकलाप 10.1

एक 5 इंच × 5 इंच का सैंपल तैयार करें। इस पर राजस्थानी मोटिफ को हेरिंगबोन स्टिच द्वारा शीशे लगाने की विधि का प्रयोग करते हुए अंलकरित करें।

10.9 मोती लगाने की विधि

इसके लिये आवश्यक औजार हैं – पतली लंबी सुई, मजबूत धागा और मोती।

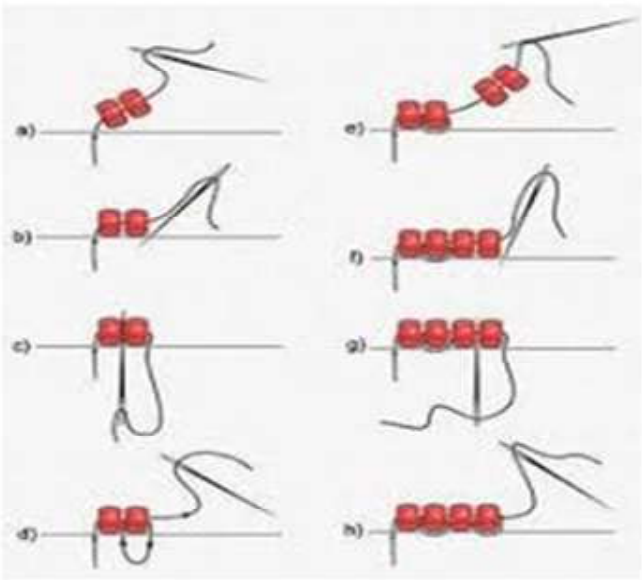

चित्र 10.9

मोती कपड़े पर आमतौर से निम्न चार टाँको द्वारा लगाए जाते हैं –

- रनिंग स्टिच
- लेज़ी डेज़ी स्टिच
- बैक स्टिच
- काउचिंग स्टिच

10.10 सितारा लगाने की विधि

सितारे दो विधियों द्वारा लगाए जाते हैं।

विधि 1

- सितारे के उभरे हुए भाग को ऊपर या नीचे लेते हुए लगा सकते हैं।
- सुई को सितारे के छेद में से कपड़े पर निकालें। सितारे को हाथ से पकड़े और सुई को एक सीरे से नीचे ले जाएँ। (नीचे चित्र को देखें)
- अब सुई को सितारे के अगले हिस्से के सिरे से बाहर निकालें।
- सुई को वापस लाकर सितारे के छेद में से नीचे ले जाए। ध्यान दीजिए, यहाँ पर बैक स्टिच विधि के द्वारा सितारा टाँका गया है।

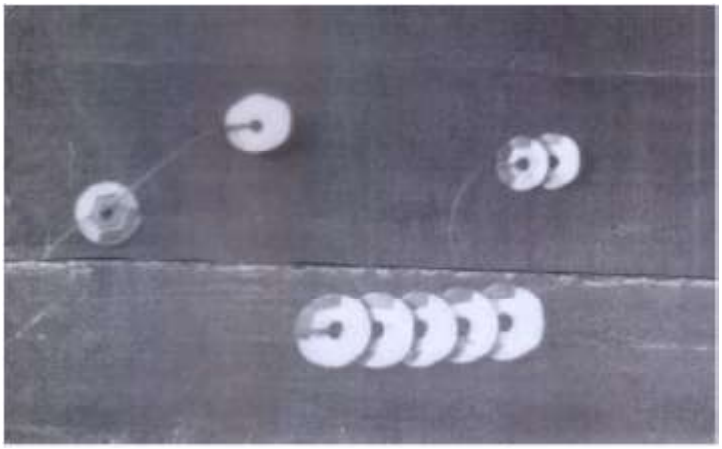

चित्र 10.10

विधि 2

- सुई को सितारे के छेद में से कपड़े पर निकाले।
- सुई में एक मोती पिरोहे, ध्यान रहे की मोती का आकार, सितारे के आकार से बढ़ा होना चाहिये। (नीचे दिये चित्र को देखे)
- मोती को सुई से खिसका कर उस बिन्दु पर लाए, जहाँ धागा सितारे के छेद में से निकल रहा है।
- सुई को वापस सितारे के छेद में डाले और सितारे के आगे से कपड़े पर निकाले।

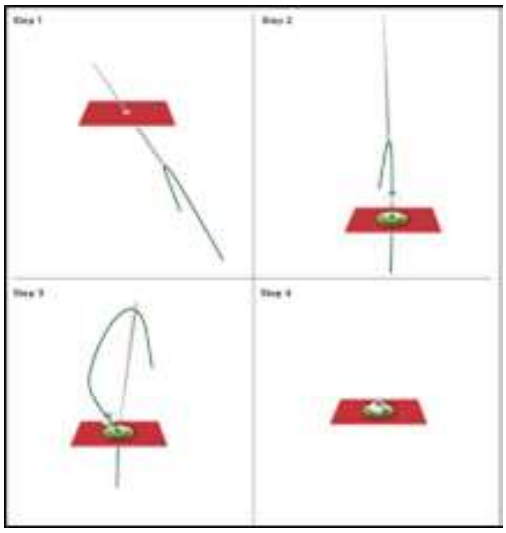

चित्र 10.11

क्रियाकलाप 10.2

एक 5 इंच × 5 इंच का सैंपल तैयार करें। जिस पर राजस्थानी मोटिफ को मोती की विधि से बनाएं और सितारों से अलंकरित करें।

आपने क्या सीखा

राजस्थान कढ़ाई में प्रयोग होने वाले:

- रंग
- डिज़ाइन
- टाँके
  - चेन स्टिच
  - स्टेम स्टिच
  - साटिन स्टिच
  - बटनहोल स्टिच
  - हेरिंगबोन स्टिच
  - तुरपन
  - शीशे और मोती
- कपड़ा
- धागा
- राजस्थान कढ़ाई द्वारा बनाए गए उत्पाद
  - घाघरा चोली
  - ओढ़नी
  - चादरे, कुशनकवर, पर्दे
  - मेजपोश, तोरण
  - पगड़ी
- लोक कढ़ाइयाँ
  - मोची भरत

टिप्पणी

- मोती भरत
- मीओ कढ़ाई
- बादला का काम
- गोटा व किनारी का काम
- सलमा कारीगरी

- शीशे लगाने की विधि
- मोती लगाने की विधि
- सितारा लगाने की विधि

पाठान्त प्रश्न

प्र. 1 राजस्थान की कोई चार लोक कढ़ाईयां को संक्षिप्त में समझाएँ।

प्र. 2 सलमा और गोटा किनारी के काम में अंतर स्पष्ट करें।

प्र. 3 मोती भरत की कोई दो विशेषता बताएँ।

प्र. 4 राजस्थान कढ़ाई में प्रयोग किये जाने वाले रंगो की सूची बनाएँ।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

10.1

1) मोती

2) आरी और कतरनी

3) भरतकाम

4) बादला

11

गुणवत्ता, स्वच्छता एवं सुरक्षा

जब भी आप कढ़ाई की वस्तु खरीदते है, तो आप उसकी गुणवत्ता कैसे सुनिश्चित करते हैं। आमतौर पर हम कढ़ाई की सफाई, सही अनुपात में डिज़ाइन, धागों का चयन व रंगों के सयोंजन पर ध्यान देते है। अब आप एक कशीदाकार बनने जा रहे हैं तो यह आवश्यक है, कि आप भी ग्राहक की इन जरूरतों को पूरा करने की कोशिश करेगें।

गुणवत्ता का तात्पर्य है कि आपके द्वारा तैयार की गयी कढ़ाई की वस्तु, ग्राहक की जरूरत के साथ–साथ उसको संतुष्ट भी करें। इस पाठ में हम, आवश्यक गुणवत्ता व कढ़ाई की गई वस्तुओं के रख–रखाव के बारे में जानेगें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप :

- आमतौर पर होने वाली त्रुटियों के कारणों की पहचान कर रोक सकेगें;
- कढ़ाई के पूर्व व दौरान में होने वाली त्रुटियों को सुधार पाएगें;
- रख–रखाव में अपनायी जाने वाली सावधानियों को सूचीबद्ध कर पाएगें;
- सरल नियमों को पहचान कर आप उच्चकोटि की कढ़ाई कर पांएगे।

टिप्पणी

- स्वच्छता के महत्व की व्याख्या कर पाएंगे।
- विभिन्न प्रकार की आपदाओं से बचाव कर पाएंगे।
- कचरे का सुरक्षित निपटान कर पाएंगे।

11.1 गुणवत्ता

11.1.1 त्रुटियों के कारण

- दिये गए निर्देशों को न समझ पाना।
- डिज़ाइन के अनुरूप कपड़े चयन न कर पाना।
- सही आकार की सुई न लेना जैसे – गोल नोंक वाली सुई के स्थान पर नुकीली सुई का चयन।
- सही धागे का चयन न करना जैसे – मोटे कपड़े पर महीन धागे से कढ़ाई।
- काम गाँठ लगा कर शुरू करना।
- कपड़े पर डिज़ाइन का स्थानांतरण सही विधि से न करना।

11.1.2 होने वाली त्रुटियाँ

1. बाहर के आकार का स्पष्ट व सही न होना।
2. आकार विकृत होना जैसे कि गोल आकार का अण्ड़ाकार दिखना व चौकोर आकार त्रिकोणीय दिखना।
3. टाँको के बीच अन्तर एकसमान न होना। विशेषतौर पर जहाँ टाँके दो दिशाओं से आकर मिलते हों।
4. टाँको का एक दूसरे को ढक लेना।
5. बाहर के आकार का निर्देशित स्थान पर न होना।
6. कढ़ाई के एक हिस्से से लंबा धागा छोड़ते हुए सुई को दूसरे हिस्से पर ले जाना।
7. कढ़ाई वाले भाग में कपड़े में सिकुड़न दिखना।
8. कढ़ाई के दौरान कपड़ा मैला हो जाना।
9. कपड़े पर पैन या पैन्सिल से निशान लगाना।
10. दिये गए निर्देशों के अनुरूप कढ़ाई न करना।

क्रियाकलाप 11.1

अपने स्वचालित कढ़ाई केन्द्र में कारीगरों के द्वारा तैयार की गई वस्तुओं में त्रुटियों की पहचान हेतु एक जाँच सूची बनाएँ।

टिप्पणी

11.1.3 त्रुटियों को सुधारना

1. कढ़ाई के पूर्व अपनाई जाने वाली सावधानियाँ

- सूई व धागों का चयन डिज़ाइन व कपड़े के अनुरूप होना चाहिए।
- कपड़ो को श्रिंक करना।
- कपड़े पर से धाग–धब्बे हटाना।
- सही विधि से डिज़ाइन का स्थांनातरण कपड़े पर करना।
- सही मात्रा में प्रयोग की जानी वाली साम्रगी व औजारों का भण्डारण करना।
- कढ़ाई के नमूने को सही स्थान पर व्यवस्थित करना।

2. कढ़ाई के दौरान अपनाई जाने वाली सावधानियाँ

- कढ़ाई से संबंधित दिये गए निर्देशों का पालन करना।
- कढ़ाई के टाँको को सही क्रम से बनाना।
- डिज़ाइन में प्रयोग किये जाने वाले टाँको के अनुरूप धागे का सही तनाव रखना।
- लंबी अवधि तक फ्रेम लगाकर कपड़े को न रखना।
- कढ़ाई के दौरान कपड़े को मैला होने से बचाना।
- गलती सुधारने के लिये सावधानी से टाँको को उधेड़ना।
- कढ़ाई न करने के अवधि में काढ़ी गई वस्तु का स्वच्छता से भंडारण करना।
- कढ़ाई करने से पूर्व हाथ धोना व कढ़ाई के दौरान खाने पीने से बचना।
- सही रोशनी में कार्य करना।

3. कढाई के उपरान्त अपनायी जाने वाली सावधानियाँ

- कढ़ाई व कपड़े के अनुरूप रख–रखाव की सही विधि अपनाना।
- समय समय पर निरीक्षण करना व त्रुटि को जल्द से जल्द सही करना।
- कपड़े पर सुई के छेद व निशान को सही करना।
- कपड़े के पीछे दिखने वाले लंबे धागों की छंटाई करना।
- कपड़े पर दिखाई देने वाली फंफूदी व अनचाही गंध को हटाने का प्रयास करना।
- डिज़ाइन के आकार में दिखने वाली त्रुटि को सही करने की कोशिश करना।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 11.1

रिक्त स्थान भरो:

i) टाँको के बीच अंतर ..... होना चाहिए।

ii) कढ़ाई के पूर्व सही मात्रा में ..... का भंडारण आवश्यक होता है।

iii) आँखों पर जोर न पड़े इसलिये सही ..... में कार्य करना चाहिये हैं।

iv) सुई व धागे का चयन डिज़ाइन व कपड़े के ..... होना चाहिए।

11.2 रख–रखाव

कढ़ाई की गई हर वस्तु को साफ करना अति आवश्यक होता है। यह घर पर धुलाई करके या बाहर से ड्राइक्लीन करा कर रखी जा सकती है। वस्तु को निखारने के लिए आप विरंजक का भी प्रयोग कर सकते है। यह विरंजक सौम्य व कपड़े के अनुरूप होना चाहिये।

11.2.1 धुलाई

1. सौम्य डिटर्जेंट का प्रयोग करना।
2. ठंड़े पानी से धोना।
3. कढ़ाई की वस्तुओं को ज्यादा न तो रगड़े और न ही निचोड़े।
4. अच्छी तरह से ख़ंगालना और सुनिष्चित करना की कोई साबुन तो शेष नही है।
5. शनील, सिल्क आदि कपड़ो की बनी हुई वस्तुओं को ड्राइक्लीन करवाएँ। इन को लंबे समय तक गीला न रखे।
6. दाग हटाने के लिये अधिक न रगड़े तथा उपयुक्त रसायन का प्रयोग करें।
7. अगर धागे या कपड़े का रंग निकलता हो तो उसे उस स्तर तक ख़ंगाले जब तक पानी में रंग दिखाई दें।
8. कलफ को कपड़े के अनुरूप लगाए।

11.2.2 सुखाना

1. हमेशा वस्तु को फैला कर सुखाएँ।
2. हमेशा छाया में सुखाएँ।
3. अगर किसी हिस्से में सुकड़न दिखे तो उसे खींच कर सुखाएँ। आवश्यक हो तो आकार को स्थिर रखने के लिये पिन का उपयोग करें।

11.2.3 इस्त्री (प्रेस) करना

1. बहुत गरम प्रेस या इस्त्री का प्रयोग न करें। इस से कपड़ा जल सकता है तथा अनावष्यक चमक आ सकती है।
2. उभरी हुई कढ़ाई को दो कपड़ो के बीच में रख कर या गद्देदार व नरम सतह पर उल्टी तरफ से रख कर प्रेस करें।
3. प्रेस, वस्तु के पूरी तरह से सूखने से पूर्व करनी चाहिये।
4. हर कढ़ी हुई वस्तु को उल्टी तरफ से ही प्रेस करें।

11.2.4 भंडारण

1. भंडारण के स्थान पर हवा का प्रवाह अच्छा होना चाहिए।
2. कसे हुए प्लास्टिक डब्बों में भंडारण नहीं करना चाहिये।
3. भंडारण का स्थान नमी रहित होना चाहिये।
4. भंडारण स्थल पर सूरज की रोशनी तेज नही होनी चाहिए, इससे रंग हल्के पड़ सकते हैं।
5. कढ़ी हुई वस्तुओं को कपड़े या कागज में लपेट कर रखें, जिससे उसको अमल के प्रभाव से बचाया जा सके।

पाठगत प्रश्न 11.2

नीचे दिये गए वाक्यों के आगे सही/गलत का निशान लगाएः

1. कढ़ी हुई वस्तुओं को हमेशा गरम पानी से धोना चाहिए। ( )
2. सिकुड़न वाले हिस्से को खींच कर सुखाएँ। ( )
3. प्रेस हमेशा पूरी तरह से सुखने पर करनी चाहिए। ( )
4. धोने के लिये सौम्य डिटर्जेंट का प्रयोग करना चाहिए। ( )

क्रियाकलाप 11.2

अपने आसपास के कढ़ाई केन्द्र जाए और वहाँ पर अपनाई गई भंडारण की विधि को देखें और उस पर एक रिपोर्ट लिखें (200 शब्द)।

टिप्पणी

11.3 स्वच्छता, कचरे का सुरक्षित निपटान व आपदा का सामना करना

कचरे का सुरक्षित निपटान न केवल क्लाइंट की सुरक्षा व स्वास्थ्य के लिए महत्त्वपूर्ण है, बल्कि यह केन्द्र को साफ सुथरा और आकर्षक बनाता है।

कचरे को संभालने व निपटान के लिए सुझावः

- उपयुक्त माप के कूड़ेदान का प्रयोग करें।
- कूड़ेदान वहां रखें जहाँ अधिक कचरा जमा होता है। बेहतर होगा हर कार्य क्षेत्र में एक कूड़ेदान हो।
- हमेशा ढक्कन वाले कूड़ेदान का प्रयोग करें।
- प्रत्येक कूड़ेदान में पोलीथीन लगाएं। इससे कूड़ेदान की गंदगी व दाग धब्बों से बचाव होगा और कचरे को आराम से उठाकर फेंकने में मदद मिलेगी।
- कूड़ेदान को रोज़ या जब भी ज़रूरी हो खाली करें।
- उस पर पोलीथीन लगाने से पहले उसे अच्छी तरह धोएं।
- केन्द्र का रोज झाड़ू–पोंछा करें व कीटाणु व कीड़े मकोड़ों से बचाव के लिए डिसइनफैक्टेंड का प्रयोग करें।
- केन्द्र को मच्छर व मक्खियों से मुक्त रखने की व्यवस्था करें।
- केन्द्र में आग से होने वाली दुर्घटना से बचाव के लिए अग्निशामक यंत्र लगाएं।
- बिजली आपूर्ति का लोड इतना होना चाहिए कि सभी उपकरण सुरक्षित रूप से संचालित हो सकें। ऐसा न होने पर शार्ट–सर्किट, फ्यूज उड़ जाने व आग लगने आदि दुर्घटनाओं की आशंका रहती है।
- एक 'फर्स्ट एड बॉक्स' तैयार करें और उसे किसी आसानी से पहुँच वाले स्थान पर रखें। इसके सामान की एक्सपायरी डेट नियमित रूप से जांचते रहें। इस्तेमाल या बेकार हो चुके किसी भी सामान को तुरंत बदलें।
- सभी औज़ारों व उपकरणों की नियमित जांच करें व कोई भी खराबी होने पर इसे तुरंत ठीक करवाएं।
- पर्याप्त रोशनी व वायु–संचरण सुनिश्चित करें।
- सभी कर्मचारियों को जोखिम और खतरों की पूरी जानकारी होनी चाहिए।

- स्थानीय अधिकारियों से मिलकर अपने यहाँ ''फायर ड्रिल व आपदा से बचाव की ट्रेनिंग का आयोजन करें।
- किसी अनहोनी या दुर्घटना से निपटने की योजना बनाएं व सभी संबंधित लोगों को इसकी जानकारी दें।

पाठगत प्रश्न 11.3

मिलान कीजिए

क	ख
1) कूड़ेदान	(i) फर्स्ट एड बॉक्स
2) उचित अपूर्ति	(ii) निर्धारित योजना
3) प्राथमिक उपचार	(iii) ढक्कन वाला
4) अनहोनी व दुघर्टना हेतु	(iv) सुरक्षित उपकरण संचालन

11.3.1 शारीरिक, व्यक्तिगत स्वच्छता और अच्छी आदतें

1) **शारीरिक स्वास्थ्य**

- शारीरिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति अपना काम भली प्रकार करता है, इसलिए अपना ध्यान रखें।
- शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए संतुलित आहार, उचित आराम, व पूरी नींद लें तथा रोज़ व्यायाम करें।
- बीमारियों से बचने के लिए डाक्टर से नियमित जांच करवाते रहें।

2) **व्यक्तिगत स्वच्छता**

- रोज़ नहाएं
- दिन में दो बार ब्रश अवश्य करें।
- बालों में शैम्पू व कंघी करें।
- साफ अंतःवस्त्र, जुराबें पहनें व रोज़ बदलें।
- छीकते व खाँसते समय साफ रूमाल या टिश्यू पेपर का प्रयोग करें।
- नाखूनों को रोज़ साफ करें व उन्हें ट्रिम करें।

टिप्पणी

3) **अच्छी आदतें**

- विनम्र व मैत्रीपूर्ण रहें।
- अपने बड़ों व सहयोगियों का सम्मान करें।
- नैतिकतापूर्ण व्यवहार करें।
- अनुशासित रहें।
- निष्ठा व लग्न दिखाएं
- अपने कार्य से संबंधित अद्यतन जानकारी प्राप्त करते रहें।
- सृजनात्मक व मौलिक बनें।
- सहयोगी बनें और सहायता करें।
- ज़िम्मेदारी लें व पहल करें।

11.4 कढ़ाई केन्द्र में स्वच्छता संबंधी कानूनी मानदंडों का पालन करना

एक सक्षम व सुसंचालित केन्द्र क्लाइंट पर एक व्यावसायिक छाप छोड़ता है। केन्द्र की कार्यक्षमता केन्द्र और वहाँ काम करने वाले स्टाफ पर निर्भर करती है।

केन्द्र इस प्रकार बना हो कि वहाँ का सारा क्षेत्र उपयोग में आ सके। पूरा स्टाफ एक टीम की तरह कार्य करने के लिए प्रशिक्षित हो। प्रत्येक सदस्य को एपॉइंटमेंट बुक लिखने व भरने से लेकर स्टॉक कंट्रोल तक सभी कार्यों के संबंध में अपनी ड्यूटी के बारे में पता होना चाहिए। सही रूप से प्रशिक्षित स्टाफ, ज़्यादा निपुणता से कार्य करते हुए कम से कम समय में, अधिक से अधिक ग्राहकों को अटैंड करता है। यह एक अच्छा पेशेवर गुण है।

केन्द्र की सजावट पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इससे केन्द्र के स्तर का पता चलता है और एक सुखद वातावरण बनता है। केन्द्र को कभी गंदा न छोड़ें। अपने क्षेत्र में इससे संबंधित कानून व मानदडों की आवश्यक जानकारी प्राप्त करें तथा उनका पालन करें। एक अच्छा केन्द्र संबंधित कानून मानदंडों का पालन करता है।

क्रियाकलाप 11.3

अपने आस–पास के केन्द्रों का निरीक्षण करें और वहाँ पर स्वच्छता तथा खतरों और जोखिम निपाटने हेतु की जा रही कार्य व्यवस्था के बारे में जानकारी ले। इसपर एक रिपोर्ट लिखें।

आपने क्या सीखा

- गुणवत्ता
  - त्रुटियों के कारण
  - होने वाली त्रुटियाँ
  - त्रुटियों को सुधारना

- रख–रखाप
  - धुलाई
  - सुखाना
  - इस्त्री (प्रेस)
  - भंडारण
- स्वच्छता, कचरे का सुरक्षित निपटान व आपदा का सामना करना
- कढ़ाई केन्द्र में स्वच्छता संबंधी कानूनी मानदंडों का पालन करना

पाठान्त प्रश्न

1. त्रुटियाँ होने के कोई चार कारण बताएं।
2. इस्त्री (प्रेस) करने के दौरान अपनायी जाने वाली कोई तीन सावधानियाँ लिखें।
3. भंडारण करते समय ध्यान में रखने योग्य कोई तीन बिन्दु लिखें।
4. व्यक्तिगत स्वच्छता को सुनिश्चित करने के लिए कोई चार बिन्दु लिखें।
5. कूड़े के सुरक्षित निपटान के लिए कोई चार सुझाव दीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

11.1

1) एक समान
2) साम्रगी व औजारों
3) रोशनी
4) अनुरूप

11.2

1) गलत (**X**)
2) सही (√)
3) गलत (**X**)
4) सही (√)

11.3

1) – (iii)
2) – (iv)
3) – (i)
4) – (ii)

12

व्यक्तित्व, संचार और उद्यमिता

मैथ्यू को एक बहुराष्ट्रीय कंपनी से साक्षात्कार के लिए बुलावा आया है। मैथ्यू खुश होने के साथ ही थोड़ा घबराया भी हुआ है कि वह साक्षात्कार की किस प्रकार तैयारी करे। उसकी बहन मैरी एक कंपनी में चार साल से नौकरी कर रही है। उसने मैथ्यू को साक्षात्कार से पूर्व तैयारी के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं से अवगत कराया तथा बायोडेटा भी बनवाया।

मैथ्यू की सफलता से प्रेरित हो कर उसके मित्र मोहित ने भी अपना उद्योग स्थापित करने के संबंध में मैरी से चर्चा की। मैरी ने उसे सफल उद्यमी के गुणों, व्यक्तित्व विकास तथा संचार के माध्यमों की जानकारी दी। आइए इस पाठ में हम इन सभी पहुलओं पर विस्तार से चर्चा करें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- व्यक्तित्व विकास की नीतियों की सूची बना सकेंगे;
- संचार के विभिन्न माध्यमों व प्रकार की व्याख्या कर अपना सकेंगे;

टिप्पणी

- अपना उद्यम स्थापित करने की योग्यता विकसित कर सकेंगे;
- अपने विस्तृत शैक्षिक अभिलेख (बायोडेटा) का निर्माण कर सकेंगे;
- साक्षात्कार के लिए उचित तैयारी कर सकेंगे।

12.1 व्यक्तित्व का विकास

व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास के लिए मनुष्य में नीतियों व मूल्यों का होना आवश्यक है। नीतियां हमें हमारे नैतिक कर्त्तव्यों के विषय में बताती हैं ताकि हमारा व्यवहार घर व कार्यक्षेत्र दोनों जगह सही, विश्वसनीय व न्यायप्रिय हो। नीतियां, नियम व मानकों का वह समूह हैं जिनकी किसी भी व्यक्ति से एक संतोषजनक पारिवारिक जीवन निभाने और एक अच्छे कार्यकर्त्ता बनने के लिए अपेक्षा की जाती है। अतः घर व बाहर आपको नीतियों की आवश्यकता होती है। निम्नलिखित आदतों में आप नीतिगत व्यवहार देख सकते हैं, जो आप के व्यवहार में परिलक्षित होने चाहिए –

- वफादारी व ईमानदारी
- सत्यवादिता
- आत्मसम्मान व अन्य लोगों का सम्मान
- समय का आदर
- कार्य के प्रति सम्मान
- अपने पर्यावरण का सम्मान

हमारे जीवन की इन नीतियों के अतिरिक्त हमारा कार्य क्षेत्र भी हमसे कुछ विशिष्ट नीतियों की अपेक्षा करता है। ये हैं :–

- नियमितता व समय की पाबंदी
- गोपनीयता
- विश्वासपात्रता
- अपने सहकर्मियों व ग्राहकों से मित्रतापूर्ण संबंध रखना
- नयी जिम्मेदारियों को निभाना व सीखने की इच्छा रखना

इन कार्य नीतियों के कारण हम किसी भी कार्य को अपनी क्षमतानुसार, साफ, न्यायपूर्ण व पक्षपात रहित तरीके से कर सकते हैं।

टिप्पणी

क्रियाकलाप 12.1

किसी भी कार्यस्थल (जैसे कोई दफ्तर, दुकान, पुलिस चौकी आदि) पर जाकर वहाँ की कोई चार नीतिगत और कोई चार नीतिरहित कार्य प्रणाली नोट करें।

पाठगत प्रश्न 12.1

1) किन्हीं पाँच व्यक्तिगत गुणों की व्याख्या कीजिये जो अच्छी कार्य नीतियों में सहयोग देते हैं।

(i) ..... (iv) .....

(ii) ..... (v) .....

(iii) .....

12.2 नीतियों की संहिता

वह सूची जिसमें कुछ नियमों, मानकों और सिद्धांतों का स्पष्ट वर्णन हो और हमारे व्यवहार का मार्गदर्शन करें, नीतियों की संहिता कहलाती है। निम्नलिखित कार्यनीतियों की संहिता को हम सभी को समझना और कड़ाई से पालन करना चाहिए –

- कार्य और घर पर नियमित और सामयिक रहें।
- स्वयं के लिए निर्धारित कार्य को पूरा करें।
- सबके प्रति शिष्ट, धैर्यवान, विनम्र और आदरपूर्ण रहें।
- स्वयं के लिए निर्दिष्ट कार्य के लिए आवश्यक ज्ञान व कौशल को हासिल करें।
- सीखने और जानकारी प्राप्त करने के लिए स्वयं को तैयार करें।
- अपने कार्य को पूरा करने के लिए अधिक और कारगर उपायों को ढूँढें।
- अपने संसाधनों का प्रबंधन और प्रयोग दक्षता से करें। संसाधनों को बर्बाद न करें।
- अपने कार्य के नियमों, नीतियों और प्रक्रमों का कड़ाई से और समान रूप से पालन करें।
- अपना कर्त्तव्य करते समय पक्षपात और भेदभाव न करें। सभी को एक समान समझें।
- सभी प्रकार के कार्यों के प्रति आदरभाव रखें।
- ऐसे अनुग्रहों को स्वीकार न करें जो आपके कार्य निष्पादन पर नकारात्मक असर डालते हैं।
- अपने कार्य व संस्था के प्रति ईमानदार रहें।
- जहाँ पर आपका भ्रष्टाचार से सामना हो उसे प्रकट करें।

टिप्पणी

आइए आज हम यह शपथ लें कि प्रतिदिन हम इन नीतियों की संहिता का पालन करेंगे।

पाठगत प्रश्न 12.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये।

1. अपने कार्य पर नियमित व ..... रहें।
2. अपने कार्य को अधिक ..... बनाने के तरीके ढूँढें।
3. अपनी संस्था के प्रति ..... रहें।
4. अपना कर्त्तव्य करते समय ..... और भेदभाव न करें।
5. ..... की जहाँ पर आपका भ्रष्टाचार से सामना हो उसे ..... करें।

12.3 संचार

संचार के माध्यम से हम एक दूसरे के साथ अपने विचारों का आदान–प्रदान करते हैं। संचार में लिखित व कथित शब्दों के अलावा शारीरिक भाव–भंगिमाओं द्वारा उनकी अभिव्यक्ति भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, जैसे सिर हिलाना, भवें उठाना, कंधे उचकाना, आंखों में चमक आना, तथा स्वर परिवर्तन आदि।

संचार किसी भी कार्य क्षेत्र में कार्यकर्त्ताओं के बीच सद्भावना एवं सौहादपूर्ण वातावरण को बनाने में सहायक है। कार्यकर्त्ताओं में आपसी समझ व सहयोग के लिए निरंतर जानकारी, सूचनाओं व विचारों का आदान–प्रदान जरूरी है। संचार द्वारा ही एक संगठन के विभिन्न विभागों में आपसी ताल–मेल संभव है।

संचार द्वारा प्राप्त सूचनाओं के आधार पर सही निर्णय लेना आसान हो जाता है।

12.4 संचार के प्रकार

संचार दो प्रकार से होता है –

क) आंतरिक संचार

जब संचार एक ही संस्था के कार्यकर्त्ताओं के बीच होता है।

टिप्पणी

(ख) बाह्य संचार

जब कोई संस्था बाहर के लोगों के साथ विचारों का आदान–प्रदान करती है।

आंतरिक व बाह्य संचार निम्न विधियों से होता है –

1) मौखिक

2) लिखित

1) मौखिक संचार

मौखिक संचार बोले हुए शब्दों द्वारा होता है। ये तुरंत विचारों का आदान–प्रदान करने में सहायक हैं। इस माध्यम से विश्वसनीय तथ्यों को अभिव्यक्त करना सही माना जाता है। मौखिक संचार तुरंत निर्णय लेने में मदद करता है।

2) लिखित संचार

लिखित संचार में सूचना व विचार लिख कर जैसे – पत्र, रिपोर्ट, ज्ञापन आदि, फैक्स, डाक, टेलीग्राफ, कोरियर व आंतरिक डाक पद्धति द्वारा भेजा या दिया जाता है।

संचार साधन के चुनाव को प्रभावित करने वाले कारक

- गति
- यर्थाथता
- गोपनीयता
- रिकार्ड
- मूल्य
- दूरी
- विषय वस्तु
- विशेष स्थिति

पाठगत प्रश्न 12.3

सही जोड़ों का मिलान कीजिए।

(1) मौखिक संचार (i) संस्था के अलावा लोगों से संपर्क

टिप्पणी

2) आंतरिक संचार (ii) विचारों का अदान प्रदान

3) बाह्य संचार (iii) टेलीफोन

4) संचार (iv) एक ही संस्था के लोगों के बीच

12.5 व्यवसायिक उद्यमिता

कढ़ाई की उद्यम स्थापित करने व सफलतापूर्वक चलाने के लिए निम्न तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए–

I. विश्लेषण :

आप एक विशेष उद्यम क्यों प्रारम्भ करना चाहते हैं या आपने स्वरोजगार का निर्णय क्यों लिया? यह प्रश्न बहुत आवश्यक है, और इसके लिए व्यक्ति को अपने सामर्थ्य को विश्लेषित करना होता है। अतः अंतिम निर्णय लेने के लिए आपको चाहिए :

- विशेष व्यवसाय की ओर अभिरुचि/रुझान
- शैक्षिक/तकनीकी योग्यता और प्रशिक्षण
- संसाधनों को प्राप्त करने की योग्यता (मानव और अमानव)

II. योजना पूर्व अवलोकन :

- आप क्या उत्पाद बनाना चाहते हैं
- बाज़ार में उपलब्ध वैसे ही उत्पादों का सर्वेक्षण करें
- यदि संभव हो तो वैसे ही संस्थान में जायें और कार्यप्रणाली देखें
- लाभ–हानि का अवलोकन करने के लिए संभव हो तो परस्पर बातचीत करें
- अगला कदम आपको मार्केट का सर्वेक्षण करके क्षेत्र तय करना है। संस्थान स्थापित करने से पूर्व एक उद्यमी के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि वह अपने लिए चुने गए उत्पाद के लिए मार्केट का सर्वेक्षण बहुत अच्छी तरह कर लें।

III. योजना के चरण :

कौन सा उत्पाद लोग सबसे अधिक प्रयोग कर रहे हैं? इस क्षेत्र में श्रमिक और तकनीकी रूप से कुशल व्यक्तियों की उपलब्धता कितनी है?

अगला निश्चित करने वाला चरण है कि आप संस्थान का आकार कितना चाहते हैं – आप लघु, मध्यम या बड़ा संस्थान स्थापित करना चाहते हैं। इन तीनों प्रकार के संस्थानों के क्या हानि–लाभ हैं? आपका व्यवसाय कितना बड़ा है? क्या एक आदमी इसको सम्भाल सकता है? किस तरह की मानव

टिप्पणी

शक्ति/जनशक्ति की आवश्यकता है? इस तरह के अनेक प्रश्नों के उत्तर से आपको संस्थान के ढाँचे को निश्चित करने में सहायता मिलेगी।

IV. संगठनीय ढांचे :

ऐसा व्यवसाय जिसमें लघु आकार का प्रचालन हो वहाँ सहभागिता अथवा स्वामीय (प्रोप्राइटरी) फर्म ठीक रहती है क्योंकि इसमें व्यवसायिक प्रचालनों पर आपका सीधा नियन्त्रण रहता है।

1. **स्वामीय/मालिकाना संस्थान (यूनिट) :** इसमें एक अकेला व्यक्ति उसका मालिक होता है और व्यवसाय स्वयं ही चलाता/चलाती है।

2. **सहभागिता फर्म :** भारतीय सहभागिता एक्ट 1932 के अनुसार सहभागिता उन व्यक्तियों के बीच संबंध है, जिनमें यह समझौता हुआ है कि व्यवसाय से जो लाभ होगा वह सभी को बांटा जायेगा। व्यवसाय चाहे चला सभी रहे हों या सबकी ओर से कोई एक चला रहा हो। सहभागिता फर्म 20 आदमियों से अधिक नहीं रख सकती। इस सम्बन्ध में एक लिखित समझौता तैयार होता है जिसे "पार्टनरशिप डीड" कहते हैं। एक निर्धारित फार्मेट में फर्म के रजिस्ट्रार के पास अपनी फर्म को रजिस्टर/पंजीकृत कराना होता है। इसमें निर्धारित शुल्क और सम्बन्धित कागज़ भी देने होते हैं।

V. व्यवसाय के लिये स्थल का चयन :

एक सफल योजना के लिए उपयुक्त स्थान होना अति आवश्यक है और इसका चुनाव कुछ बातों पर निर्भर करता है।

- **मार्केट से निकटता और कच्चे माल तक पहुँच –** यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। इससे आपको कच्चा माल सरलता से मिलता है। कच्चा माल लाने के लिए परिवहन का व्यय बचता है,
- **बिजली और पानी की उपलब्धता –** ऐसा स्थान चुनना चाहिए जहाँ बिजली, पानी की समस्या न हो अन्यथा काम का बहुत नुकसान होगा।
- **परिवहन की उपलब्धता –** कच्चे माल को खरीदने और आर्डर लेने व सामान को देने के लिए परिवहन की आवश्यकता होती है। स्थान ऐसा हो कि इस पर व्यव कम से कम हो।
- **कुशल श्रमिक की उपलब्धता –** आवश्यकता के अनुसार कुशल श्रमिक और प्रचलित वेतन की उपलब्धता जितने कुशल कारीगर होंगे उतना अच्छा व्यवसाय चलेगा।
- **भविष्य में विस्तार के लिए स्थान –** प्रत्येक व्यवसाय लघु उद्योग के स्तर से प्रारम्भ होता है परन्तु धीरे–धीरे फैलता है। अतः हमेशा योजना इस तरह बनानी चाहिए कि उसमें भविष्य के विस्तार के लिए स्थान हो और नये उपकरणों को शामिल किया जा सके।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 12.4

नीचे दिए गए वाक्यों के सामने सही/गलत लिखिए। गलत वाक्यों को सही करके भी लिखिए।

1) लाभ हानि का अवलोकन करना संभव नहीं होता।

2) लघु उद्योग में सहभागिता अथवा स्वामीय फर्म ठीक रहती है।

3) स्वामीय संस्थान में एक से अधिक मालिक होते हैं।

4) सफल उद्योग के लिए बिजली और पानी की उपलब्धता अनिवार्य है।

5) उद्योग के प्रत्येक चरण में परिवहन की उपलब्धता आवश्यक है।

VI. मशीन और उपकरणों का निर्धारण :

संस्थान के आकार के अनुसार मशीन, उपकरण, औजार और उपकरणों के अतिरिक्त भागों का निर्धारण करना चाहिए। सब उपकरण आवश्यक और उचित होने चाहिए। उपकरणों और मशीनों का चुनाव और खरीद करते समय विभिन्न ब्रांडों, दाम, क्वालिटी, वारन्टी और सेल सर्विस आदि सबके बारे में अच्छी तरह जानकारी प्राप्त कर लेना चाहिए। सभी जरूरी कागज़ और बिल ले लें। अतः किसी भी मशीन और उपकरण को खरीदने से पहले अच्छी तरह बाज़ार का सर्वेक्षण करना बहुत आवश्यक है।

VII. वित्त का प्रबन्ध :

- प्रत्येक मद के लिए उपलब्ध धन की गणना।
- अगर कहीं बाहर से पैसे का प्रबंध होना है तो :
  - उन संस्थाओं की सूची बनायें जहाँ से वित्तीय सहायता मिल सकती है।
  - या आपको बैंक से वित्त सहायता चाहिए।
  - वित्तीय सहायता के साधन को निर्धारित करिए, क्या यह लम्बी अवधि के लिए है या लघु अवधि के लिए है।

VIII. कच्चे माल की प्राप्ति

जैसा पहले कहा गया है, कच्चे माल की प्राप्ति के लिए बाज़ार पास ही में होना चाहिए। इस बात का भी पता रखना चाहिए कि किस प्रकार के माल की प्राप्ति समय से और निरन्तर होती रहेगी। अपना कच्चा माल थोक बाज़ार से ही खरीदें। कहाँ से माल खरीदना है, यह निर्धारित करने के लिए बाज़ार का सर्वेक्षण आवश्यक है।

IX. मार्केटिंग/बिक्री :

किसी संस्थान की सफलता के लिए बिक्री कला में पारंगत होना अनिवार्य है। अपने उत्पाद के लिए

टिप्पणी

ग्राहक बनाना और उनको अपनी सेवाएं देना यह एक निरंतर और जटिल प्रक्रिया है। बिक्री कला में ग्राहकों को जानना और उन तक पहुँचना निहित है। बिक्री कला का उद्देश्य है, अपने संदेश को ग्राहकों तक पहुँचाना, अपने उत्पाद और सेवाओं के प्रति जानकारी पहुँचाना, और ग्राहकों को अपना उत्पाद खरीदने के लिए प्रेरित करना।

X. आपको यह भी देखना है कि क्या आपके संस्थान को पंजीकरण की आवश्यकता है। जिला उद्योग केन्द्र से पंजीकरण प्राप्त किया जाता है। यदि पंजीकरण कराना है तो उसके लिए सभी नियम समय पर पूरे करके पंजीकृत करा लें।

XI. गुणवत्ता स्तर :

गुणवत्ता स्तर को बनाकर रखने से आपका सामान बाज़ार में निरन्तर और स्थाई स्थान बना लेता है।

12.6 नौकरी की तैयारी

हर इंसान के लिये जरूरी नहीं है कि आप अपना स्वयं का व्यवसाय स्थापित कर सकें। आप नौकरी भी कर सकते हैं। नौकरी के लिए भी आप को कुछ तैयारियां करनी जरूरी होती हैं जैसे कि

1) नौकरी की उपलब्धि के विषय के बारे में अधिक जानकारी

2) साक्षात्कार की तैयारी

3) बायोडेटा लिखने की विधि आना

12.6.1 साक्षात्कार के लिए आवश्यक तैयारी

1. विषय की अच्छी तैयारी होनी चाहिए।

2. अपने कागजात व फाइल पूरी तरह से तैयार होने चाहिए जैसे कि :

   - प्रमाणपत्र व अंकतालिका तथा उनकी प्रतिलिपियां
   - पासपोर्ट साइज – 3 फोटो
   - इंटरव्यू का कॉल लेटर (Call Letter)
   - पेन/कलम
   - कार्यानुभव के प्रमाणपत्र
   - विशेष योग्यता व उपलब्धि के प्रमाणपत्र

4. स्थान का पूरा पता होना चाहिए।

टिप्पणी

निम्न बातों पर ध्यान दें :

1. स्थान का एक दिन पहले निरीक्षण कर लेना चाहिए व पहुँचने के लिए साधन व समय का आंकलन कर लेना चाहिए।
2. साफ–सुथरे व सौम्य वस्त्र व सादा बाल बनाने चाहिए।
3. इंटरव्यू के समय से 15 मिनट पहले पहुँचना चाहिए जिससे आप सहज महसूस कर सकें।
4. साक्षात्कार कक्ष में घुसते ही सबका विनम्र अभिनंदन करना चाहिए।
5. कुर्सी पर बैठते समय उचित मुद्रा अपनाएं व सजग रहें।
6. पूछे गए प्रश्न का संक्षिप्त व समुचित उत्तर दें।
7. अगर किसी प्रश्न का उत्तर नहीं आता है तो बेझिझक ईमानदारी से मान लें।
8. साक्षात्कार के उपरांत सभी को धन्यवाद अवश्य दें।
9. संबंधित अधिकारी से साक्षात्कार के परिणाम की संभावित तिथि की जानकारी ले लें।

12.7 बायोडेटा का प्रारूप

शैक्षिक अभिलेख एवं कार्यानुभव

नाम –

लिंग –

जन्म तिथि –

पिता/माता/पति का नाम –

स्थायी पता –

शैक्षिक योग्यता –

क्र.सं.	कक्षा	वर्ष	बोर्ड/वि.वि.	प्राप्त अंक	श्रेणी विषय
1.					
2.					
3.					

कार्य अनुभव

1.

टिप्पणी

2.

विशेष योग्यता –

सम्पर्क पता व फोन नम्बर –

तिथि – हस्ताक्षर

क्रियाकलाप 12.2

दिए गए प्रारूप के अनुसार अपना बायोडेटा लिखिए।

आपने क्या सीखा

- व्यक्तित्व का विकास
- संचार के माध्यम व विधि
- नीतियों की संहिता
- व्यावसायिक उद्यमिता स्थापित करने की विधि
- विभिन्न प्रकार के संगठनीय ढाँचें
- वित्त का प्रबन्ध
- साक्षात्कार के लिए आवश्यक तैयारियां
- बायोडेटा बनाना

पाठांत प्रश्न

1. संगठनीय ढाँचें कितने प्रकार के होते हैं? संक्षिप्त में लिखिए।
2. मौखिक व लिखित संचार में अन्तर बताइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1 पाठ पढ़ कर व स्वयं सोच कर लिखें।

12.2

1. सामयिक
2. कारगर

टिप्पणी

3. ईमानदार

4. पक्षपात

5. प्रकट

12.3

1. – (iii)

2. – (iv)

3. – (i)

4. – (ii)

12.4

(1) गलत –

लाभ हानि का अवलोकन संभव है और अवश्य करना चाहिए

(2) सही

(3) गलत –

स्वामीय संस्थान में अकेला व्यक्ति मालिक होता है।

(4) सही

(5) सही